Resource: Open Hindi Contemporary Version

License Information

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Matthew 1:1

1 अब्राहाम की संतान, दावीद के वंशज येशु मसीह की
वंशावली:

2 अब्राहाम से यित्सहाक, यित्सहाक से याकोब, याकोब से
यहूदाह तथा उनके भाई पैदा हुए,

3 तामार द्वारा यहूदाह से फ़ारेस तथा ज़ारा पैदा हुए, फ़ारेस से
हेज़रोन, हेज़रोन से हाराम,

4 हाराम से अम्मीनादाब, अम्मीनादाब से नाहश्शोन,
नाहश्शोन से सलमोन,

5 सलमोन और राहाब से बोअज़, बोअज़ और रूथ से ओबेद,
ओबेद से यिशै तथा

6 यिशै से राजा दावीद पैदा हुए. दावीद और उरियाह की
विधवा से शलोमोन पैदा हुए,

7 शलोमोन से रोबोआम, रोबोआम से अबीयाह, अबीयाह से
आसफ,

8 आसफ से यहोशाफ़ात, यहोशाफ़ात से येहोराम, येहोराम से
उज्जियाह,

9 उज्जियाह से योथाम, योथाम से आख़ाज़, आख़ाज़ से
हेज़ेकिया,

10 हेज़ेकिया से मनश्शेह, मनश्शेह से अमोन, अमोन से
योशियाह,

11 योशियाह से बाबेल पहुंचने के समय यख़ोनिया तथा उसके
भाई पैदा हुए.

12 बाबेल पहुंचने के बाद: यख़ोनिया से सलाथिएल पैदा हुए,
सलाथिएल से ज़ेरोबाबेल,

13 ज़ेरोबाबेल से अबीहूद, अबीहूद से एलियाकिम,
एलियाकिम से आज़ोर,

14 आज़ोर से सादोक, सादोक से आख़िम, आख़िम से एलिहूद,

15 एलिहूद से एलियाज़र, एलियाज़र से मत्थान, मत्थान से
याकोब,

16 और याकोब से योसेफ़ पैदा हुए, जिन्होंने मरियम से विवाह
किया, जिनके द्वारा येशु, जिन्हें मसीह कहा जाता है पैदा हुए.

17 अब्राहाम से लेकर दावीद तक कुल चौदह पीढ़ियां, दावीद
से बाबेल पहुंचने तक चौदह तथा बाबेल पहुंचने से मसीह तक
चौदह पीढ़ियां हुईं.

18 मसीह येशु का जन्म इस प्रकार हुआ: उनकी माता मरियम
का विवाह योसेफ़ से तय हो चुका था किंतु इससे पहले कि
उनमें सहवास होता, यह मालूम हुआ कि मरियम गर्भवती
हैं—यह गर्भ पवित्र आत्मा द्वारा था.

19 उनके पति योसेफ़ एक धर्मी पुरुष थे. वे नहीं चाहते थे कि
मरियम को किसी प्रकार से लज्जित होना पड़े. इसलिये उन्होंने
किसी पर प्रकट किए बिना मरियम को त्याग देने का निर्णय
किया.

20 किंतु जब उन्होंने यह निश्चय कर लिया, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट हो उनसे कहा, "योसेफ़, दावीद के वंशज! मरियम को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकारने में डरो मत; क्योंकि, जो उनके गर्भ में हैं, वह पवित्र आत्मा से हैं.

21 वह एक पुत्र को जन्म देंगी. तुम उनका नाम येशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार देंगे."

22 यह सब इसलिये घटित हुआ कि भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा गया प्रभु का यह वचन पूरा हो जाए:

23 "एक कुंवारी कन्या गर्भधारण करेगी, पुत्र को जन्म देगी और उसे इम्मानुएल नाम से पुकारा जायेगा." इम्मानुएल का अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ.

24 जागने पर योसेफ़ ने वैसा ही किया जैसा प्रभु के दूत ने उन्हें आज्ञा दी थी—उन्होंने मरियम को पत्नी के रूप में स्वीकार किया,

25 किंतु पुत्र-जन्म तक उनका कौमार्य सुरक्षित रखा और उन्होंने पुत्र का नाम येशु रखा.

Matthew 2:1

1 जब राजा हेरोदेस के शासनकाल में यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर में येशु का जन्म हुआ, तब पूर्ववर्ती देशों से ज्योतिष येरूशलेम नगर आए और पूछताछ करने लगे,

2 "कहां हैं वह—यहूदियों के राजा, जिन्होंने जन्म लिया है? पूर्ववर्ती देशों में हमने उनका तारा देखा है और हम उनकी आराधना करने के लिए यहां आए हैं."

3 यह सुन राजा हेरोदेस व्याकुल हो उठा और उसके साथ सभी येरूशलेम निवासी भी.

4 राजा हेरोदेस ने प्रधान पुरोहितों और शास्त्रियों को इकट्ठा कर उनसे पूछताछ की कि वह कौन सा स्थान है जहां मसीह के जन्म लेने का संकेत है?

5 उन्होंने उत्तर दिया, "यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर में, क्योंकि भविष्यवक्ता का लेख है:

6 " 'और तुम, यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम नगर, यहूदिया प्रदेश के नायकों के मध्य किसी भी रीति से छोटे नहीं हो क्योंकि तुममें से ही एक राजा का आगमन होगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा होगा.' "

7 इसलिये हेरोदेस ने ज्योतिषियों को अलग ले जाकर उनसे उस तारे के उदय होने का ठीक-ठीक समय मालूम किया

8 और उन्हें बेथलेहेम नगर भेजते हुए कहा, "आप लोग जाकर सावधानीपूर्वक उस बालक की खोज कीजिए और जब वह आपको मिल जाए तो मुझे इसकी सूचना दीजिए कि मैं भी उसकी वंदना करने जा सकूं."

9 राजा की आज्ञा सुन उन्होंने अपनी यात्रा दोबारा प्रारंभ की. उन्हें वही तारा दिखाई दिया, जो उन्होंने पूर्ववर्ती देशों में देखा था. वे उसके दर्शन में आगे बढ़ते चले गए जब तक वह तारा उस बालक के घर पर जाकर ठहर न गया.

10 उसे देखकर वे बड़े आनंद से भर गए.

11 घर में प्रवेश करने पर उन्होंने उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा और झुककर उस बालक की आराधना की और फिर उन्होंने अपने कीमती उपहार सोना, लोबान और गन्धरस उसे भेंट चढ़ाई.

12 उन्हें स्वप्न में परमेश्वर द्वारा यह चेतावनी दी गई कि वे राजा हेरोदेस के पास लौटकर न जाएं. इसलिये वे एक अन्य मार्ग से अपने देश लौट गए.

13 उनके विदा होने के बाद प्रभु का एक दूत ने योसेफ़ को एक स्वप्न में प्रकट होकर आज्ञा दी, "उठो, बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जाओ और उस समय तक वहीं ठहरे रहना जब तक मैं तुम्हें आज्ञा न दूं क्योंकि हेरोदेस हत्या की मंशा से बालक को खोज रहा है."

14 इसलिये योसेफ़ उठे और अभी, जबकि रात ही थी, उन्होंने बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को प्रस्थान किया.

15 वे वहां हेरोदेस की मृत्यु तक ठहरे रहे कि प्रभु का यह वचन
पूरा हो, जो उन्होंने एक भविष्यवक्ता के माध्यम से कहा था:
“मिस्र देश से मैंने अपने पुत्र को बुलाया.”

16 यह मालूम होने पर कि ज्योतिष उसे मूर्ख बना गए, हेरोदेस
बहुत ही क्रोधित हुआ. ज्योतिषियों से मिली सूचना के आधार
पर उसने बेथलेहेम नगर और उसके नज़दीकी क्षेत्र में दो वर्ष
तथा उससे कम आयु के सभी शिशुओं के विनाश की आज्ञा दे
दी.

17 इससे भविष्यवक्ता येरेमियाह द्वारा पूर्वघोषित इस वचन की
पूर्ति हुई:

18 “रमाह नगर में एक शब्द सुना गया, रोना तथा घोर विलाप!
राहेल अपने बालकों के लिए रो रही है. धीरज उसे स्वीकार
नहीं क्योंकि अब वे हैं ही नहीं.”

19 जब राजा हेरोदेस की मृत्यु हुई, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में
प्रकट होकर योसेफ़ को आज्ञा दी,

20 “उठो! बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल देश
लौट जाओ क्योंकि जो बालक के प्राण लेने पर उतारू थे,
उनकी मृत्यु हो चुकी है.”

21 इसलिये योसेफ़ उठे और बालक और उसकी माता को
लेकर इस्राएल देश में लौट आए.

22 यह मालूम होने पर कि हेरोदेस के स्थान पर अब उसका
पुत्र आरखेलाओस यहूदिया प्रदेश का राजा है, भय के कारण
वह वहां नहीं गए. तब परमेश्वर की ओर से स्वप्न में चेतावनी
प्राप्त होने पर वह गलील प्रदेश की ओर चल दिए

23 तथा नाज़रेथ नामक नगर में जाकर बस गए कि
भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया-यह वचन पूरा हो: वह नाज़री
कहलाएगा.

Matthew 3:1

1 कालांतर में यहूदिया प्रदेश के बंजर भूमि में बपतिस्मा
देनेवाला योहन आकर यह प्रचार करने लगे,

2 “मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग-राज्य पास आ गया है.”

3 यह वही हैं जिनके विषय में भविष्यवक्ता यशायाह ने अपने
अभिलेख में इस प्रकार संकेत दिया है: “वह आवाज, जो बंजर
भूमि में पुकार-पुकारकर कह रही है, ‘प्रभु का रास्ता सीधा
करो, उनका मार्ग सरल बनाओ.’ ”

4 बपतिस्मा देनेवाले योहन का परिधान ऊंट के रोम से निर्मित
वस्त्र और उसके ऊपर चमड़े का कमरबंध था, और उनका
भोजन था टिड्डियां तथा जंगलीमधु.

5 येरूशलेम नगर, सारे यहूदिया प्रदेश और यरदन नदी के
नज़दीकी क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोग उनके पास आने लगे.

6 पापों को मानने के बाद योहन उन्हें यरदन नदी में बपतिस्मा
दिया करते थे.

7 जब योहन ने देखा कि अनेक फ़रीसी और सदूकी बपतिस्मा
लेने आ रहे हैं, उन्होंने उनकी उल्लाहना करते हुए कहा,
“विषैले सांपों की संतान! समीप आ रहे क्रोध से भागने की
चेतावनी तुम्हें किसने दे दी?

8 सच्चे मन फिराने का प्रमाण दो

9 और ऐसा मत सोचो कि आप कह सकते हैं, ‘हम तो अब्राहाम
की संतान हैं!’ क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूं कि परमेश्वर में इन
पत्थरों तक से अब्राहाम की संतान पैदा करने का सामर्थ्य है.

10 कुल्हाड़ी पहले ही वृक्षों की जड़ पर रखी हुई है. हर एक
पेड़, जो उत्तम फल नहीं फलता, काटा जाता और आग में
झोंक दिया जाता है.

11 “मैं तो तुम्हें पश्चाताप के लिए पानी से बपतिस्मा दे रहा हूं
किंतु वह, जो मेरे बाद आ रहे हैं, मुझसे अधिक शक्तिशाली हैं.
मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उनकी जूतियां उठाऊं. वह तुम्हें
पवित्र आत्मा और आग में बपतिस्मा देंगे.

12 सूप उनके हाथ में है. वह अपने खलिहान को अच्छी तरह साफ़ करेंगे, गेहूं को भंडार में इकट्ठा करेंगे और भूसी को कभी न बुझनेवाली आग में भस्म कर देंगे."

13 येशु गलील प्रदेश से यरदन नदी पर योहन के पास आए कि उनके द्वारा बपतिस्मा लें

14 किंतु योहन ने इसका इनकार करते हुए कहा, "आवश्यक तो यह है कि मैं आपसे बपतिस्मा लूं, यहां तो आप मुझसे बपतिस्मा लेने आए हैं!"

15 मसीह येशु ने इसके उत्तर में कहा, "इस समय तो यही होने दो. हम दोनों के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित धार्मिकता इसी रीति से पूरी करना सही है." इस पर योहन सहमत हो गए.

16 बपतिस्मा के बाद जैसे ही मसीह येशु जल में से बाहर आए, उनके लिए स्वर्ग खोल दिया गया और योहन ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते हुए तथा येशु पर ठहरते देखा.

17 उसी समय स्वर्ग से यह शब्द सुना गया, "यह मेरा पुत्र है—मेरा परम प्रिय—जिससे मैं पूरी तरह प्रसन्न हूं."

Matthew 4:1

1 इसके बाद पवित्र आत्मा के निर्देश में येशु को बंजर भूमि ले जाया गया कि वह शैतान द्वारा परखे जाएं.

2 उन्होंने चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया. उसके बाद जब उन्हें भूख लगी,

3 परखने वाले ने उनके पास आकर कहा, "यदि तुम परमेश्वर-पुत्र हो तो इन पत्थरों को आज्ञा दो कि ये रोटी बन जाएं."

4 येशु ने उसे उत्तर दिया, "मनुष्य का जीवन सिर्फ भोजन पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले हुए हर एक शब्द पर भी निर्भर है."

5 तब शैतान ने येशु को पवित्र नगर में ले जाकर मंदिर के शीर्ष पर खड़ा कर दिया

6 और उनसे कहा, "यदि तुम परमेश्वर-पुत्र हो तो यहां से नीचे कूद जाओ, क्योंकि लिखा है, "वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारे संबंध में आज्ञा देंगे तथा वे तुम्हें हाथों-हाथ उठा लेंगे कि तुम्हारे पैर को पत्थर से चोट न लगे."

7 उसके उत्तर में येशु ने उससे कहा, "यह भी तो लिखा है तुम प्रभु अपने परमेश्वर को न परखो."

8 तब शैतान येशु को अत्यंत ऊंचे पर्वत पर ले गया और विश्व के सारे राज्य और उनका सारा ऐश्वर्य दिखाते हुए उनसे कहा,

9 "मैं ये सब तुम्हें दे दूंगा यदि तुम मेरी दंडवत-वंदना करो."

10 इस पर येशु ने उसे उत्तर दिया, "हट, शैतान! दूर हो! क्योंकि लिखा है, तुम सिर्फ प्रभु अपने परमेश्वर की ही आराधना और सेवा किया करो."

11 तब शैतान उन्हें छोड़कर चला गया और स्वर्गदूत आए और उनकी सेवा करने लगे.

12 यह मालूम होने पर कि बपतिस्मा देनेवाले योहन को बंदी बना लिया गया है, येशु गलील प्रदेश में चले गए,

13 और नाज़रेथ नगर को छोड़ कफ़रनहूम नगर में बस गए, जो झील तट पर ज़ेबुलून तथा नफताली नामक क्षेत्र में था.

14 ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी पूरी हो:

15 यरदन नदी के पार समुद्रतट पर बसे ज़ेबुलून तथा नफताली प्रदेश अर्थात् गलील प्रदेश में, जहां गैर-इस्राएली बसे हुए हैं,

16 अंधकार में जी रहे लोगों ने एक बड़ी ज्योति को देखा; गहन अंधकार के निवासियों पर ज्योति चमकी.

17 उस समय से येशु ने यह उपदेश देना प्रारंभ कर दिया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग-राज्य पास आ गया है."

18 एक दिन गलील झील के किनारे चलते हुए येशु ने दो भाइयों को देखा: शिमओन, जो पेतरॉस कहलाए तथा उनके भाई आन्द्रेयास को. ये समुद्र में जाल डाल रहे थे क्योंकि वे मछुआरे थे.

19 येशु ने उनसे कहा, "मेरा अनुसरण करो—मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा."

20 वे उसी क्षण अपने जाल छोड़कर येशु का अनुसरण करने लगे.

21 जब वे वहां से आगे बढ़े तो येशु ने दो अन्य भाइयों को देखा—ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब तथा उनके भाई योहन को. वे दोनों अपने पिता के साथ नाव में अपने जाल ठीक कर रहे थे. येशु ने उन्हें बुलाया.

22 उसी क्षण वे नाव और अपने पिता को छोड़ येशु के पीछे हो लिए.

23 येशु सारे गलील प्रदेश की यात्रा करते हुए, उनके यहूदी सभागृहों में शिक्षा देते हुए, स्वर्ग-राज्य के ईश्वरीय सुसमाचार का उपदेश देने लगे. वह लोगों के हर एक रोग तथा हर एक व्याधि को दूर करते जा रहे थे.

24 सारे सीरिया प्रदेश में उनके विषय में समाचार फैलता चला गया और लोग उनके पास उन सबको लाने लगे, जो रोगी थे तथा उन्हें भी, जो विविध रोगों, पीड़ाओं, दुष्टात्मा, मूर्च्छा रोगों तथा पक्षाघात से पीड़ित थे. येशु इन सभी को स्वस्थ करते जा रहे थे.

25 गलील प्रदेश, देकापोलिस, येरूशलेम, यहूदिया प्रदेश और यरदन नदी के पार से बड़ी भीड़ उनके पीछे-पीछे चली जा रही थी.

Matthew 5:1

1 इकट्ठा हो रही भीड़ को देख येशु पर्वत पर चले गए और जब वह बैठ गए तो उनके शिष्य उनके पास आए.

2 येशु ने उन्हें शिक्षा देना प्रारंभ किया. उन्होंने कहा,

3 "धन्य हैं वे, जो दीन आत्मा के हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य उन्हीं का है.

4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं. क्योंकि उन्हें शांति दी जाएगी.

5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं क्योंकि पृथ्वी उन्हीं की होगी.

6 धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि उन्हें तृप्त किया जाएगा.

7 धन्य हैं वे, जो कृपालु हैं, क्योंकि उन पर कृपा की जाएगी.

8 धन्य हैं वे, जिनके हृदय शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे.

9 धन्य हैं वे, जो शांति कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की संतान कहलाएंगे.

10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए गए हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य उन्हीं का है.

11 "धन्य हो तुम, जब लोग तुम्हारी निंदा करें और सताएं तथा तुम्हारे विषय में मेरे कारण सब प्रकार के बुरे विचार फैलाते हैं.

12 हर्षोल्लास में आनंद मनाओ क्योंकि तुम्हारा प्रतिफल स्वर्ग में है. उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को भी इसी रीति से सताया था, जो तुमसे पहले आए हैं.

13 "तुम पृथ्वी के नमक हो, किंतु यदि नमक नमकीन न रहे तो उसके खारेपन को दोबारा कैसे लौटाया जा सकेगा? तब तो वह किसी भी उपयोग का नहीं सिवाय इसके कि उसे बाहर फेंक दिया जाए और लोग उसे रौंदते हुए निकल जाएं.

14 "तुम संसार के लिए ज्योति हो. पहाड़ी पर स्थित नगर को छिपाया नहीं जा सकता.

15 कोई भी जलते हुए दीप को किसी बर्तन से ढांक कर नहीं
रखता; उसे उसके निर्धारित स्थान पर रखा जाता है कि वह
उस घर में उपस्थित लोगों को प्रकाश दे.

16 लोगों के सामने अपना प्रकाश इस रीति से प्रकाशित होने
दो कि वे तुम्हारे भले कामों को देख सकें तथा तुम्हारे पिता की,
जो स्वर्ग में हैं, महिमा करें.

17 "अपने मन से यह विचार निकाल दो कि मेरे आने का
उद्देश्य व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को व्यर्थ
साबित करना है—उन्हें पूरा करना ही मेरा उद्देश्य है.

18 मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं: जब तक आकाश
और पृथ्वी अस्तित्व में हैं, पवित्र शास्त्र का एक भी बिंदु या
मात्रा गुम न होगी, जब तक सब कुछ नष्ट न हो जाए.

19 इसलिये जो कोई इनमें से छोटी सी छोटी आज्ञा को तोड़ता
तथा अन्यों को यही करने की शिक्षा देता है, स्वर्ग-राज्य में
सबसे छोटा घोषित किया जाएगा. इसके विपरीत, जो कोई इन
आदेशों का पालन करता और इनकी शिक्षा देता है, स्वर्ग-
राज्य में विशिष्ट घोषित किया जाएगा.

20 मैं तुम्हें इस सच्चाई से भी परिचित करा दूं: यदि परमेश्वर के
प्रति तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फ़रीसियों की
धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम किसी भी रीति से स्वर्ग-राज्य
में प्रवेश न कर सकोगे.

21 "यह तो तुम सुन ही चुके हो कि पूर्वजों को यह आज्ञा दी गई
थी, 'हत्या मत करो और जो कोई हत्या करता है, वह न्यायालय
के प्रति उत्तरदायी होगा';

22 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि हर एक, जो अपने भाई-बहन
से गुस्सा करता है, वह न्यायालय के सामने दोषी होगा और जो
कोई अपने भाई से कहे, 'अरे निकम्मे!' वह सर्वोच्च न्यायालय
के प्रति अपराध का दोषी होगा तथा वह, जो कहे, 'अरे मूर्ख!'
वह तो नरक की आग के योग्य दोषी होगा.

23 "इसलिये, यदि तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ाने जा रहे हो
और वहां तुम्हें यह याद आए कि तुम्हारे भाई के मन में तुम्हारे
प्रति विरोध है,

24 अपनी भेंट वेदी के पास ही छोड़ दो और जाकर सबसे
पहले अपने भाई से मेल-मिलाप करो और तब लौटकर अपनी
भेंट चढ़ाओ.

25 "न्यायालय जाते हुए मार्ग में ही अपने दुश्मन से मित्रता का
संबंध फिर से बना लो कि तुम्हारा दुश्मन तुम्हें न्यायाधीश के
हाथ में न सौंपे और न्यायाधीश अधिकारी के और अधिकारी
तुम्हें बंदीगृह में डाल दें.

26 मैं तुम्हें इस सच से परिचित कराना चाहता हूं कि जब तक
तुम एक-एक पैसा लौटा न दो बंदीगृह से छूट न पाओगे.

27 "यह तो तुम सुन ही चुके हो कि यह कहा गया था: 'व्यभिचार
मत करो.'

28 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि हर एक, जो किसी स्त्री को
कामुक दृष्टि से मात्र देख लेता है, वह अपने मन में उसके साथ
व्यभिचार कर चुका.

29 यदि तुम्हारी दायीं आंख तुम्हारे लड़खड़ाने का कारण
बनती है तो उसे निकाल फेंको. तुम्हारे सारे शरीर को नर्क में
झोंक दिया जाए इससे तो उत्तम यह है कि तुम्हारे शरीर का
एक ही अंग नाश हो.

30 यदि तुम्हारा दायां हाथ तुम्हें विनाश के गड्ढे में गिराने के
लिए उत्तरदायी है तो उसे काटकर फेंक दो. तुम्हारे सारे शरीर
को नरक में झोंक दिया जाए इससे तो उत्तम यह है कि तुम्हारे
शरीर का एक ही अंग नाश हो.

31 "यह कहा गया था: 'कोई भी, जो अपनी पत्नी से तलाक चाहे,
वह उसे अलग होने का प्रमाण-पत्र दे.'

32 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि हर एक, जो वैवाहिक
व्यभिचार के अलावा किसी अन्य कारण से अपनी पत्नी से
तलाक लेता है, वह अपनी पत्नी को व्यभिचार की ओर
ढकेलता है और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करता है,
व्यभिचार करता है.

33 "तुम्हें मालूम होगा कि पूर्वजों से कहा गया था: 'झूठी शपथ
मत लो परंतु प्रभु से की गई शपथ को पूरा करो.'

34 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि शपथ ही न लो; न तो स्वर्ग
की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है,

35 न पृथ्वी की, क्योंकि वह उनके चरणों की चौकी है, न
येरूशलेम की, क्योंकि वह राजाधिराज का नगर है

36 और न ही अपने सिर की, क्योंकि तुम एक भी बाल न तो
काला करने में समर्थ हो और न ही सफ़ेद करने में;

37 परंतु तुम्हारी बातो में 'हां' का मतलब हां और 'न' का न
हो—जो कुछ इनके अतिरिक्त है, वह उस दुष्ट द्वारा प्रेरित है.

38 "तुम्हें यह तो मालूम है कि यह कहा गया था: 'आंख के लिए
आंख तथा दांत के लिए दांत.'

39 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि बुरे व्यक्ति का सामना ही न
करो. इसके विपरीत, जो कोई तुम्हारे दायें गाल पर थप्पड़
मारे, दूसरा गाल भी उसकी ओर कर दो.

40 यदि कोई तुम्हें न्यायालय में घसीटकर तुम्हारा कुर्ता लेना
चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे दो.

41 जो कोई तुम्हें एक किलोमीटर चलने के लिए मजबूर करे
उसके साथ दो किलोमीटर चले जाओ.

42 उसे, जो तुमसे कुछ मांगे, दे दो और जो तुमसे उधार लेना
चाहे, उससे अपना मुख न छिपाओ.

43 "तुम्हें यह तो मालूम है कि यह कहा गया था: 'अपने पड़ोसी
से प्रेम करो और अपने शत्रु से घृणा.'

44 किंतु मेरा तुमसे कहना है कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो और
अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना;

45 कि तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान हो जाओ, क्योंकि वे
बुरे और भले दोनों पर ही सूर्योदय करते हैं. इसी प्रकार वे धर्मी
तथा अधर्मी, दोनों पर ही वर्षा होने देते हैं.

46 यदि तुम प्रेम मात्र उन्हीं से करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं
तो तुम किस प्रतिफल के अधिकारी हो? क्या चुंगी लेनेवाले भी
यही नहीं करते?

47 यदि तुम मात्र अपने बंधुओं का ही नमस्कार करते हो तो
तुम अन्यों से अतिरिक्त ऐसा कौन सा सराहनीय काम कर रहे
हो? क्या गैर-यहूदी भी ऐसा ही नहीं करते?

48 इसलिये ज़रूरी है कि तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारे स्वर्गीय
पिता सिद्ध हैं.

Matthew 6:1

1 "ध्यान रहे कि तुम लोगों की प्रशंसा पाने के उद्देश्य से धर्म के
काम न करो अन्यथा तुम्हें तुम्हारे स्वर्गीय पिता से कोई भी
प्रतिफल प्राप्त न होगा.

2 "जब तुम दान दो तब इसका ढिंढोरा न पीटो, जैसा पाखंडी
यहूदी सभागृहों तथा सड़कों पर किया करते हैं कि वे मनुष्यों
द्वारा सम्मानित किए जाएं. सच तो यह है कि वे अपना पूरा-
पूरा प्रतिफल प्राप्त कर चुके;

3 किंतु तुम जब ज़रूरतमंदों को दान दो तो तुम्हारे बायें हाथ
को यह मालूम न हो सके कि तुम्हारा दायां हाथ क्या कर रहा
है

4 कि तुम्हारी दान प्रक्रिया पूरी तरह गुप्त रहे. तब तुम्हारे पिता,
जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे.

5 "प्रार्थना करते हुए तुम्हारी मुद्रा दिखावा करनेवाले लोगों के
समान न हो क्योंकि उनकी रुचि यहूदी सभागृहों में तथा
नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करने में होती है कि उन पर
लोगों की दृष्टि पड़ती रहे. मैं तुम पर यह सच प्रकाशित कर
रहा हूं कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल प्राप्त कर चुके.

6 इसके विपरीत जब तुम प्रार्थना करो, तुम अपनी कोठरी में
चले जाओ, द्वार बंद कर लो और अपने पिता से, जो अदृश्य हैं,
प्रार्थना करो और तुम्हारे पिता, जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल
देंगे.

7 “अपनी प्रार्थना में अर्थहीन शब्दों को दोहराते न जाओ, जैसा
गैर-यहूदी करते हैं क्योंकि उनका विचार है कि शब्दों के
अधिक होने के कारण ही उनकी प्रार्थना सुनी जाएगी.

8 इसलिये उनके जैसे न बनो क्योंकि तुम्हारे स्वर्गीय पिता को
विनती करने से पहले ही तुम्हारी ज़रूरत का अहसास रहता
है.

9 “तुम प्रार्थना इस प्रकार किया करो: “हमारे स्वर्गिक पिता,
आपका नाम पवित्र माना जाए.

10 आपका राज्य हर जगह हो. आपकी इच्छा पूरी हो, जिस
प्रकार स्वर्ग में उसी प्रकार पृथ्वी पर भी.

11 आज हमें हमारा दैनिक आहार प्रदान कीजिए.

12 आप हमारे अपराधों की क्षमा कीजिए जैसे हमने उन्हें क्षमा
किया है, जिन्होंने हमारे विरुद्ध अपराध किए थे.

13 हमें परीक्षा से बचाकर उस दुष्ट से हमारी रक्षा कीजिए
क्योंकि राज्य, सामर्थ्य तथा प्रताप सदा-सर्वदा आप ही का है,
आमेन.

14 यदि तुम दूसरों को उनके अपराधों के लिए क्षमा करते हो
तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेंगे.

15 किंतु यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा नहीं करते हो तो
तुम्हारे स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेंगे.

16 “जब कभी तुम उपवास रखो तब पाखंडियों के समान
अपना मुंह मुरझाया हुआ न बना लो. वे अपना रूप ऐसा
इसलिये बना लेते हैं कि लोगों की दृष्टि उन पर अवश्य पड़े.
सच तो यह है कि वे अपना पूरा-पूरा प्रतिफल प्राप्त कर चुके.

17 किंतु जब तुम उपवास करो तो अपने बाल संवारो और
अपना मुंह धो लो

18 कि तुम्हारे उपवास के विषय में सिवाय तुम्हारे स्वर्गीय पिता
के—जो अदृश्य हैं—किसी को भी मालूम न हो. तब तुम्हारे
पिता, जो अंतर्यामी हैं, तुम्हें प्रतिफल देंगे.

19 “पृथ्वी पर अपने लिए धन इकट्ठा न करो, जहां कीट-पतंगे
तथा जंग उसे नाश करते तथा चोर सेंध लगाकर चुराते हैं

20 परंतु धन स्वर्ग में जमा करो, जहां न तो कीट-पतंगे या जंग
नाश करते और न ही चोर सेंध लगाकर चुराते हैं

21 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी होगा.

22 “शरीर का दीपक आंख है. इसलिये यदि तुम्हारी आंख
निरोगी है, तुम्हारा सारा शरीर उजियाला होगा.

23 यदि तुम्हारी आंख रोगी है, तुम्हारा सारा शरीर अंधकारमय
हो जाएगा. वह उजियाला, जो तुममें है, यदि वह अंधकार है तो
कितना गहन होगा वह अंधकार!

24 “कोई भी व्यक्ति दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता
क्योंकि वह एक को तुच्छ मानकर दूसरे के प्रति समर्पित रहेगा
या एक का सम्मान करते हुए दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम
परमेश्वर और धन दोनों की सेवा कर ही नहीं सकते.

25 “यही कारण है कि मैं तुमसे कहता हूं कि अपने जीवन के
विषय में चिंता न करो कि तुम क्या खाओगे और क्या पिओगे;
और न ही शरीर के विषय में कि क्या पहनोगे. क्या जीवन
आहार से और शरीर वस्त्रों से अधिक कीमती नहीं?

26 पक्षियों की ओर ध्यान दो: वे न तो बीज बोते हैं, और न ही
खलिहान में उपज इकट्ठा करते हैं. फिर भी तुम्हारे स्वर्गीय
पिता उनका भरण-पोषण करते हैं. क्या तुम उनसे कहीं
ज्यादा मूल्यवान नहीं?

27 और तुममें ऐसा कौन है, जो चिंता के द्वारा अपनी आयु में
एक क्षण की भी वृद्धि कर सकता है?

28 “और वस्त्र तुम्हारी चिंता का विषय क्यों? मैदान के फूलों
का ध्यान तो करो कि वे कैसे खिलते हैं. वे न तो परिश्रम करते
हैं और न ही वस्त्र निर्माण.

29 फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि शलोमोन की वेशभूषा का
ऐश्वर्य किसी भी दृष्टि से इनके तुल्य नहीं था.

30 यदि परमेश्वर घास का श्रृंगार इस सीमा तक करते हैं, जिसका जीवन थोड़े समय का है और जो कल आग में झोंक दिया जाएगा, तो क्या वह तुमको कहीं अधिक सुशोभित न करेंगे? कैसा कमजोर है तुम्हारा विश्वास!

31 इसलिए इस विषय में चिंता न करो, 'हम क्या खाएंगे या क्या पिएंगे' या 'हमारे वस्त्रों का प्रबंध कैसे होगा?'

32 गैर-यहूदी ही इन वस्तुओं के लिए कोशिश करते रहते हैं. तुम्हारे स्वर्गीय पिता को यह मालूम है कि तुम्हें इन सब की ज़रूरत है.

33 सबसे पहले परमेश्वर के राज्य की और उनकी धार्मिकता की खोज करो, और ये सभी वस्तुएं तुम्हें दी जाएंगी.

34 इसलिये कल की चिंता न करो—कल अपनी चिंता स्वयं करेगा क्योंकि हर एक दिन अपने साथ अपना ही पर्याप्त दुःख लिए हुए आता है.

Matthew 7:1

1 "किसी पर भी दोष न लगाओ, तो लोग तुम पर भी दोष नहीं लगाएंगे

2 क्योंकि जैसे तुम किसी पर दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा तथा माप के लिए तुम जिस बर्तन का प्रयोग करते हो वही तुम्हारे लिए इस्तेमाल किया जाएगा.

3 "तुम भला अपने भाई की आंख के कण की ओर उंगली क्यों उठाते हो जबकि तुम स्वयं अपनी आंख में पड़े लट्ठे की ओर ध्यान नहीं देते?

4 या तुम भला यह कैसे कह सकते हो 'ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारी आंख से वह कण निकाल देता हूं,' जबकि तुम्हारी अपनी आंख में तो लट्ठा पड़ा हुआ है?

5 अरे पाखंडी! पहले तो स्वयं अपनी आंख में से उस लट्ठे को तो निकाल! तभी तू स्पष्ट रूप से देख सकेगा और अपने भाई की आंख में से उस कण को निकाल सकेगा.

6 "वे वस्तुएं, जो पवित्र हैं, कुत्तों को न दो और न सूअरों के सामने अपने मोती फेंको, कहीं वे उन्हें अपने पैरों से रौंदें, मुड़कर तुम्हें फाड़ें और टुकड़े-टुकड़े कर दें.

7 "विनती करो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, तो तुम पाओगे; द्वार खटखटाओ, तो वह तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा

8 क्योंकि हर एक, जो विनती करता है, उसकी विनती पूरी की जाती है, जो खोजता है, वह प्राप्त करता है और वह, जो द्वार खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है.

9 "तुममें ऐसा कौन है कि जब उसका पुत्र उससे रोटी की मांग करता है तो उसे पत्थर देता है

10 या मछली की मांग करने पर सांप?

11 जब तुम दुष्ट होने पर भी अपनी संतान को उत्तम वस्तुएं प्रदान करना जानते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हें, जो उनसे विनती करते हैं, कहीं अधिक बढ़कर वह प्रदान न करेंगे, जो उत्तम है?

12 इसलिये हर एक परिस्थिति में लोगों से तुम्हारा व्यवहार ठीक वैसा ही हो जैसे व्यवहार की आशा तुम उनसे अपने लिए करते हो क्योंकि व्यवस्था तथा भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा भी यही है.

13 "संकरे द्वार में से प्रवेश करो क्योंकि विशाल है वह द्वार और चौड़ा है वह मार्ग, जो विनाश तक ले जाता है और अनेक हैं, जो इसमें से प्रवेश करते हैं.

14 क्योंकि सकेत है वह द्वार तथा कठिन है वह मार्ग, जो जीवन तक ले जाता है और थोड़े ही हैं, जो इसे प्राप्त करते हैं.

15 "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे बीच आ जाते हैं, किंतु वास्तव में वे भूखे भेड़िये होते हैं.

16 उनके स्वभाव से तुम उन्हें पहचान जाओगे. न तो कंटीली झाड़ियों में से अंगूर और न ही गोखरु से अंजीर इकट्ठे किए जाते हैं.

17 वस्तुतः हर एक उत्तम पेड़ उत्तम फल ही फलता है और
बुरा पेड़ बुरा फल.

18 यह संभव ही नहीं कि उत्तम पेड़ बुरा फल दे और बुरा पेड़
उत्तम फल.

19 जो पेड़ उत्तम फल नहीं देता, उसे काटकर आग में झोंक
दिया जाता है.

20 इसलिये उनके स्वभाव से तुम उन्हें पहचान लोगे.

21 "मुझे, 'प्रभु, प्रभु,' संबोधित करता हुआ हर एक व्यक्ति
स्वर्ग-राज्य में प्रवेश नहीं पाएगा परंतु प्रवेश केवल वह पाएगा,
जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है.

22 उस अवसर पर अनेक मुझसे प्रश्न करेंगे, 'प्रभु, क्या हमने
आपके नाम में भविष्यवाणी न की, क्या हमने आपके ही नाम
में दुष्टात्माओं को न निकाला और क्या हमने आपके नाम में
अनेक आश्चर्यकर्म न किए?'

23 मैं उनसे स्पष्ट कहूंगा, 'मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं. दुष्टो! चले
जाओ मेरे सामने से!'

24 "इसलिये हर एक की तुलना, जो मेरी इन शिक्षाओं को
सुनकर उनका पालन करता है, उस बुद्धिमान व्यक्ति से की
जा सकती है, जिसने अपने भवन का निर्माण चट्टान पर किया.

25 आंधी उठी, वर्षा हुई, बाढ़ आई और उस भवन पर थपेड़े
पड़े, फिर भी वह भवन स्थिर खड़ा रहा क्योंकि उसकी नींव
चट्टान पर थी.

26 इसके विपरीत हर एक जो, मेरी इन शिक्षाओं को सुनता तो
है किंतु उनका पालन नहीं करता, वह उस निर्बुद्धि के समान
होगा जिसने अपने भवन का निर्माण रेत पर किया.

27 आंधी उठी, वर्षा हुई, बाढ़ आई, उस भवन पर थपेड़े पड़े
और वह धराशायी हो गया—भयावह था उसका विनाश!"

28 जब येशु ने यह शिक्षाएं दीं, भीड़ आश्चर्यचकित रह गई

29 क्योंकि येशु की शिक्षा-शैली अधिकारपूर्ण थी, न कि
शास्त्रियों के समान.

Matthew 8:1

1 जब येशु पर्वत से उतरकर आए तब बड़ी भीड़ उनके पीछे-
पीछे चलने लगी.

2 एक कोढ़ के रोगी ने उनके सामने झुककर उनसे विनती
करके कहा, "प्रभु, यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं."

3 येशु ने हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श करते हुए कहा, "मैं चाहता
हूं. शुद्ध हो जाओ." वह उसी क्षण कोढ़ रोग से शुद्ध हो गया.

4 येशु ने उसे आज्ञा दी, "यह ध्यान रहे कि तुम इसके विषय में
किसी को न बताओ. अब जाकर पुरोहित के सामने स्वयं को
परीक्षण के लिए प्रस्तुत करो, और मोशेह द्वारा निर्धारित बलि
भेंट करो कि तुम्हारा स्वास्थ्य-लाभ उनके सामने गवाही हो
जाए."

5 जब येशु ने कफ़रनहूम नगर में प्रवेश किया, तब एक
शताधिपति ने आकर उनसे नम्रतापूर्वक निवेदन किया,

6 "प्रभु, घर पर मेरा सेवक लकवा रोग से पीड़ित है और वह
घोर पीड़ा में है."

7 येशु ने उसे आश्वासन दिया, "मैं आकर उसे चंगा करूंगा."

8 किंतु शताधिपति ने कहा, "नहीं प्रभु, नहीं, मैं इस योग्य नहीं
कि आप मेरे घर आएं. आप केवल मुंह से कह दीजिए और
मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा.

9 मैं स्वयं बड़े अधिकारियों के अधीन नियुक्त हूं और सैनिक
मेरे अधिकार में हैं. मैं किसी को आदेश देता हूं, 'जाओ!' तो
वह जाता है, और किसी को आदेश देता हूं, 'इधर आओ!' तो
वह आता है. अपने सेवक से कहता हूं, 'यह करो!' तो वह वही
करता है."

10 यह सुनकर येशु आश्चर्यचकित रह गए. उन्होंने पीछे आ रही
भीड़ से कहा, “यह एक सच है कि मैंने इस्राएल राष्ट्र में भी
किसी में ऐसा विश्वास नहीं देखा.

11 मैं तुम्हें सूचित करना चाहता हूं कि स्वर्ग-राज्य में अब्राहाम,
यित्सहाक और याकोब के साथ भोज में शामिल होने के लिए
पूर्व और पश्चिम दिशाओं से अनेकानेक आकर संगति करेंगे,

12 किंतु राज्य के वारिस बाहर अंधकार में फेंक दिए जाएंगे.
वह स्थान ऐसा होगा जहां रोना और दांत पीसना होता रहेगा.”

13 तब येशु ने शताधिपति से कहा, “जाओ, तुम्हारे लिए वैसा
ही होगा जैसा तुम्हारा विश्वास है.” उसी क्षण वह सेवक चंगा हो
गया.

14 जब येशु पेतरॉस के घर पर आए, उन्होंने उनकी सास को
बुखार से पीड़ित पाया.

15 उन्होंने उनके हाथ का स्पर्श किया और वह बुखार से मुक्त
हो गई और उठकर उन सब की सेवा करने में जुट गई.

16 जब संध्या हुई तब लोग दुष्टात्मा से पीड़ित लोगों को उनके
पास लाने लगे और येशु अपने वचन मात्र से उन्हें दुष्टात्मा मुक्त
करते गए, साथ ही रोगियों को स्वस्थ.

17 यह भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा की गई इस भविष्यवाणी
की पूर्ति थी: “उन्होंने स्वयं हमारी दुर्बलताओं को अपने ऊपर
ले लिया तथा हमारे रोगों को उठा लिया.”

18 अपने आस-पास भीड़ को देख येशु ने शिष्यों को झील की
दूसरी ओर जाने की आज्ञा दी.

19 उसी समय एक शास्त्री ने आकर येशु से विनती की,
“गुरुवर, आप जहां कहीं जाएंगे, मैं आपके साथ रहूंगा.”

20 येशु ने उसके उत्तर में कहा, “लोमड़ियों के पास उनकी
गुफाएं तथा आकाश के पक्षियों के पास उनके बसेरे होते हैं,
किंतु मनुष्य के पुत्र के पास तो सिर रखने तक का स्थान नहीं
है!”

21 एक अन्य शिष्य ने उनसे विनती की, “प्रभु मुझे पहले अपने
पिता की अंत्येष्टि की अनुमति दे दीजिए.”

22 किंतु येशु ने उससे कहा, “मृत अपने मरे हुओं का प्रबंध कर
लेंगे, तुम मेरे पीछे हो लो.”

23 जब उन्होंने नाव में प्रवेश किया उनके शिष्य भी उनके साथ
हो लिए.

24 अचानक झील में ऐसा प्रचंड आंधी उठी कि लहरों ने नाव
को ढांक लिया, किंतु येशु इस समय सो रहे थे.

25 इस पर शिष्यों ने येशु के पास जाकर उन्हें जगाते हुए कहा,
“प्रभु, हमारी रक्षा कीजिए, हम नाश हुए जा रहे हैं!”

26 येशु ने उनसे कहा, “क्यों डर रहे हो, अल्पविश्वासियो!” वह
उठे और उन्होंने आंधी और झील को डांटा, और उसी क्षण ही
पूरी शांति छा गई.

27 शिष्य हैरान रह गए, और विचार करने लगे, “ये किस प्रकार
के व्यक्ति हैं कि आंधी और झील तक इनकी आज्ञा का पालन
करते हैं!”

28 झील पार कर वे गदारा नामक प्रदेश में आए. वहां कब्रों की
गुफाओं से निकलकर दुष्टात्मा से पीड़ित दो व्यक्ति उनके
सामने आ गए. वे दोनों इतने अधिक हिंसक थे कि कोई भी
उस रास्ते से निकल नहीं पाता था.

29 येशु को देख वे दोनों चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे,
“परमेश्वर-पुत्र, आपका हमसे क्या लेना देना? क्या आप समय
से पहले ही हमें दुःख देने आ पहुंचे हैं?”

30 वहां कुछ दूर सूअरों का एक झुंड चर रहा था.

31 दुष्टात्मा येशु से विनती करने लगे, “यदि आप हमें बाहर
निकाल ही रहे हैं, तो हमें इन सूअरों के झुंड में भेज दीजिए.”

32 येशु ने उन्हें आज्ञा दी, “जाओ!” वे निकलकर सूअरों में
प्रवेश कर गए और पूरा झुंड ढलान पर सरपट भागता हुआ
झील में जा गिरा और डूब गया.

33 रखवाले भागे और नगर में जाकर घटना का सारा हाल कह सुनाया; साथ ही यह भी कि उन दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्तियों के साथ क्या-क्या हुआ.

34 सभी नागरिक नगर से निकलकर येशु के पास आने लगे. जब उन्होंने येशु को देखा तो उनसे विनती करने लगे कि वह उस क्षेत्र की सीमा से बाहर चले जाएं.

Matthew 9:1

1 इसलिये येशु नाव में सवार होकर झील पार करके अपने ही नगर में आ गए.

2 कुछ लोग एक लकवा पीड़ित को बिछौने पर उनके पास लाए. उनका विश्वास देख येशु ने रोगी से कहा, "तुम्हारे लिए यह आनंद का विषय है: तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं."

3 कुछ शास्त्री आपस में कहने लगे, "यह तो परमेश्वर की निंदा कर रहा है!"

4 उनके विचारों का अहसास होने पर येशु उन्हें संबोधित कर बोले, "क्यों अपने मनों में बुरा विचार कर रहे हो?

5 क्या कहना सरल है, 'तुम्हारे पाप क्षमा हो गए' या 'उठो, चलने लगो?'

6 किंतु इसका उद्देश्य यह है कि तुम्हें यह मालूम हो जाए कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का अधिकार सौंपा गया है." तब रोगी से येशु ने कहा, "उठो, अपना बिछौना उठाओ और अपने घर जाओ."

7 वह उठा और घर चला गया.

8 यह देख भीड़ हैरान रह गई और परमेश्वर का गुणगान करने लगी, जिन्होंने मनुष्यों को इस प्रकार का अधिकार दिया है.

9 वहां से जाने के बाद येशु ने चुंगी लेनेवाले के आसन पर बैठे हुए एक व्यक्ति को देखा, जिसका नाम मत्तियाह था. येशु ने उसे आज्ञा दी, "मेरे पीछे हो ले." मत्तियाह उठकर येशु के साथ हो लिए.

10 जब येशु भोजन के लिए बैठे थे, अनेक चुंगी लेनेवाले तथा अपराधी व्यक्ति भी उनके साथ शामिल थे.

11 यह देख फ़रीसियों ने आपत्ति उठाते हुए येशु के शिष्यों से कहा, "तुम्हारे गुरु चुंगी लेनेवाले और अपराधी व्यक्तियों के साथ भोजन क्यों करते हैं?"

12 यह सुन येशु ने स्पष्ट किया, "चिकित्सक की ज़रूरत स्वस्थ व्यक्ति को नहीं परंतु रोगी व्यक्ति को होती है.

13 अब जाओ और इस कहावत का अर्थ समझो: 'मैं बलिदान से नहीं, पर दया से प्रसन्न होता हूं,' क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परंतु पापियों को बुलाने के लिए इस पृथ्वी पर आया हूं."

14 बपतिस्मा देनेवाले योहन के शिष्य येशु के पास आए और उनसे प्रश्न किया, "क्या कारण है कि फ़रीसी और हम तो उपवास करते हैं किंतु आपके शिष्य नहीं?"

15 येशु ने उन्हें समझाया: "क्या यह संभव है कि दुल्हे के होते हुए बाराती विलाप करें? हां, ऐसा समय आएगा जब दूल्हा उनसे अलग कर दिया जाएगा—तब वे उपवास करेंगे.

16 "पुराने वस्त्र में कोई भी नये कपड़े का जोड़ नहीं लगाता, नहीं तो कोरा वस्त्र का जोड़ सिकुड़ कर वस्त्र से अलग हो जाता है और वस्त्र और भी अधिक फट जाता है.

17 वैसे ही लोग नए दाखरस को पुरानी मशकों में नहीं रखते; अन्यथा वे फट जाती हैं और दाखरस तो बहकर नाश हो ही जाता है, साथ ही मशके भी. नया दाखरस नई मशकों में ही रखा जाता है. परिणामस्वरूप दोनों ही सुरक्षित रहते हैं."

18 जब येशु उन लोगों से इन विषयों पर बातचीत कर रहे थे, यहूदी सभागृह का एक अधिकारी उनके पास आया और उनके सामने झुककर विनती करने लगा, "कुछ देर पहले ही मेरी पुत्री की मृत्यु हुई है. आप कृपया आकर उस पर हाथ रख दीजिए और वह जीवित हो जाएगी."

19 येशु और उनके शिष्य उसके साथ चले गए.

20 मार्ग में बारह वर्ष से लहूस्राव-पीड़ित एक स्त्री ने पीछे से
आकर येशु के वस्त्र के छोर को छुआ,

21 क्योंकि उसने अपने मन में यह कहा था: "यदि मैं उनके
वस्त्र को भी छू लूं, तो मैं रोगमुक्त हो जाऊंगी."

22 येशु ने पीछे मुड़कर उसे देखा और उससे कहा, "तुम्हारे
लिए यह आनंद का विषय है: तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ कर
दिया." उसी क्षण वह स्त्री स्वस्थ हो गई.

23 जब येशु यहूदी सभागृह के अधिकारी के घर पर पहुंचे तो
उन्होंने भीड़ का कोलाहल और बांसुरी वादक शोक-संगीत
बजाते हुए भी सुना.

24 इसलिये उन्होंने आज्ञा दी, "यहां से चले जाओ क्योंकि
बालिका की मृत्यु नहीं हुई है—वह सो रही है." इस पर वे येशु
का ठट्ठा करने लगे,

25 किंतु जब भीड़ को बाहर निकाल दिया गया, येशु ने कक्ष में
प्रवेश कर बालिका का हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी.

26 यह समाचार सारे क्षेत्र में फैल गया.

27 जब येशु वहां से विदा हुए, दो अंधे व्यक्ति यह पुकारते हुए
उनके पीछे चलने लगे, "दावीद-पुत्र, हम पर कृपा कीजिए!"

28 जब येशु ने घर में प्रवेश किया वे अंधे भी उनके पास पहुंच
गए. येशु ने उनसे प्रश्न किया, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मुझमें
यह करने का सामर्थ्य है?" उन्होंने उत्तर दिया, "जी हां, प्रभु."

29 तब येशु ने यह कहते हुए उनके नेत्रों का स्पर्श किया,
"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी इच्छा पूरी हो,"

30 और उन्हें दृष्टि प्राप्त हो गई. येशु ने उन्हें कड़ी चेतावनी दी,
"यह ध्यान रखना कि इसके विषय में किसी को मालूम न होने
पाए!"

31 किंतु उन्होंने जाकर सभी क्षेत्र में येशु के विषय में यह
समाचार प्रसारित कर दिया.

32 जब वे सब वहां से बाहर निकल रहे थे, उनके सामने एक
गूंगा व्यक्ति, जो दुष्टात्मा से पीड़ित था, लाया गया.

33 दुष्टात्मा के निकल जाने के बाद वह बातें करने लगा. यह
देख भीड़ चकित रह गई और कहने लगी, "इससे पहले
इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया."

34 जबकि फ़रीसी कह रहे थे, "यह दुष्टात्मा का निकालना
दुष्टात्मा के प्रधान की सहायता से करता है."

35 येशु नगर-नगर और गांव-गांव की यात्रा कर रहे थे. वह
उनके यहूदी सभागृहों में शिक्षा देते, स्वर्ग-राज्य के सुसमाचार
का प्रचार करते तथा हर एक प्रकार के रोग और दुर्बलताओं
को स्वस्थ करते जा रहे थे.

36 भीड़ को देख येशु का हृदय करुणा से दुःखित हो उठा
क्योंकि वे बिन चरवाहे की भेड़ों के समान व्याकुल और
निराश थे.

37 इस पर येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "उपज तो बहुत है
किंतु मज़दूर कम,

38 इसलिये उपज के स्वामी से विनती करो कि इस उपज के
लिए मज़दूर भेज दें."

Matthew 10:1

1 येशु ने अपने बारह शिष्यों को बुलाकर उन्हें अधिकार दिया
कि वे दुष्टात्मा को निकाला करें तथा हर एक प्रकार के रोग
और बीमारी से स्वस्थ करें.

2 इन बारह प्रेरितों के नाम इस प्रकार हैं: शिमओन जो पेतरॉस
कहलाए, उनके भाई आन्द्रेयास, ज़ेबेदियॉस के पुत्र याकोब,
उनके भाई योहन,

3 फ़िलिप्पॉस, बारथोलोमेयॉस, थोमॉस, चुंगी लेनेवाले
मत्तियाह, हलफ़ेयॉस के पुत्र याकोब, थद्देइयॉस,

4 कनानी शिमओन तथा कारियोतवासी यहूदाह, जिसने
उनके साथ धोखा किया.

5 येशु ने इन बारहों को इन निर्देशों के साथ विदा किया: “गैर-
यहूदियों के मध्य न जाओ, और शमरिया प्रदेश के किसी भी
नगर में प्रवेश न करना.

6 परंतु इस्राएल घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ.

7 जाते हुए यह घोषणा करते जाओ, ‘स्वर्ग-राज्य समीप आ
पहुंचा है.’

8 रोगियों को स्वस्थ करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ रोगियों
को शुद्ध करो, तथा दुष्टात्मा को निकालते जाओ. तुमने बिना
दाम के प्राप्त किया है, बिना दाम लिए देते जाओ.

9 “यात्रा में अपने लिए सोना, चांदी तथा तांबे के सिक्कों को
जमा न करना.

10 यात्रा के लिए न थैला, न वस्त्रों के दूसरे जोड़े, न जूते और न
ही लाठी साथ ले जाना क्योंकि भरण-पोषण हर एक मज़दूर
का अधिकार है.

11 किसी भी गांव या नगर में प्रवेश करने पर योग्य व्यक्ति की
खोज करना और वहां से विदा होने तक उसी के अतिथि
होकर रहना.

12 उस घर में प्रवेश करते समय उनके लिए मंगल कामना
करना.

13 यदि वह घर इस योग्य लगे तो उसके लिए शांति की आशीष
देना; यदि वह इसके योग्य न लगे तो अपनी शांति की आशीष
अपने पास लौट आने देना.

14 जो कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी न सुने उस घर
से या उस नगर से बाहर आते हुए अपने चरणों की धूल तक
वहीं झाड़ देना.

15 सच तो यह है कि न्याय-दिवस पर उस नगर की तुलना में
सोदोम और गोमोरा का दंड कहीं अधिक सहनीय होगा.

16 “याद रखो कि मैं तुम्हें इस प्रकार भेज रहा हूं मानो भेड़ियों
के समूह में भेड़. इसलिये ज़रूरी है कि तुम सांप जैसे चालाक
तथा कबूतर जैसे भोले हो.

17 सहजातियों से सावधान रहना क्योंकि वे ही तुम्हें पकड़कर
स्थानीय न्यायालय को सौंप देंगे. उनके यहूदी सभागृहों में तुम्हें
कोड़े लगाए जाएंगे.

18 यहां तक कि मेरे कारण मेरे गवाह के रूप में तुम्हें
राज्यपालों, शासकों और गैर-यहूदियों के सामने प्रस्तुत किया
जाएगा.

19 जब तुम पकड़वाए जाओ तो यह चिंता न करना कि तुम्हें
कैसे या क्या कहना होगा—सही शब्द तुम्हें उसी समय प्रदान
किए जाएंगे,

20 क्योंकि वहां तुम नहीं परंतु तुम्हारे स्वर्गीय पिता का आत्मा
तुम्हारे द्वारा शब्द देगा.

21 “भाई अपने भाई को तथा पिता अपनी संतान को हत्या के
लिए पकड़वाएगा. बालक अपने माता-पिता के विरुद्ध हो
जाएंगे और उनकी हत्या का कारण बन जाएंगे.

22 मेरे नाम के कारण तुम सब की घृणा के पात्र बन जाओगे
किंतु जो अंत तक स्थिर रहेगा, वही उद्धार पाएगा.

23 जब वे तुम्हें एक नगर में यातना देने लगें तब दूसरे नगर को
भाग जाना, क्योंकि सच्चाई यह है कि इस्राएल राष्ट्र के एक
नगर से दूसरे नगर तक तुम्हारी यात्रा पूरी भी न होगी कि
मनुष्य का पुत्र आ जाएगा.

24 “शिष्य अपने गुरु से श्रेष्ठ नहीं और न दास अपने स्वामी से.

25 शिष्य को यही काफ़ी है कि वह अपने गुरु के तुल्य हो जाए
तथा दास अपने स्वामी के. यदि उन्होंने परिवार के प्रधान को
ही बेलज़बूल घोषित कर दिया तो उस परिवार के सदस्यों को
क्या कुछ नहीं कहा जाएगा!

Matthew 11:1

26 “इसलिये उनसे भयभीत न होना क्योंकि ऐसा कुछ भी छुपा
नहीं, जिसे खोला न जाएगा या ऐसा कोई रहस्य नहीं, जिसे
प्रकट न किया जाएगा.

27 मैं जो कुछ तुम पर अंधकार में प्रकट कर रहा हूं, उसे
प्रकाश में स्पष्ट करो और जो कुछ तुमसे कान में कहा गया है,
उसकी घोषणा हर जगह करो.

28 उनसे भयभीत न हो, जो शरीर को तो नाश कर सकते हैं
किंतु आत्मा को नाश करने में असमर्थ हैं. सही तो यह है कि
भयभीत उनसे हो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नर्क में नाश
करने में समर्थ हैं.

29 क्या दो गौरैयें बहुत सस्ती एक पैसे में नहीं बिकती? फिर
भी ऐसा नहीं कि यदि उनमें से एक भी भूमि पर गिर जाए और
तुम्हारे पिता को उसके विषय में मालूम न हो.

30 तुम्हारे सिर का तो एक-एक बाल गिना हुआ है.

31 इसलिये भयभीत न हो. तुम्हारा दाम अनेक गौरैया से कहीं
अधिक है.

32 “जो कोई मुझे मनुष्यों के सामने स्वीकार करता है, मैं भी
उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने स्वीकार करूंगा

33 किंतु जो कोई मुझे मनुष्यों के सामने अस्वीकार करता है,
उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने अस्वीकार करूंगा.

34 “यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मेल-मिलाप के लिए आया
हूं. मैं मेल-मिलाप के लिए नहीं, बंटवारे के लिए आया हूं.

35 मैं आया हूं कि “ ‘पुत्र को उसके पिता के विरुद्ध, पुत्री को
उसकी माता के विरुद्ध तथा बहू को उसकी सास के विरुद्ध
उकसाऊं.

36 मनुष्य के शत्रु उसके परिवार के सदस्य ही होंगे.’

37 “वह, जिसे मेरे बजाय अपने माता-पिता से अधिक लगाव
है, मेरे योग्य नहीं है, तथा जिसे मेरी बजाय अपने पुत्र-पुत्री से
अधिक प्रेम है, वह मेरे योग्य नहीं.

38 वह, जो अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए मेरा अनुसरण नहीं
करता, मेरे योग्य नहीं.

39 वह, जो यह समझता है कि उसने जीवन पा लिया है, वह
उसे खो देगा तथा वह, जिसने मेरे लिए अपना जीवन खो दिया
है, उसे सुरक्षित पाएगा.

40 “वह, जो तुम्हें स्वीकार करता है, मुझे स्वीकार करता है,
और जो मुझे स्वीकार करता है, उन्हें स्वीकार करता है,
जिन्होंने मुझे भेजा है.

41 जो कोई एक भविष्यवक्ता को एक भविष्यवक्ता के नाम में
स्वीकार करता है, एक भविष्यवक्ता का ईनाम प्राप्त करेगा;
और वह, जो एक धर्मी व्यक्ति को एक धर्मी व्यक्ति के नाम में
स्वीकार करता है, धर्मी व्यक्ति का ही ईनाम प्राप्त करेगा.

42 जो कोई इन मामूली व्यक्तियों में से किसी एक को एक
कटोरा शीतल जल मात्र इसलिये दे कि वह मेरा शिष्य है, तुम
सच तो जानो, वह अपना ईनाम नहीं खोएगा.”

Matthew 11:1

1 जब येशु अपने बारह शिष्यों को निर्देश दे चुके, वह शिक्षा
देने और प्रचार के लिए वहां से उनके नगरों में चले गए.

2 बंदीगृह में जब योहन ने मसीह के कामों के विषय में सुना
उन्होंने अपने शिष्यों को येशु से यह पूछने भेजा,

3 “क्या आप वही है, जिसकी प्रतिज्ञा तथा प्रतीक्षा की गई हैं, या
हम किसी अन्य का इंतजार करें?”

4 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “जो कुछ तुम देख और सुन रहे हो
उसकी सूचना योहन को दे दो:

5 अंधे देख पा रहे हैं, लंगड़े चल रहे हैं, कोढ़ के रोगियों को
शुद्ध किया जा रहा है, बहिरे सुनने लगे हैं, मरे हुए दोबारा

जीवित किए जा रहे हैं तथा कंगालों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है.

6 धन्य है वह, जिसका विश्वास मुझ पर से नहीं उठता."

7 जब योहन के शिष्य वहां से जा ही रहे थे, प्रभु येशु ने भीड़ से योहन के विषय में कहना प्रारंभ किया, "तुम्हारी आशा बंजर भूमि में क्या देखने की थी? हवा में हिलते हुए सरकंडे को?

8 यदि यह नहीं तो फिर क्या देखने गए थे? कीमती वस्त्र धारण किए हुए किसी व्यक्ति को? जो ऐसे वस्त्र धारण करते हैं उनका निवास तो राजमहलों में होता है.

9 तुम क्यों गए थे? किसी भविष्यवक्ता से भेंट करने? हां! मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यह वह हैं, जो भविष्यवक्ता से भी बढ़कर हैं

10 यह वह हैं जिनके विषय में लिखा गया है: " 'मैं अपना दूत तुम्हारे आगे भेज रहा हूं, जो तुम्हारे आगे-आगे जाकर तुम्हारे लिए मार्ग तैयार करेगा.'

11 सच तो यह है कि आज तक जितने भी मनुष्य हुए हैं उनमें से एक भी बपतिस्मा देनेवाले योहन से बढ़कर नहीं. फिर भी स्वर्ग-राज्य में छोटे से छोटा भी योहन से बढ़कर है.

12 बपतिस्मा देनेवाले योहन के समय से लेकर अब तक स्वर्ग-राज्य प्रबलतापूर्वक फैल रहा है और आकांक्षी-उत्साही व्यक्ति इस पर अधिकार कर रहे हैं.

13 भविष्यद्वक्ताओं तथा व्यवस्था की भविष्यवाणी योहन तक ही थी.

14 यदि तुम इस सच में विश्वास कर सको तो सुनो: योहन ही वह एलियाह हैं जिनका दोबारा आगमन होना था.

15 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले.

16 "इस पीढ़ी की तुलना मैं किससे करूं? यह बाजारों में बैठे हुए उन बालकों के समान है, जो पुकारते हुए अन्यों से कह रहे हैं:

17 " 'जब हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, तुम न नाचे; हमने शोक गीत भी गाए, फिर भी तुम न रोए.'

18 योहन रोटी नहीं खाते, और दाखरस नहीं पीते थे. इसलिये लोगों ने घोषणा की, 'उसमें दुष्टात्मा है.'

19 मनुष्य का पुत्र खाते-पीते आया, और उन्होंने घोषित कर दिया, 'अरे, वह तो पेटू और पियक्कड़ है; वह तो चुंगी लेनेवालों और अपराधी व्यक्तियों का मित्र है!' बुद्धि अपने कामों से सही साबित होती है."

20 येशु ने अधिकांश अद्भुत काम इन्हीं नगरों में किए थे; फिर भी इन नगरों ने पश्चाताप नहीं किया था, इसलिये येशु इन नगरों को धिक्कारने लगे.

21 "धिक्कार है तुझ पर कोराज़ीन! धिक्कार है तुझ पर बैथसैदा! ये ही अद्भुत काम, जो तुझमें किए गए हैं यदि सोर और सीदोन नगरों में किए जाते तो वे विलाप-वस्त्र पहन, सिर पर राख डाल कब के पश्चाताप कर चुके होते!

22 फिर भी मैं कहता हूं, सुनो: न्याय-दिवस पर सोर और सीदोन नगरों का दंड तेरे दंड से अधिक सहने योग्य होगा.

23 और कफ़रनहूम, तू! क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किए जाने की आशा कर रहा है? अरे! तुझे तो पाताल में उतार दिया जाएगा क्योंकि जो अद्भुत काम तुझमें किए गए, यदि वे ही सोदोम नगर में किए गए होते तो वह आज भी बना होता.

24 फिर भी आज जो मैं कह रहा हूं उसे याद रख: न्याय-दिवस पर सोदोम नगर का दंड तेरे दंड से अधिक सहने योग्य होगा."

25 यह वह अवसर था जब येशु ने इस प्रकार कहा: "पिता! स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं आपकी स्तुति करता हूं कि आपने ये सभी सच बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छुपा रखे और नन्हे बालकों पर प्रकट कर दिए क्योंकि पिता, आपकी दृष्टि में यही अच्छा था.

26 सच है, पिता, क्योंकि इसी में आपको परम संतोष था.

27 “मेरे पिता द्वारा सब कुछ मुझे सौंप दिया गया है. पिता के
अलावा कोई पुत्र को नहीं जानता और न ही कोई पिता को
जानता है, सिवाय पुत्र के तथा वे, जिन पर वह प्रकट करना
चाहें.

28 “तुम सभी, जो थके हुए तथा भारी बोझ से दबे हो, मेरे पास
आओ, तुम्हें विश्राम मैं दूंगा.

29 मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझसे सीखो क्योंकि मैं
दीन और हृदय से नम्र हूं और तुम्हें मन में विश्राम प्राप्त होगा

30 क्योंकि सहज है मेरा जूआ और हल्का है मेरा बोझ.”

Matthew 12:1

1 शब्बाथ पर येशु और उनके शिष्य अन्न के खेतों में से होकर
जा रहे थे. उनके शिष्यों को भूख लग गई और वे बालें तोड़कर
खाने लगे.

2 यह देख फ़रीसियों ने आपत्ति उठाई, “देख लो, तुम्हारे शिष्य
वह कर रहे हैं जो शब्बाथ संबंधित व्यवस्था के अनुसार गलत
है.”

3 इस पर येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “क्या आप लोगों ने उस
घटना के विषय में नहीं पढ़ा जिसमें भूख लगने पर दावीद और
उनके साथियों ने क्या किया था?

4 कैसे उन्होंने परमेश्वर के भवन में प्रवेश किया और दावीद
और उनके साथियों ने भेंट की वह रोटी खाई, जिसे पुरोहितों
के अलावा किसी का भी खाना व्यवस्था के अनुसार न था?

5 या क्या आप लोगों ने व्यवस्था में यह नहीं पढ़ा कि मंदिर में
सेवारत पुरोहित शब्बाथ की व्यवस्था का उल्लंघन करने पर
भी निर्दोष ही रहते हैं?

6 किंतु मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यहां वह है, जो मंदिर से बढ़कर
है.

7 वस्तुतः तुमने यदि इस बात का अर्थ समझा होता: ‘मैं बलि
की नहीं परंतु दया की कामना करता हूं,’ तो तुमने इन निर्दोषों
पर आरोप न लगाया होता.

8 क्योंकि मनुष्य का पुत्र शब्बाथ का स्वामी है.”

9 वहां से चलकर येशु यहूदी सभागृह में गए.

10 वहां एक व्यक्ति था, जिसका हाथ लक़वा मारा हुआ था.
उन्होंने येशु से प्रश्न किया, “क्या शब्बाथ पर किसी को स्वस्थ
करना व्यवस्था के अनुसार है?” उन्होंने यह प्रश्न इसलिये किया
कि वे येशु पर आरोप लगा सकें.

11 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुममें कौन ऐसा व्यक्ति है जिसके
पास एक भेड़ है और यदि वह भेड़ शब्बाथ पर गड्ढे में गिर
जाए तो वह उसे हाथ बढ़ाकर बाहर न निकाले?

12 एक भेड़ की तुलना में मनुष्य कितना अधिक कीमती है!
इसलिये शब्बाथ पर किया गया भला काम व्यवस्था के
अनुसार होता है.”

13 तब येशु ने उस व्यक्ति को आज्ञा दी, “अपना हाथ आगे
बढ़ाओ!” उसने हाथ आगे बढ़ाया—वह हाथ दूसरे हाथ के
जैसा स्वस्थ हो गया था.

14 इसलिये फ़रीसी बाहर चले गए तथा येशु की हत्या का
षड्यंत्र रचने लगे.

15 येशु को इसका अहसास था इसलिये वह वहां से चले गए.
अनेक थे, जो उनके साथ उनके पीछे-पीछे चल रहे थे. येशु ने
उनमें से सभी रोगियों को स्वस्थ कर दिया

16 और उन्हें चेतावनी दी कि इस विषय में वे किसी से वर्णन न
करें कि वह कौन हैं.

17 यह भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा की गई इस भविष्यवाणी
की पूर्ति थी:

18 यही है मेरा चुना हुआ सेवक, मेरा प्रिय पात्र, जिसमें मेरे प्राण
को पूरा संतोष है. मैं उसे अपने आत्मा से भरा करूंगा और
वह गैर-यहूदियों में न्याय की घोषणा करेगा.

19 वह न तो विवाद करेगा, न ऊंचे शब्द में कुछ कहेगा और
न ही गलियों में कोई उसका शब्द सुन सकेगा.

20 कुचले हुए नरकट को वह तोड़ न फेंकेगा, और न ही वह
टिमटिमाती बाती को बुझा देगा, जब तक वह न्याय को विजय
तक न पहुंचा दे.

21 उसकी प्रतिष्ठा में गैर-यहूदियों के लिए आशा होगी.

22 तब येशु के सामने एक ऐसा व्यक्ति लाया गया, जो दुष्टात्मा
से पीड़ित था, वह अंधा तथा गूंगा था. येशु ने उसे स्वस्थ कर
दिया. परिणामस्वरूप वह व्यक्ति बातें करने और देखने लगा.

23 सभी भीड़ चकित रह गई. मौज़ूद लोग आपस में विचार कर
रहे थे, "कहीं यही दावीद का वह वंशज तो नहीं?"

24 किंतु यह सुनकर फ़रीसियों ने इसके विषय में अपना मत
दिया, "यह व्यक्ति केवल दुष्टात्माओं के प्रधान बेलज़बूल की
सहायता से दुष्टात्माओं को निकाला करता है."

25 उनके विचारों के विषय में मालूम होने पर येशु ने उनसे
कहा, "कोई भी ऐसा राज्य, जिसमें फूट पड़ी हो, मिट जाता है.
कोई भी नगर या परिवार फूट की स्थिति में स्थिर नहीं रह
पाता.

26 यदि शैतान ही शैतान को बाहर निकाला करे तो वह अपना
ही विरोधी हो जाएगा, तब भला उसका शासन स्थिर कैसे रह
सकेगा?

27 यदि मैं दुष्टात्माओं को बेलज़बूल के सहयोग से बाहर
निकाला करता हूं तो फिर तुम्हारे लोग उनको कैसे बाहर
करती है? परिणामस्वरूप वे ही तुम पर आरोप लगाएंगे.

28 परंतु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के आत्मा के द्वारा
बाहर कर रहा हूं तो यह साबित हो गया है कि तुम्हारे बीच
परमेश्वर का राज्य आ चुका है.

29 "क्या, यह संभव है कि कोई किसी बलवान व्यक्ति के घर
में प्रवेश कर उसकी संपत्ति लूट ले? हां, यदि बलवान व्यक्ति
को पहले बांध दिया जाए, तब उसकी संपत्ति को लूट लेना
संभव है.

30 "वह, जो मेरे पक्ष में नहीं, मेरे विरुद्ध है और वह, जो मेरे
साथ इकट्ठा नहीं करता, वह बिखेरता है.

31 इसलिये तुमसे मेरा कहना यही है: लोगों द्वारा किया गया
कोई भी पाप, कोई भी परमेश्वर-निंदा क्षमा के योग्य है किंतु
पवित्र आत्मा की निंदा क्षमा नहीं की जाएगी.

32 यदि कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कुछ कहे, उसे क्षमा कर
दिया जाएगा किंतु यदि कोई पवित्र आत्मा की निंदा में कुछ
कहता है, तो उसे क्षमा नहीं किया जाएगा—न तो इस युग में
और न ही आनेवाले युग में.

33 "यदि पेड़ अच्छा है तो फल भी अच्छा ही होगा और यदि
पेड़ अच्छा नहीं है तो उसका फल भी अच्छा नहीं होगा. पेड़
अपने फल से पहचाना जाता है.

34 अरे तुम! तुम, जो विषैले सांप की संतान हो, भला तुम्हारे बुरे
होने पर तुम्हारे मुख से अच्छी बातें कैसे निकल सकती हैं?
क्योंकि मुख से वही मुखरित होता है जो हृदय में भरा होता है.

35 भला व्यक्ति स्वयं में भरे हुए उत्तम भंडार में से उत्तम ही
निकालता है तथा बुरा व्यक्ति स्वयं में भरे हुए बुरे भंडार में से
बुरा.

36 तुम पर मैं यह स्पष्ट कर रहा हूं: हर एक व्यक्ति न्याय-दिवस
पर अपने निराधार शब्दों का हिसाब देगा;

37 क्योंकि अपने शब्दों के द्वारा ही तुम निर्दोष या दंडित
घोषित किए जाओगे."

38 कुछ शास्त्रियों और फ़रीसियों ने येशु से विनती की,
"गुरुवर, हम आपसे कोई अद्भुत चिह्न देखना चाहते हैं."

39 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “यह दुष्ट तथा परमेश्वर के प्रति
निष्ठाहीन पीढ़ी अद्भुत चिह्न की लालसा करती है, फिर भी
इसे भविष्यवक्ता योनाह के चिह्न के अतिरिक्त कोई भी चिह्न
नहीं दिया जाएगा.

40 ठीक जैसे भविष्यवक्ता योनाह तीन दिन और तीन रात
विशालकाय जल जंतु के पेट में रहे, मनुष्य का पुत्र भी तीन
दिन और तीन रात भूमि के भीतर रहेगा.

41 न्याय-दिवस पर नीनवे नगर की जनता इस पीढ़ी के साथ
उपस्थित होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि उसने तो
भविष्यवक्ता योनाह के प्रचार के परिणामस्वरूप पश्चाताप
कर लिया, किंतु यहां तो वह है, जो भविष्यवक्ता योनाह से भी
बढ़कर है.

42 न्याय-दिवस पर दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी
होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से यात्रा
कर राजा शलोमोन के ज्ञान को सुनने आई थी; किंतु यहां तो
वह है, जो राजा शलोमोन से भी बढ़कर है.

43 “जब दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से बाहर आ जाती है, वह
निवास स्थान की खोज में सूखे स्थानों में फिरती है, किंतु उसे
निवास स्थान प्राप्त नहीं हो पाता.

44 तब वह सोचती है, ‘मैं जिस निवास स्थान को छोड़कर आयी
थी, वहीं लौट जाऊं.’ वह वहां लौटकर उसे खाली, साफ़ और
सुथरा पाती है.

45 तब वह जाकर अपने से अधिक बुरी सात आत्मा और ले
आती है और वे सब उस व्यक्ति में प्रवेश कर उसमें अपना घर
बना लेती हैं. तब उस व्यक्ति की स्थिति पहले से खराब हो
जाती है. यही स्थिति होगी इस दुष्ट पीढ़ी की भी.”

46 जब येशु भीड़ से बातें कर रहे थे, उनकी माता तथा उनके
भाई उनसे भेंट करने की प्रतीक्षा में बाहर ठहरे हुए थे.

47 किसी ने उन्हें सूचित किया, “आपकी माता तथा भाई बाहर
आपसे भेंट करने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं.”

48 जिस व्यक्ति ने येशु को यह सूचना दी थी, उससे येशु ने
पूछा, “वास्तव में कौन है मेरी माता और कौन है मेरा भाई?”

49 तब अपने शिष्यों की ओर हाथ से संकेत करते हुए येशु ने
कहा, “ये हैं मेरे भाई, मेरी बहन तथा मेरी माता.

50 जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है, वही है मेरा
भाई, मेरी बहन तथा मेरी माता.”

Matthew 13:1

1 यह घटना उस दिन की है जब येशु घर से बाहर झील के
किनारे पर बैठे हुए थे.

2 एक बड़ी भीड़ उनके चारों ओर इकट्ठा हो गयी. इसलिये वह
एक नाव में जा बैठे और भीड़ झील के तट पर रह गयी.

3 उन्होंने भीड़ से दृष्टान्तों में अनेक विषयों पर चर्चा की. येशु ने
कहा: “एक किसान बीज बोने के लिए निकला.

4 बीज बोने में कुछ बीज तो मार्ग के किनारे गिरे, जिन्हें पक्षियों
ने आकर चुग लिया.

5 कुछ अन्य बीज पथरीली भूमि पर भी जा गिरे, जहां पर्याप्त
मिट्टी नहीं थी. पर्याप्त मिट्टी न होने के कारण वे जल्दी ही
अंकुरित भी हो गए.

6 किंतु जब सूर्योदय हुआ, वे झुलस गए और इसलिये कि
उन्होंने जड़ें ही नहीं पकड़ी थी, वे मुरझा गए.

7 कुछ अन्य बीज कंटीली झाड़ियों में जा गिरे और झाड़ियों ने
बढ़कर उन्हें दबा दिया.

8 कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और फल लाए. यह उपज सौ
गुणी, साठ गुणी, तीस गुणी थी.

9 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले.”

10 येशु के शिष्यों ने उनके पास आकर उनसे प्रश्न किया,
“गुरुवर, आप लोगों को दृष्टान्तों में ही शिक्षा क्यों देते हैं?”

11 उसके उत्तर में येशु ने कहा, “स्वर्ग-राज्य के रहस्य जानने
की क्षमता तुम्हें तो प्रदान की गई है, उन्हें नहीं.

12 क्योंकि जिस किसी के पास है उसे और अधिक प्रदान
किया जाएगा और वह सम्पन्न हो जाएगा किंतु जिसके पास
नहीं है उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है.

13 यही कारण है कि मैं लोगों को दृष्टान्तों में शिक्षा देता हूं:
“क्योंकि वे देखते हुए भी कुछ नहीं देखते तथा सुनते हुए भी
कुछ नहीं सुनते और न उन्हें इसका अर्थ ही समझ आता है.

14 उनकी इसी स्थिति के विषय में भविष्यवक्ता यशायाह की
यह भविष्यवाणी पूरी हो रही है: “ ‘तुम सुनते तो रहोगे किंतु
समझोगे नहीं; तुम देखते तो रहोगे किंतु तुम्हें कोई ज्ञान न
होगा;

15 क्योंकि इन लोगों का मन-मस्तिष्क मंद पड़ चुका है. वे
अपने कानों से ऊंचा ही सुना करते हैं. उन्होंने अपनी आंखें
मूंद रखी हैं कि कहीं वे अपनी आंखों से देखने न लगें, कानों से
सुनने न लगें तथा अपने हृदय से समझने न लगें और मेरी ओर
फिर जाएं कि मैं उन्हें स्वस्थ कर दूं.’

16 धन्य हैं तुम्हारी आंखें क्योंकि वे देखती हैं और तुम्हारे कान
क्योंकि वे सुनते हैं.

17 मैं तुम पर एक सच प्रकट कर रहा हूं: अनेक भविष्यवक्ता
और धर्मी व्यक्ति वह देखने की कामना करते रहे, जो तुम देख
रहे हो किंतु वे देख न सके तथा वे वह सुनने की कामना करते
रहे, जो तुम सुन रहे हो किंतु सुन न सके.

18 “अब तुम किसान का दृष्टांत सुनो:

19 जब कोई व्यक्ति राज्य के विषय में सुनता है किंतु उसे
समझा नहीं करता, शैतान आता है और वह, जो उसके हृदय
में रोपा गया है, झपटकर ले जाता है. यह वह बीज है जो मार्ग
के किनारे गिर गया था.

20 पथरीली भूमि वह व्यक्ति है, जो संदेश को सुनता है तथा
तुरंत ही उसे खुशी से अपना लेता है

21 किंतु इसलिये कि उसकी जड़ है ही नहीं, वह थोड़े दिन के
लिए ही उसमें टिक पाता है. जब संदेश के कारण यातनाएं
और सताहट प्रारंभ होते हैं, उसका पतन हो जाता है.

22 वह भूमि, जहां बीज कंटीली झाड़ियों के बीच गिरा, वह
व्यक्ति है जो संदेश को सुनता तो है किंतु संसार की चिंताएं
तथा सम्पन्नता का छलावा संदेश को दबा देते हैं और वह
बिना फल के रह जाता है.

23 वह उत्तम भूमि, जिस पर बीज रोपा गया, वह व्यक्ति है, जो
संदेश को सुनता है, उसे समझता है तथा वास्तव में फल लाता
है—बोये गये बीज के तीस गुणा, साठ गुणा तथा सौ गुणा.”

24 येशु ने उनके सामने एक अन्य दृष्टांत प्रस्तुत किया: “स्वर्ग-
राज्य की तुलना उस व्यक्ति से की जा सकती है, जिसने अपने
खेत में उत्तम बीज का रोपण किया.

25 जब उसके सेवक सो रहे थे, उसका शत्रु आया और गेहूं के
बीज के मध्य जंगली बीज रोप कर चला गया.

26 जब गेहूं के अंकुर फूटे और बालें आईं तब जंगली बीज के
पौधे भी दिखाई दिए.

27 “इस पर सेवकों ने आकर अपने स्वामी से पूछा, ‘स्वामी,
आपने तो अपने खेत में उत्तम बीज रोपे थे! तो फिर ये जंगली
पौधे कहां से आ गए?’

28 “स्वामी ने उत्तर दिया, ‘यह काम शत्रु का है.’ “तब सेवकों ने
उससे पूछा, ‘क्या आप चाहते हैं कि हम इन्हें उखाड़ फेंकें?’

29 “उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ‘नहीं, ऐसा न हो कि जंगली पौधे
उखाड़ते हुए तुम गेहूं भी उखाड़ डालो.

30 गेहूं तथा जंगली पौधों को कटनी तक साथ साथ बढ़ने दो.
उस समय मैं मज़दूरों को आज्ञा दूंगा, जंगली पौधे इकट्ठा कर
उनकी पुलियां बांध दो कि उन्हें जला दिया जाए किंतु गेहूं मेरे
खलिहान में इकट्ठा कर दो.’ ”

31 येशु ने उनके सामने एक अन्य दृष्टांत प्रस्तुत किया: “स्वर्ग-
राज्य एक राई के बीज के समान है, जिसे एक व्यक्ति ने अपने
खेत में रोप दिया.

32 यह अन्य सभी बीजों की तुलना में छोटा होता है किंतु जब
यह पूरा विकसित हुआ तब खेत के सभी पौधों से अधिक बड़ा
हो गया और फिर वह बढ़कर एक पेड़ में बदल गया कि
आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों में बसेरा करने लगे.”

33 येशु ने उनके सामने एक और दृष्टांत प्रस्तुत किया: “स्वर्ग-
राज्य खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन माप
आटे में मिला दिया और होते-होते सारा आटा खमीर बन गया,
यद्यपि आटा बड़ी मात्रा में था.”

34 येशु ने ये पूरी शिक्षाएं भीड़ को दृष्टान्तों में दीं. कोई भी शिक्षा
ऐसी न थी, जो दृष्टांत में न दी गई

35 कि भविष्यवक्ता द्वारा की गई यह भविष्यवाणी पूरी हो जाए:
मैं दृष्टान्तों में वार्तालाप करूंगा, मैं वह सब कहूंगा, जो सृष्टि के
आरंभ से गुप्त है.

36 जब येशु भीड़ को छोड़कर घर के भीतर चले गए, उनके
शिष्यों ने उनके पास आकर उनसे विनती की, “गुरुवर, हमें
खेत के जंगली बीज का दृष्टांत समझा दीजिए.”

37 येशु ने दृष्टांत की व्याख्या इस प्रकार की, “अच्छे बीज
बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है.

38 खेत यह संसार है. अच्छा बीज राज्य की संतान हैं तथा
जंगली बीज शैतान की.

39 शत्रु, जिसने उनको बोया है, शैतान है. कटनी इस युग का
अंत तथा काटने के लिए निर्धारित मज़दूर स्वर्गदूत हैं.

40 “इसलिये ठीक जिस प्रकार जंगली पौधे कटने के बाद आग
में भस्म कर दिए जाते हैं, युग के अंत में ऐसा ही होगा.

41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा और वे उसके
राज्य में पतन के सभी कारणों तथा कुकर्मियों को इकट्ठा
करेंगे और

42 उन्हें आग कुंड में झोंक देंगे, जहां लगातार रोना तथा दांतों
का पीसना होता रहेगा.

43 तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे.
जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले.”

44 “स्वर्ग-राज्य खेत में छिपाए गए उस खजाने के समान है,
जिसे एक व्यक्ति ने पाया और दोबारा छिपा दिया. आनंद में
उसने अपनी सारी संपत्ति बेचकर उस खेत को मोल ले लिया.

45 “स्वर्ग-राज्य उस व्यापारी के समान है, जो अच्छे मोतियों
की खोज में था.

46 एक कीमती मोती मिल जाने पर उसने अपनी सारी संपत्ति
बेचकर उस मोती को मोल ले लिया.

47 “स्वर्ग-राज्य समुद्र में डाले गए उस जाल के समान है,
जिसमें सभी प्रजातियों की मछलियां आ जाती हैं.

48 जब वह जाल भर गया और खींचकर तट पर लाया गया,
उन्होंने बैठकर अच्छी मछलियों को टोकरी में इकट्ठा कर
लिया तथा निकम्मी को फेंक दिया.

49 युग के अंत में ऐसा ही होगा. स्वर्गदूत आएंगे और दुष्टों को
धर्मियों के मध्य से निकालकर अलग करेंगे

50 तथा उन्हें आग के कुंड में झोंक देंगे, जहां रोना तथा दांतों
का पीसना होता रहेगा.

51 “क्या तुम्हें अब यह सब समझ आया?” उन्होंने उत्तर दिया.
“जी हां, प्रभु.”

52 येशु ने उनसे कहा, “यही कारण है कि व्यवस्था का हर एक
शिक्षक, जो स्वर्ग-राज्य के विषय में प्रशिक्षित किया जा चुका
है, परिवार के प्रधान के समान है, जो अपने भंडार से नई और
पुरानी हर एक वस्तु को निकाल लाता है.”

Matthew 14:1

53 दृष्टान्तों में अपनी शिक्षा दे चुकने पर येशु उस स्थान से चले
गए.

54 तब येशु अपने गृहनगर में आए और वहां वह यहूदी
सभागृह में लोगों को शिक्षा देने लगे. इस पर वे चकित होकर
आपस में कहने लगे, “इस व्यक्ति को यह ज्ञान तथा इन
अद्भुत कामों का सामर्थ्य कैसे प्राप्त हो गया?

55 क्या यह उस बढ़ई का पुत्र नहीं? और क्या इसकी माता का
नाम मरियम नहीं और क्या याकोब, योसेफ़, शिमओन और
यहूदाह इसके भाई नहीं?

56 और क्या इसकी बहनें हमारे बीच नहीं? तब इसे ये सब कैसे
प्राप्त हो गया?”

57 वे येशु के प्रति क्रोध से भर गए. इस पर येशु ने उनसे कहा,
“अपने गृहनगर और परिवार के अलावा भविष्यवक्ता कहीं
भी अपमानित नहीं होता.”

58 लोगों के अविश्वास के कारण येशु ने उस नगर में अधिक
अद्भुत काम नहीं किए.

Matthew 14:1

1 उसी समय हेरोदेस ने, जो देश के एक चौथाई भाग का राजा
था, येशु के विषय में सुना.

2 उसने अपने सेवकों से कहा, “यह बपतिस्मा देनेवाला योहन
है—मरे हुओं में से जी उठा! यही कारण है कि आश्चर्यकर्म
करने का सामर्थ्य इसमें मौजूद है.”

3 उनकी हत्या का कारण थी हेरोदेस के भाई फ़िलिप्पॉस की
पत्नी हेरोदिअस. हेरोदेस ने बपतिस्मा देनेवाले योहन को बंदी
बनाकर कारागार में डाल दिया था

4 क्योंकि बपतिस्मा देनेवाले योहन उसे यह चेतावनी देते रहते
थे, “तुम्हारा हेरोदिअस को अपने पास रखना उचित नहीं है.”

5 हेरोदेस योहन को समाप्त ही कर देना चाहता था किंतु उसे
लोगों का भय था क्योंकि लोग उन्हें भविष्यवक्ता मानते थे.

6 हेरोदेस के जन्मदिवस समारोह के अवसर पर हेरोदिअस
की पुत्री के नृत्य-प्रदर्शन से हेरोदेस इतना प्रसन्न हुआ कि

7 उसने उस किशोरी से शपथ खाकर वचन दिया कि वह जो
चाहे मांग सकती है.

8 अपनी माता के संकेत पर उसने कहा, “मुझे एक थाल में,
यहीं, बपतिस्मा देनेवाले योहन का सिर चाहिए.”

9 यद्यपि इस पर हेरोदेस दुःखित अवश्य हुआ किंतु अपनी
शपथ और उपस्थित अतिथियों के कारण उसने इसकी पूर्ति
की आज्ञा दे दी.

10 उसने किसी को कारागार में भेजकर योहन का सिर कटवा
दिया,

11 उसे एक थाल में लाकर उस किशोरी को दे दिया गया और
उसने उसे ले जाकर अपनी माता को दे दिया.

12 योहन के शिष्य आए, उनके शव को ले गए, उनका अंतिम
संस्कार कर दिया तथा येशु को इसके विषय में सूचित किया.

13 इस समाचार को सुन येशु नाव पर सवार होकर वहां से
एकांत में चले गए. जब लोगों को यह मालूम हुआ, वे नगरों से
निकलकर पैदल ही उनके पीछे चल दिए.

14 तट पर पहुंचने पर येशु ने इस बड़ी भीड़ को देखा और
उनका हृदय करुणा से भर गया. उन्होंने उनमें, जो रोगी थे
उनको स्वस्थ किया.

15 संध्याकाल उनके शिष्य उनके पास आकर कहने लगे, “यह
निर्जन स्थान है और दिन ढल रहा है इसलिये भीड़ को विदा
कर दीजिए कि गांवों में जाकर लोग अपने लिए भोजन-
व्यवस्था कर सकें.”

16 किंतु येशु ने उनसे कहा, “उन्हें विदा करने की कोई ज़रूरत
नहीं है—तुम उनके लिए भोजन की व्यवस्था करो!”

Matthew 15:1

17 उन्होंने येशु को बताया कि यहां उनके पास सिर्फ़ पांच रोटियां और दो मछलियां हैं.

18 येशु ने उन्हें आज्ञा दी, “उन्हें यहां मेरे पास ले आओ.”

19 लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा देते हुए येशु ने पांचों रोटियां और दो मछलियां अपने हाथों में लेकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर भोजन के लिए धन्यवाद देने के बाद रोटियां तोड़-तोड़ कर शिष्यों को देना प्रारंभ किया और शिष्यों ने भीड़ को.

20 सभी ने भरपेट खाया. शेष रह गए टुकड़े इकट्ठा करने पर बारह टोकरे भर गए.

21 वहां जितनों ने भोजन किया था उनमें स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पुरुषों की संख्या ही कोई पांच हज़ार थी.

22 इसके बाद येशु ने शिष्यों को तुरंत ही नाव में सवार होने के लिए इस उद्देश्य से विवश किया कि शिष्य उनके पूर्व ही दूसरी ओर पहुंच जाएं, जबकि वह स्वयं भीड़ को विदा करने लगे.

23 भीड़ को विदा करने के बाद वह अकेले पर्वत पर चले गए कि वहां जाकर वह एकांत में प्रार्थना करें. यह रात का समय था और वह वहां अकेले थे.

24 विपरीत दिशा में हवा तथा लहरों के थपेड़े खाकर नाव तट से बहुत दूर निकल चुकी थी.

25 रात के अंतिम प्रहर में येशु जल सतह पर चलते हुए उनकी ओर आए.

26 उन्हें जल सतह पर चलते देख शिष्य घबराकर कहने लगे, “दुष्टात्मा है यह!” और वे भयभीत हो चिल्लाने लगे.

27 इस पर येशु ने उनसे कहा, “डरो मत. साहस रखो! मैं हूं!”

28 पेतरॉस ने उनसे कहा, “प्रभु! यदि आप ही हैं तो मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं जल पर चलते हुए आपके पास आ जाऊं.”

29 “आओ!” येशु ने आज्ञा दी. पेतरॉस नाव से उतरकर जल पर चलते हुए येशु की ओर बढ़ने लगे

30 किंतु जब उनका ध्यान हवा की गति की ओर गया तो वह भयभीत हो गए और जल में डूबने लगे. वह चिल्लाए, “प्रभु! मुझे बचाइए!”

31 येशु ने तुरंत हाथ बढ़ाकर उन्हें थाम लिया और कहा, “अरे, अल्प विश्वासी! तुमने संदेह क्यों किया?”

32 तब वे दोनों नाव में चढ़ गए और वायु थम गई.

33 नाव में सवार शिष्यों ने यह कहते हुए येशु की वंदना की, “सचमुच आप ही परमेश्वर-पुत्र हैं.”

34 झील पार कर वे गन्नेसरत प्रदेश में आ गए.

35 वहां के निवासियों ने उन्हें पहचान लिया और आस-पास के स्थानों में संदेश भेज दिया. लोग बीमार व्यक्तियों को उनके पास लाने लगे.

36 वे येशु से विनती करने लगे, कि वह उन्हें मात्र अपने वस्त्र का छोर ही छू लेने दें. अनेकों ने उनका वस्त्र छुआ और स्वस्थ हो गए.

Matthew 15:1

1 तब येरूशलेम से कुछ फ़रीसी और शास्त्री येशु के पास आकर कहने लगे,

2 “आपके शिष्य पूर्वजों की परंपराओं का उल्लंघन क्यों करते हैं? वे भोजन के पहले हाथ नहीं धोया करते.”

3 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “अपनी परंपराओं की पूर्ति में आप स्वयं परमेश्वर के आदेशों को क्यों तोड़ते हैं?

4 परमेश्वर की आज्ञा है, ‘अपने माता-पिता का सम्मान करो’ और वह, जो माता या पिता के प्रति बुरे शब्द बोले, उसे मृत्यु दंड दिया जाए.

Matthew 15:1

5 किंतु तुम कहते हो, 'जो कोई अपने माता-पिता से कहता है,
"आपको मुझसे जो कुछ प्राप्त होना था, वह सब अब परमेश्वर
को भेंट किया जा चुका है,"

6 उसे माता-पिता का सम्मान करना आवश्यक नहीं.' ऐसा
करने के द्वारा अपनी ही परंपराओं को पूरा करने की फिराक
में तुम परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ते हो.

7 अरे पाखंडियों! भविष्यवक्ता यशायाह की यह भविष्यवाणी
तुम्हारे विषय में ठीक ही है:

8 "ये लोग मात्र अपने होंठों से मेरा सम्मान करते हैं, किंतु
उनके हृदय मुझसे बहुत दूर हैं.

9 व्यर्थ में वे मेरी वंदना करते हैं. उनकी शिक्षा सिर्फ मनुष्यों
द्वारा बनाए हुए नियम हैं."

10 तब येशु ने भीड़ को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, "सुनो
और समझो:

11 वह, जो मनुष्य के मुख में प्रवेश करता है, मनुष्य को अशुद्ध
नहीं करता, परंतु उसे अशुद्ध वह करता है, जो उसके मुख से
निकलता है."

12 तब येशु के शिष्यों ने उनके पास आ उनसे प्रश्न किया, "क्या
आप जानते हैं कि आपके इस वचन से फ़रीसी अपमानित हो
रहे हैं?"

13 येशु ने उनसे उत्तर में कहा, "ऐसा हर एक पौधा, जिसे मेरे
पिता ने नहीं रोपा है, उखाड़ दिया जाएगा.

14 उनसे दूर ही रहो. वे तो अंधे मार्गदर्शक हैं. यदि अंधा ही
अंधे का मार्गदर्शन करेगा, तो दोनों ही गड्ढे में गिरेंगे!"

15 पेतरॉस ने येशु से विनती की, "प्रभु हमें इसका अर्थ
समझाइए."

16 येशु ने कहा, "क्या तुम अब तक समझ नहीं पाए?

17 क्या तुम्हें यह समझ नहीं आया कि जो कुछ मुख में प्रवेश
करता है, वह पेट में जाकर शरीर से बाहर निकल जाता है?

18 किंतु जो कुछ मुख से निकलता है, उसका स्रोत होता है
मनुष्य का हृदय. वही सब है जो मनुष्य को अशुद्ध करता है,

19 क्योंकि हृदय से ही बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार, वेश्यागामी,
चोरियां, झूठी गवाही तथा निंदा उपजा करती हैं.

20 ये ही मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, किंतु हाथ धोए बिना
भोजन करने से कोई व्यक्ति अशुद्ध नहीं होता."

21 तब येशु वहां से निकलकर सोर और सीदोन प्रदेश में
एकांतवास करने लगे.

22 वहां एक कनानवासी स्त्री आई और पुकार-पुकारकर
कहने लगी, "प्रभु! मुझ पर दया कीजिए. दावीद की संतान!
मेरी पुत्री में एक क्रूर दुष्टात्मा समाया हुआ है और वह बहुत
पीड़ित है."

23 किंतु येशु ने उसकी ओर लेश मात्र भी ध्यान नहीं दिया.
शिष्य आकर उनसे विनती करने लगे, "प्रभु! उसे विदा कर
दीजिए. वह चिल्लाती हुई हमारे पीछे लगी है."

24 येशु ने उत्तर दिया, "मुझे मात्र इस्राएल वंश के खोई हुई भेड़ों
के पास ही भेजा गया है."

25 किंतु उस स्त्री ने येशु के पास आ झुकते हुए उनसे विनती
की, "प्रभु! मेरी सहायता कीजिए!"

26 येशु ने उसे उत्तर दिया, "बालकों को परोसा भोजन उनसे
लेकर कुत्तों को देना सही नहीं!"

27 उस स्त्री ने उत्तर दिया, "सच है, प्रभु, किंतु यह भी तो सच
है कि स्वामी की मेज़ से गिर जाते टुकड़ों से कुत्ते अपना पेट
भर लेते हैं."

28 येशु कह उठे, “सराहनीय है तुम्हारा विश्वास! वैसा ही हो,
जैसा तुम चाहती हो.” उसी क्षण उसकी पुत्री स्वस्थ हो गई.

29 वहां से येशु गलील झील के तट से होते हुए पर्वत पर चले
गए और वहां बैठ गए.

30 एक बड़ी भीड़ उनके पास आ गयी. जिनमें लंगड़े, अपंग,
अंधे, गूंगे और अन्य रोगी थे. लोगों ने इन्हें येशु के चरणों में
लिटा दिया और येशु ने उन्हें स्वस्थ कर दिया.

31 गूंगों को बोलते, अपंगों को स्वस्थ होते, लंगड़ों को चलते
तथा अंधों को देखते देख भीड़ चकित हो इस्राएल के परमेश्वर
का गुणगान करने लगी.

32 येशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाकर कहा, “मुझे इन
लोगों से सहानुभूति है क्योंकि ये मेरे साथ तीन दिन से हैं और
इनके पास अब खाने को कुछ नहीं है. मैं इन्हें भूखा ही विदा
करना नहीं चाहता—कहीं ये मार्ग में ही मूर्च्छित न हो जाएं.”

33 शिष्यों ने कहा, “इस निर्जन स्थान में इस बड़ी भीड़ की तृप्ति
के लिए भोजन का प्रबंध कैसे होगा?”

34 येशु ने उनसे प्रश्न किया, “कितनी रोटियां हैं तुम्हारे पास?”
“सात, और कुछ छोटी मछलियां,” उन्होंने उत्तर दिया.

35 येशु ने भीड़ को भूमि पर बैठ जाने का निर्देश दिया

36 और स्वयं उन्होंने सातों रोटियां और मछलियां लेकर उनके
लिए परमेश्वर के प्रति आभार प्रकट करने के बाद उन्हें तोड़ा
और शिष्यों को देते गए तथा शिष्य भीड़ को.

37 सभी ने खाया और तृप्त हुए और शिष्यों ने तोड़ी गई रोटियों
के शेष टुकड़ों को इकट्ठा कर सात बड़े टोकरे भर लिए.

38 वहां जितनों ने भोजन किया था उनमें स्त्रियों और बालकों
के अतिरिक्त पुरुषों ही की संख्या कोई चार हज़ार थी.

39 भीड़ को विदा कर येशु नाव में सवार होकर मगादान क्षेत्र
में आए.

Matthew 16:1

1 तब फ़रीसी और सदूकी येशु के पास आए और उनको
परखने के लिए उन्हें स्वर्ग से कोई अद्भुत चिह्न दिखाने को
कहा.

2 येशु ने उनसे कहा, “सायंकाल होने पर तुम कहते हो कि
मौसम अनुकूल रहेगा क्योंकि आकाश में लालिमा है.

3 इसी प्रकार प्रातःकाल तुम कहते हो कि आज आंधी आएगी
क्योंकि आकाश धूमिल है और आकाश में लालिमा है. तुम
आकाश के स्वरूप को तो पहचान लेते हो किंतु वर्तमान समय
के चिह्नों को नहीं!

4 व्यभिचारी और परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन पीढ़ी चिह्न
खोजती है किंतु इसे योनाह के चिह्न के अतिरिक्त और कोई
चिह्न नहीं दिया जाएगा.” और येशु उन्हें वहीं छोड़कर चले गए.

5 झील की दूसरी ओर पहुंचने पर शिष्यों ने पाया कि वे अपने
साथ भोजन रखना भूल गए थे.

6 उसी समय येशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, “फ़रीसियों
और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना.”

7 इस पर शिष्य आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “क्या प्रभु
ने यह इसलिये कहा है कि हम भोजन साथ लाना भूल गए?”

8 येशु उनकी स्थिति से अवगत थे, इसलिये उन्होंने शिष्यों से
कहा, “अरे अल्पविश्वासियो! क्यों इस विवाद में उलझे हुए हो
कि तुम्हारे पास भोजन नहीं है?

9 क्या तुम्हें अब भी समझ नहीं आया? क्या तुम्हें पांच हज़ार के
लिए पांच रोटियां याद नहीं? तुमने वहां शेष रोटियों से भरे
कितने टोकरे उठाए थे?

10 या चार हज़ार के लिए वे सात रोटियां, तुमने वहां शेष रोटियों
से भरे कितने टोकरे उठाए थे?

Matthew 17:1

11 भला कैसे यह तुम्हारी समझ से परे है कि यहां मैंने भोजन
का वर्णन नहीं किया है? परंतु यह कि मैंने तुम्हें फ़रीसियों और
सदूकियों के खमीर से सावधान किया है."

12 तब उन्हें यह विषय समझ में आया कि येशु रोटी के खमीर
का नहीं परंतु फ़रीसियों और सदूकियों की गलत शिक्षा का
वर्णन कर रहे थे.

13 जब येशु कयसरिया फ़िलिप्पी क्षेत्र में पहुंचे, उन्होंने अपने
शिष्यों के सामने यह प्रश्न रखा: "लोगों के मत में मनुष्य के पुत्र
कौन है?"

14 शिष्यों ने उत्तर दिया, "कुछ के मतानुसार बपतिस्मा
देनेवाला योहन, कुछ अन्य के अनुसार एलियाह और कुछ के
अनुसार येरेमियाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक."

15 तब येशु ने उनसे प्रश्न किया, "किंतु तुम्हारे मत में मैं कौन
हूं?"

16 शिमओन पेतरॉस ने उत्तर दिया, "आप ही मसीह हैं—
जीवित परमेश्वर के पुत्र."

17 इस पर येशु ने उनसे कहा, "योनाह के पुत्र शिमओन, धन्य
हो तुम! तुम पर इस सच का प्रकाशन कोई मनुष्य का काम
नहीं परंतु मेरे पिता का है, जो स्वर्ग में हैं.

18 मैं तुम पर एक और सच प्रकट कर रहा हूं: तुम पेतरॉस हो.
अपनी कलीसिया का निर्माण मैं इसी पत्थर पर करूंगा.
अधोलोक के फ़ाटक इस पर अधिकार न कर सकेंगे.

19 तुम्हें मैं स्वर्ग-राज्य की कुंजियां सौंपूंगा. जो कुछ पृथ्वी पर
तुम्हारे द्वारा इकट्ठा किया जाएगा, वह स्वर्ग में भी इकट्ठा होगा
और जो कुछ तुम्हारे द्वारा पृथ्वी पर खुलेगा, वह स्वर्ग में भी
खुलेगा."

20 इसके बाद येशु ने शिष्यों को सावधान किया कि वे किसी
पर भी यह प्रकट न करें कि वही मसीह हैं.

21 इस समय से येशु ने शिष्यों पर यह स्पष्ट करना प्रारंभ कर
दिया कि उनका येरूशलेम नगर जाना, पुरनियों, प्रधान
पुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा उन्हें यातना दिया जाना, मार
डाला जाना तथा तीसरे दिन मरे हुओं में से जीवित किया जाना
अवश्य है.

22 यह सुन पेतरॉस येशु को अलग ले गए और उन्हें झिड़की
देते हुए कहने लगे, "परमेश्वर ऐसा न करें, प्रभु! आपके साथ
ऐसा कभी न होगा."

23 किंतु येशु पेतरॉस से उन्मुख हो बोले, "दूर हो जा मेरी दृष्टि
से, शैतान! तू मेरे लिए बाधा है! तेरा मन परमेश्वर संबंधित
विषयों में नहीं परंतु मनुष्य संबंधी विषयों में है."

24 इसके बाद येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जो कोई मेरे पीछे
आना चाहे, वह अपना स्वयं (अहम भाव) को त्याग कर अपना
क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले.

25 जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता है, वह उसे गंवा
देगा तथा जो कोई मेरे लिए अपने प्राणों की हानि उठाता है,
उसे सुरक्षित पाएगा.

26 भला इसका क्या लाभ कि कोई व्यक्ति पूरा संसार तो प्राप्त
करे किंतु अपना प्राण खो दे? या किस वस्तु से मनुष्य अपने
प्राण का अदला-बदली कर सकता है?

27 मनुष्य का पुत्र अपने पिता की महिमा में अपने स्वर्गदूतों के
साथ आएगा, तब वह हर एक मनुष्य को उसके कामों के
अनुसार प्रतिफल देगा.

28 "सच तो यह है कि यहां कुछ हैं, जो मृत्यु का स्वाद तब तक
नहीं चखेंगे, जब तक वे मनुष्य के पुत्र का उसके राज्य में प्रवेश
न देख लें."

Matthew 17:1

1 इस घटना के छः दिन बाद येशु पेतरॉस, याकोब और उनके
भाई योहन को अन्यों से अलग एक ऊंचे पर्वत पर ले गए.

2 वहां उन्हीं के सामने येशु का रूपान्तरण हो गया. उनका
चेहरा सूर्य के समान अत्यंत चमकीला हो उठा तथा उनके
वस्त्र प्रकाश के समान उज्जवल हो उठे.

3 उसी समय उन्हें मोशेह तथा एलियाह येशु से बातें करते हुए
दिखाई दिए.

4 यह देख पेतरॉस येशु से बोल उठे, “प्रभु! हमारा यहां होना
कैसे आनंद का विषय है! यदि आप कहें तो मैं यहां तीन मंडप
बनाऊं—एक आपके लिए, एक मोशेह के लिए तथा एक
एलियाह के लिए.”

5 पेतरॉस अभी यह कह ही रहे थे कि एक उजला बादल उन
पर छा गया और उसमें से एक शब्द सुनाई दिया, “यह मेरा
पुत्र है—मेरा प्रिय, जिसमें मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूं; इसकी
आज्ञा का पालन करो.”

6 यह सुन भय के कारण शिष्य भूमि पर मुख के बल गिर पड़े.

7 येशु उनके पास गए, उन्हें स्पर्श किया और उनसे कहा,
“उठो! डरो मत!”

8 जब वे उठे, तब वहां उन्हें येशु के अलावा कोई दिखाई न
दिया.

9 जब वे पर्वत से उतर रहे थे येशु ने उन्हें कठोर आज्ञा दी,
“मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जीवित किए जाने तक इस
घटना का वर्णन किसी से न करना.”

10 शिष्यों ने येशु से प्रश्न किया, “शास्त्री ऐसा क्यों कहते हैं कि
पहले एलियाह का आना अवश्य है?”

11 येशु ने उत्तर दिया, “एलियाह आएंगे और सब कुछ सुधारेंगे

12 किंतु सच तो यह है कि एलियाह पहले ही आ चुके है, और
उन्होंने उन्हें न पहचाना. उन्होंने एलियाह के साथ मनमाना
व्यवहार किया. ठीक इसी प्रकार वे मनुष्य के पुत्र को भी
यातना देंगे.”

13 इस पर शिष्य समझ गए कि येशु बपतिस्मा देनेवाले योहन
का वर्णन कर रहे हैं.

14 जब वे भीड़ के पास आए, एक व्यक्ति येशु के सामने घुटने
टेककर उनसे विनती करने लगा,

15 “प्रभु! मेरे पुत्र पर कृपा कीजिए. उसे दौरे पड़ते हैं और वह
बहुत कष्ट में है. वह कभी आग में जा गिरता है, तो कभी जल
में.

16 मैं उसे आपके शिष्यों के पास लाया था किंतु वे उसे स्वस्थ
न कर सके.”

17 येशु कह उठे, “अरे ओ अविश्वासी और बिगड़ी हुई पीढ़ी!”
प्रभु येशु ने कहा, “मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, कब तक
धीरज रखूंगा? यहां लाओ अपने पुत्र को!”

18 येशु ने उस दुष्टात्मा को फटकारा और वह उस बालक में
से निकल गया और बालक उसी क्षण स्वस्थ हो गया.

19 जब येशु अकेले थे तब शिष्य उनके पास आए और उनसे
पूछने लगे, “प्रभु! हम उस दुष्टात्मा को क्यों नहीं निकाल
सके?”

20 “अपने विश्वास की कमी के कारण,” येशु ने उत्तर दिया,
“एक सच मैं तुम पर प्रकट कर रहा हूं: यदि तुममें राई के एक
बीज के तुल्य भी विश्वास है और तुम इस पर्वत को आज्ञा दो,
‘यहां से हट जा!’ तो यह पर्वत यहां से हट जाएगा—असंभव
कुछ भी न होगा.

21 [यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के बाहर नहीं
निकाली जा सकती.]”

22 जब वे गलील प्रदेश में इकट्ठा हो रहे थे, येशु ने उनसे कहा,
“अब मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों में पकड़वा दिया जाएगा.

23 वे उसकी हत्या कर देंगे. तीसरे दिन वह मरे हुओं में से
जीवित किया जाएगा.” शिष्य अत्यंत दुःखी हो गए.

24 जब वे कफ़रनहूम नगर पहुंचे, तब उन्होंने, जो मंदिर के
लिए निर्धारित कर इकट्ठा करते थे, पेतरॉस के पास आकर
पूछा, “क्या तुम्हारे गुरु निर्धारित कर नहीं देते?”

25 “हां, वह देते हैं,” पेतरॉस ने उन्हें उत्तर दिया. घर में प्रवेश
करते हुए येशु ने ही पेतरॉस से प्रश्न किया, “शिमओन, मुझे यह

बताओ, राजा किससे कर तथा शुल्क लेते हैं—अपनी संतान से या प्रजा से?"

26 "प्रजा से," पेतरॉस ने उत्तर दिया. "अर्थात् संतान कर मुक्त है." येशु ने पेतरॉस से कहा;

27 "फिर भी, ऐसा न हो कि वे हमसे क्रुद्ध हो जाएं, झील में जाओ, और अपना कांटा फेंक, जो पहले मछली पकड़ में आए उसका मुख खोलना. वहां तुम्हें एक सिक्का प्राप्त होगा. वही सिक्का उन्हें अपनी तथा मेरी ओर से कर-स्वरूप दे देना."

Matthew 18:1

1 तब शिष्यों ने येशु के पास आकर उनसे पूछा, "स्वर्ग-राज्य में सबसे बड़ा कौन है?"

2 येशु ने एक बालक को पास बुलाकर उसे उनके सामने खड़ा करते हुए कहा,

3 मैं तुम्हें एक सच्चाई बताना चाहता हूं: "जब तक तुम बदलकर बालक के समान न हो जाओ, तुम्हारा प्रवेश स्वर्ग-राज्य में किसी प्रकार न होगा.

4 जो कोई स्वयं को इस बालक के समान विनम्र कर लेगा, वही स्वर्ग-राज्य में सबसे बड़ा है;

5 और जो कोई ऐसे बालक को मेरे नाम में ग्रहण करता है, मुझे ग्रहण करता है.

6 "इसके विपरीत जो कोई इन बालकों के लिए, जो मुझमें विश्वास करते हैं, ठोकर का कारण बनता है, उसके लिए सही यही होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाकर उसे समुद्र की गहराई में डुबो दिया जाए.

7 ठोकर के कारकों के लिए धिक्कार है संसार पर! ठोकरों का होना तो निश्चित है किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर जिसके कारण ठोकर लगती है!

8 यदि तुम्हारा हाथ या तुम्हारा पांव तुम्हारे लिए ठोकर लगने का कारण बनता है तो उसे काटकर फेंक दो. तुम्हारे लिए भला यही होगा कि तुम एक अपंग या लंगड़े के रूप में जीवन में प्रवेश करो—बजाय इसके कि तुम दोनों हाथ और दोनों पांवों के साथ अनंत आग में झोंके जाओ.

9 यदि तुम्हारी आंख के कारण तुम्हें ठोकर लगे तो उसे निकाल फेंको. तुम्हारे लिए भला यही होगा कि तुम मात्र एक आंख के साथ जीवन में प्रवेश करो बजाय इसके कि तुम्हारी दोनों आंख हों और तुम नर्क की आग में फेंके जाओ.

10 "ध्यान रखो कि तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ दृष्टि से न देखो. मैं तुम्हें बताता हूं कि स्वर्ग में इनके स्वर्गदूत इनके लिए मेरे पिता के सामने विनती करने के उद्देश्य से हमेशा उपस्थित रहते हैं. [

11 मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने के उद्देश्य से ही आया है.]

12 "क्या विचार है तुम्हारा? यदि किसी व्यक्ति के पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक भटक जाए तो क्या वह निन्यानवे को वहीं पहाड़ियों पर छोड़ उसको खोजने न निकलेगा, जो भटक गई है?

13 तब सच तो यह है कि यदि वह उसे खोज लेता है, तो वह उन निन्यानवे की बजाय, जो भटकी नहीं थी, उस एक के लिए कहीं अधिक उल्लसित होता है, जो भटक गई थी.

14 इसलिये तुम्हारे स्वर्गीय पिता नहीं चाहते कि इन छोटों में से एक भी छोटे का नाश हो.

15 "यदि कोई सहविश्वासी तुम्हारे विरुद्ध कोई अपराध करे तो जाकर उस पर उसका दोष प्रकट कर दो, किंतु यह मात्र तुम दोनों के मध्य ही हो. यदि वह तुम्हारी सुन ले तो तुमने उसे पुनः प्राप्त कर लिया.

16 किंतु यदि वह तुम्हारी न माने तब अपने साथ एक या दो को उसके पास ले जाओ कि एक बात की पुष्टि के लिए दो या तीन गवाहों की ज़रूरत होती है.

Matthew 19:1

17 यदि वह उनका भी इनकार करे तब कलीसिया पर यह सच
प्रकट कर दिया जाए. यदि वह कलीसिया की भी न माने तब
उसे गैर-यहूदी और समाज से बहिष्कृत व्यक्ति समझो.

18 “तुम पर मैं यह सच प्रकाशित कर रहा हूं कि जो कुछ पृथ्वी
पर तुम्हारे द्वारा इकट्ठा किया जाएगा, वह स्वर्ग में भी इकट्ठा
होगा और जो कुछ तुम्हारे द्वारा पृथ्वी पर खुलेगा, वह स्वर्ग में
भी खोला जाएगा.

19 “मैं तुम्हें दोबारा याद दिला रहा हूं: यदि तुममें से दो व्यक्ति
पृथ्वी पर किसी विषय पर एक मत होकर विनती करें, वह मेरे
पिता के द्वारा, जो स्वर्ग में हैं, पूरा किया जाएगा.

20 यह इसलिये कि जहां दो या तीन व्यक्ति मेरे नाम में इकट्ठा
होते हैं, वहां मैं उनके साथ हूं.”

21 तब पेतरॉस ने येशु के पास आकर उनसे प्रश्न किया, “प्रभु!
कितनी बार मेरा भाई मेरे विरुद्ध अपराध करे और मैं उसे
क्षमा करूं—सात बार?”

22 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं तो तुमसे यह तो नहीं कहूंगा
सात बार तक परंतु सत्तर के सात गुणा तक.

23 “इसलिये स्वर्ग-राज्य की तुलना उस राजा से की जा सकती
है, जिसने अपने दासों से हिसाब-किताब लेना चाहा.

24 जब उसने प्रारंभ किया तब उसके सामने वह दास प्रस्तुत
किया गया, जो उसके लाखों तालंतों का कर्ज़दार था, किंतु

25 यह मालूम होने पर कि उसके पास कर्ज़ चुकाने का कोई
साधन नहीं है, स्वामी ने आज्ञा दी कि उसे उसकी पत्नी, बालकों
तथा सारे संपत्ति सहित बेच दिया जाए कि कर्ज़ चुकाया जा
सके.

26 “इस पर वह दास अपने स्वामी के सामने भूमि पर दंडवत
हो उससे विनती करने लगा, ‘कृपया थोड़ा धीरज रखें, मैं सब
कुछ चुका दूंगा.’

27 उसके स्वामी ने दया से भरकर उसे मुक्त करके उसका
सारा कर्ज़ क्षमा कर दिया.

28 “उस मुक्त हुए दास ने बाहर जाते ही उस दास को जा
पकड़ा जिसने उससे सौ दीनार कर्ज़ लिए थे. उसने उसे
पकड़कर उसका गला घोंटते हुए कहा, ‘मुझसे जो कर्ज़ लिया
है, उसे लौटा दे!’

29 “वह दास इस दास के पांवों पर गिर पड़ा और विनती करने
लगा, ‘थोड़ा धीरज रखो. मैं सब लौटा दूंगा.’

30 “किंतु उस दास ने उसकी विनती पर ज़रा भी ध्यान न दिया
और उसे ले जाकर कारागार में डाल दिया कि जब तक वह
कर्ज़ न लौटाए, वहीं रहे.

31 इसलिये जब अन्य दासों ने यह सब देखा, वे अत्यंत उदास
हो गए और आकर स्वामी को इसकी सूचना दी.

32 “तब स्वामी ने उस दास को बुलवाकर उससे कहा, ‘अरे
दुष्ट! मैंने तो तेरा सारा ही कर्ज़ क्षमा कर दिया क्योंकि तूने
मुझसे इसके लिए विनती की थी.

33 क्या यह सही न था कि तू भी अपने साथी पर कृपा करता
जिस प्रकार मैंने तुझ पर कृपा की?’

34 क्रुद्ध स्वामी ने उस दास को यातना देने के लिए चुने हुए
अधिकारियों के हाथ में सौंप दिया कि जब तक वह सारा कर्ज़
चुका न दे, वहीं रहे.

35 “मेरे स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे साथ यही करेंगे यदि तुममें से
हर एक अपने भाई को हृदय से क्षमा नहीं करता.”

Matthew 19:1

1 अपना कथन समाप्त करने के बाद येशु गलील प्रदेश से
निकलकर यहूदिया प्रदेश के उस क्षेत्र में आ गए, जो यरदन
नदी के पार है.

2 वहां एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली और येशु ने रोगियों
को स्वस्थ किया.

Matthew 19:1

3 कुछ फ़रीसी येशु को परखने के उद्देश्य से उनके पास आए
तथा उनसे प्रश्न किया, "क्या पत्नी से तलाक के लिए पति द्वारा
प्रस्तुत कोई भी कारण वैध कहा जा सकता है?"

4 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुमने पढ़ा नहीं कि वह,
जिन्होंने उनकी सृष्टि की, उन्होंने प्रारंभ ही से उन्हें नर और
नारी बनाया

5 और कहा, 'इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर
अपनी पत्नी से मिला रहेगा तथा वे दोनों एक देह होंगे.'

6 परिणामस्वरूप अब वे दो नहीं परंतु एक शरीर हैं. इसलिये
जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने जोड़ा है, उन्हें कोई मनुष्य अलग न
करे."

7 यह सुन उन्होंने येशु से पूछा, "तो फिर मोशेह की व्यवस्था में
यह प्रबंध क्यों है कि तलाक पत्र देकर पत्नी को छोड़ दिया
जाए?"

8 येशु ने उन पर यह सच स्पष्ट किया, "तुम्हारे हृदय की
कठोरता के कारण ही मोशेह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी पत्नी से
तलाक की अनुमति दी थी. प्रारंभ ही से यह प्रबंध नहीं था.

9 तुमसे मेरा कहना है कि जो कोई व्यभिचार के अतिरिक्त
किसी अन्य कारण से अपनी पत्नी से तलाक कर लेता है और
अन्य स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है."

10 शिष्यों ने येशु से कहा, "यदि पति-पत्नी का संबंध ऐसा है तब
तो उत्तम यही होगा कि विवाह किया ही न जाए."

11 येशु ने इसके उत्तर में कहा, "यह स्थिति सब पुरुषों के लिए
स्वीकार नहीं हो सकती—अतिरिक्त उनके, जिन्हें परमेश्वर ने
ऐसा बनाया है,

12 कुछ नपुंसक हैं, जो माता के गर्भ से ही ऐसे जन्मे हैं; कुछ
हैं, जिन्हें मनुष्यों ने ऐसा बना दिया है तथा कुछ ने स्वर्ग-राज्य
के लिए स्वयं को ऐसा बना लिया है. जो इसे समझ सकता है,
समझ ले."

13 कुछ लोग बालकों को येशु के पास लाए कि येशु उन पर
हाथ रखकर उनके लिए प्रार्थना करें, मगर शिष्यों ने उन लोगों
को डांटा.

14 यह सुन येशु ने उनसे कहा, "बालकों को यहां आने दो, उन्हें
मेरे पास आने से मत रोको क्योंकि स्वर्ग-राज्य ऐसों का ही है."

15 यह कहते हुए येशु ने बालकों पर हाथ रखा, इसके बाद येशु
वहां से आगे चले गए.

16 एक व्यक्ति ने आकर येशु से प्रश्न किया, "गुरुवर, अनंत
काल का जीवन प्राप्त करने के लिए मैं कौन सा अच्छा काम
करूं?" येशु ने उसे उत्तर दिया.

17 "तुम मुझसे क्यों पूछते हो कि अच्छा क्या है? उत्तम तो मात्र
एक ही हैं. परंतु यदि तुम जीवन में प्रवेश की कामना करते ही
हो तो आदेशों का पालन करो."

18 "कौन से?" उसने येशु से प्रश्न किया. उन्होंने उसे उत्तर दिया,
"हत्या मत करो; व्यभिचार मत करो; चोरी मत करो; झूठी
गवाही मत दो;

19 अपने माता-पिता का सम्मान करो तथा तुम अपने पड़ोसी
से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो."

20 उस युवक ने येशु को उत्तर दिया, "मैं तो इनका पालन
करता रहा हूं; फिर अब भी क्या कमी है मुझमें?"

21 येशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि तुम सिद्ध बनना चाहते हो तो
अपनी संपत्ति को बेचकर उस राशि को निर्धनों में बांट दो और
आओ, मेरे पीछे हो लो—धन तुम्हें स्वर्ग में प्राप्त होगा."

22 यह सुनकर वह युवक दुःखी हो लौट गया क्योंकि वह बहुत
धन का स्वामी था.

23 अपने शिष्यों से उन्मुख हो येशु ने कहा, "मैं तुम पर एक सच
प्रकट कर रहा हूं; किसी धनी व्यक्ति का स्वर्ग-राज्य में प्रवेश
कठिन है.

24 वास्तव में परमेश्वर के राज्य में एक धनी के प्रवेश करने से
एक ऊंट का सुई के छेद में से पार हो जाना सहज है."

25 यह सुनकर शिष्य चकित हो येशु से पूछने लगे, "तो उद्धार
कौन पाएगा?"

26 येशु ने उनकी ओर एकटक देखते हुए उन्हें उत्तर दिया,
"मनुष्य के लिए तो यह असंभव है किंतु परमेश्वर के लिए सब
कुछ संभव है."

27 इस पर पेतरॉस येशु से बोले, "देखिए, हम तो सब कुछ त्याग
कर आपके पीछे हो लिए हैं. हमारा पुरस्कार क्या होगा?"

28 येशु ने सभी शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, "यह सच
है कि उस समय, जब मनुष्य का पुत्र नये युग में अपने
वैभवशाली सिंहासन पर विराजमान होगा, तुम भी, जो मेरे चेले
बन गए हो, इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करते हुए बारह
सिंहासनों पर विराजमान होगे.

29 हर एक, जिसने मेरे लिए घर, भाई-बहन, माता-पिता, संतान
या खेतों का त्याग किया है, इनसे कई गुणा प्राप्त करेगा और
वह अनंत काल के जीवन का वारिस होगा

30 किंतु अनेक, जो पहले हैं, वे अंतिम होंगे तथा जो अंतिम हैं,
वे पहले.

Matthew 20:1

1 "स्वर्ग-राज्य दाख की बारी के उस स्वामी के समान है, जो
सबेरे अपने उद्यान के लिए मज़दूर लाने निकला.

2 जब वह मज़दूरों से एक दीनार रोज़ की मज़दूरी पर सहमत
हो गया, उसने उन्हें दाख की बारी में काम करने भेज दिया.

3 "सुबह नौ बजे जब वह दोबारा नगर चौक से जा रहा था,
उसने वहां कुछ मज़दूरों को बेकार खड़े पाया.

4 उसने उनसे कहा, 'तुम भी जाकर मेरे दाख की बारी में काम
करो. जो कुछ सही होगा, मैं तुम्हें दूंगा.'

5 तब वे चले गए. "वह दोबारा बारह बजे और तीन बजे नगर
चौक में गया और ऐसा ही किया.

6 लगभग शाम पांच बजे वह दोबारा वहां गया और कुछ अन्यों
को वहां खड़े पाया. उसने उनसे प्रश्न किया, 'तुम सारे दिन यहां
बेकार क्यों खड़े रहे?'

7 "उन्होंने उसे उत्तर दिया, 'इसलिये कि किसी ने हमें काम
नहीं दिया.' "उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे दाख की बारी में
चले जाओ.'

8 "सांझ होने पर दाख की बारी के स्वामी ने प्रबंधक को आज्ञा
दी, 'अंत में आए मज़दूरों से प्रारंभ करते हुए सबसे पहले काम
पर लगाए गए मज़दूरों को उनकी मज़दूरी दे दो.'

9 "उन मज़दूरों को, जो ग्यारहवें घंटे काम पर लगाए गए थे,
एक-एक दीनार मिला.

10 इस प्रकार सबसे पहले आए मज़दूरों ने सोचा कि उन्हें
अधिक मज़दूरी प्राप्त होगी किंतु उन्हें भी एक-एक दीनार ही
मिला.

11 जब उन्होंने इसे प्राप्त किया तब वे भूस्वामी के खिलाफ
बड़बड़ाने लगे,

12 'अंत में आए इन मज़दूरों ने मात्र एक ही घंटा काम किया है
और आपने उन्हें हमारे बराबर ला दिया, जबकि हमने दिन की
तेज धूप में कठोर परिश्रम किया.'

13 "बारी के मालिक ने उन्हें उत्तर दिया, 'मित्र मैं तुम्हारे साथ
कोई अन्याय नहीं कर रहा. क्या हम एक दीनार मज़दूरी पर
सहमत न हुए थे?

14 जो कुछ तुम्हारा है उसे स्वीकार कर लो और जाओ. मेरी
इच्छा यही है कि अंत में काम पर आए मज़दूर को उतना ही
दूं जितना तुम्हें.

15 क्या यह न्याय संगत नहीं कि मैं अपनी संपत्ति के साथ वह
करूं जो मैं चाहता हूं? क्या मेरा उदार होना तुम्हारी आंखों में
खटक रहा है?'

16 “इसलिये वे, जो अंतिम हैं पहले होंगे तथा जो पहले हैं, वे अंतिम.”

17 जब येशु येरूशलेम नगर जाने पर थे, उन्होंने मात्र अपने बारह शिष्यों को अपने साथ लिया. मार्ग में येशु ने उनसे कहा,

18 “यह समझ लो कि हम येरूशलेम नगर जा रहे हैं, जहां मनुष्य के पुत्र को पकड़वाया जाएगा, प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों के हाथों में सौंप दिया जाएगा और वे उसे मृत्यु दंड के योग्य घोषित करेंगे.

19 इसके लिए मनुष्य के पुत्र को गैर-यहूदियों के हाथों में सौंप दिया जाएगा कि वे उसका ठट्ठा करें, उसे कोड़े लगवाएं और उसे क्रूस पर चढ़ाएं किंतु वह तीसरे दिन मरे हुओं में से जीवित किया जाएगा.”

20 ज़ेबेदियॉस की पत्नी अपने पुत्रों के साथ येशु के पास आईं तथा येशु के सामने झुककर उनसे एक विनती करनी चाही.

21 येशु ने उनसे पूछा, “आप क्या चाहती हैं?” उन्होंने येशु को उत्तर दिया, “यह आज्ञा दे दीजिए कि आपके राज्य में मेरे ये दोनों पुत्र, एक आपके दायें तथा दूसरा आपके बायें बैठे.”

22 येशु ने दोनों भाइयों से उन्मुख हो कहा, “तुम समझ नहीं रहे कि तुम क्या मांग रहे हो! क्या तुममें उस प्याले को पीने की क्षमता है, जिसे मैं पीने पर हूं?” “हां, प्रभु,” उन्होंने उत्तर दिया.

23 इस पर येशु ने उनसे कहा, “सचमुच मेरा प्याला तो तुम पियोगे, किंतु किसी को अपने दायें या बायें बैठाना मेरा अधिकार नहीं है. यह उनके लिए है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा तैयार किया गया है.”

24 यह सुन शेष दस शिष्य इन दोनों भाइयों पर नाराज़ हो गए;

25 किंतु येशु ने उन सभी को अपने पास बुलाकर उनसे कहा, “वे, जो इस संसार में शासक हैं, अपने लोगों पर प्रभुता करते हैं तथा उनके बड़े अधिकारी उन पर अपना अधिकार दिखाया करते हैं.

26 तुममें ऐसा नहीं है, तुममें जो महान बनने की इच्छा रखता है, वह तुम्हारा सेवक बने,

27 तथा तुममें जो कोई श्रेष्ठ होना चाहता है, वह तुम्हारा दास हो.

28 ठीक जैसे मनुष्य का पुत्र यहां इसलिये नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परंतु इसलिये कि सेवा करे, और अनेकों की छुड़ौती के लिए अपना जीवन बलिदान कर दे.”

29 जब वे येरीख़ो नगर से बाहर निकल ही रहे थे, एक बड़ी भीड़ उनके साथ हो ली.

30 वहां मार्ग के किनारे दो अंधे व्यक्ति बैठे हुए थे. जब उन्हें यह अहसास हुआ कि येशु वहां से जा रहे हैं, वे पुकार-पुकारकर विनती करने लगे, “प्रभु! दावीद की संतान! हम पर कृपा कीजिए!”

31 भीड़ ने उन्हें झिड़कते हुए शांत रहने की आज्ञा दी, किंतु वे और भी अधिक ऊंचे शब्द में पुकारने लगे, “प्रभु! दावीद की संतान! हम पर कृपा कीजिए!”

32 येशु रुक गए, उन्हें पास बुलाया और उनसे प्रश्न किया, “क्या चाहते हो तुम? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?”

33 उन्होंने उत्तर दिया, “प्रभु! हम चाहते हैं कि हम देखने लगें.”

34 तरस खाकर येशु ने उनकी आंखें छुई. तुरंत ही वे देखने लगे और वे येशु के पीछे हो लिए.

Matthew 21:1

1 जब वे येरूशलेम नगर के पास पहुंचे और ज़ैतून पर्वत पर बैथफ़गे नामक स्थान पर आए, येशु ने दो चेलों को इस आज्ञा के साथ आगे भेजा,

2 “सामने गांव में जाओ. वहां पहुंचते ही तुम्हें एक गधी बंधी हुई दिखाई देगी. उसके साथ उसका बच्चा भी होगा. उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ.

3 यदि कोई तुमसे इस विषय में प्रश्न करे तो तुम उसे यह उत्तर
देना, 'प्रभु को इनकी ज़रूरत है.' वह व्यक्ति तुम्हें आज्ञा दे
देगा."

4 यह घटना भविष्यवक्ता द्वारा की गई इस भविष्यवाणी की
पूर्ति थी:

5 ज़ियोन की बेटी को यह सूचना दो: तुम्हारे पास तुम्हारा राजा
आ रहा है; वह नम्र है और वह गधे पर बैठा हुआ है, हां, गधे
के बच्चे पर, बोझ ढोनेवाले के बच्चे पर.

6 शिष्यों ने येशु की आज्ञा का पूरी तरह पालन किया

7 और वे गधी और उसके बच्चे को ले आए, उन पर अपने
बाहरी कपड़े बिछा दिए और येशु उन कपड़ो पर बैठ गए.

8 भीड़ में से अधिकांश ने मार्ग पर अपने बाहरी कपड़े बिछा
दिए. कुछ अन्यों ने पेड़ों की टहनियां काटकर मार्ग पर बिछा
दीं.

9 येशु के आगे-आगे जाती हुई तथा पीछे-पीछे आती हुई भीड़
ये नारे लगा रही थी "दावीद के पुत्र की होशान्ना!" "धन्य है, वह
जो प्रभु के नाम में आ रहे हैं." "सबसे ऊंचे स्थान में होशान्ना!"

10 जब येशु ने येरूशलेम नगर में प्रवेश किया, पूरे नगर में
हलचल मच गई. उनके आश्चर्य का विषय था: "कौन है यह?"

11 भीड़ उन्हें उत्तर दे रही थी, "यही तो हैं वह भविष्यद्वक्ता—
गलील के नाज़रेथ के येशु."

12 येशु ने मंदिर में प्रवेश किया और उन सभी को मंदिर से
बाहर निकाल दिया, जो वहां लेनदेन कर रहे थे. साथ ही येशु
ने साहूकारों की चौकियां उलट दीं और कबूतर बेचने वालों के
आसनों को पलट दिया.

13 येशु ने उन्हें फटकारते हुए कहा, "पवित्र शास्त्र का लेख है:
मेरा मंदिर प्रार्थना का घर कहलाएगा किंतु तुम इसे डाकुओं
की खोह बना रहे हो."

14 मंदिर में ही, येशु के पास अंधे और लंगड़े आए और येशु ने
उन्हें स्वस्थ किया.

15 जब प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों ने देखा कि येशु ने
अद्भुत काम किए हैं और बच्चे मंदिर में, "दावीद की संतान
की होशान्ना" के नारे लगा रहे हैं, तो वे अत्यंत गुस्सा हुए.

16 और येशु से बोले, "तुम सुन रहे हो न, ये बच्चे क्या नारे लगा
रहे हैं?" येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "हां, क्या आपने पवित्र शास्त्र
में कभी नहीं पढ़ा, बालकों और दूध पीते शिशुओं के मुख से
आपने अपने लिए अपार स्तुति का प्रबंध किया है?"

17 येशु उन्हें छोड़कर नगर के बाहर चले गए तथा आराम के
लिए बैथनियाह नामक गांव में ठहर गए.

18 भोर को जब वह नगर में लौटकर आ रहे थे, उन्हें भूख लगी.

19 मार्ग के किनारे एक अंजीर का पेड़ देखकर वह उसके पास
गए किंतु उन्हें उसमें पत्तियों के अलावा कुछ नहीं मिला. इस
पर येशु ने उस पेड़ को शाप दिया, "अब से तुझमें कभी कोई
फल नहीं लगेगा." तुरंत ही वह पेड़ मुरझा गया.

20 यह देख शिष्य हैरान रह गए. उन्होंने प्रश्न किया, "अंजीर का
यह पेड़ तुरंत ही कैसे मुरझा गया?"

21 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम इस सच्चाई को समझ लो:
यदि तुम्हें विश्वास हो—संदेह तनिक भी न हो—तो तुम न
केवल वह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया
परंतु तुम यदि इस पर्वत को भी आज्ञा दोगे, 'उखड़ जा और
समुद्र में जा गिर!' तो यह भी हो जाएगा.

22 प्रार्थना में विश्वास से तुम जो भी विनती करोगे, तुम उसे प्राप्त
करोगे."

23 येशु ने मंदिर में प्रवेश किया और जब वह वहां शिक्षा दे ही
रहे थे, प्रधान पुरोहित और पुरनिए उनके पास आए और
उनसे पूछा, "किस अधिकार से तुम ये सब कर रहे हो? कौन
है वह, जिसने तुम्हें इसका अधिकार दिया है?"

Matthew 21:1

24 येशु ने इसके उत्तर में कहा, "मैं भी आपसे एक प्रश्न करूंगा. यदि आप मुझे उसका उत्तर देंगे तो मैं भी आपके इस प्रश्न का उत्तर दूंगा कि मैं किस अधिकार से यह सब करता हूं:

25 योहन का बपतिस्मा किसकी ओर से था—स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?" इस पर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, "यदि हम कहते हैं, 'स्वर्ग की ओर से,' तो वह हमसे कहेगा, 'तब आपने योहन में विश्वास क्यों नहीं किया?'

26 किंतु यदि हम कहते हैं, 'मनुष्यों की ओर से,' तब हमें भीड़ से भय है; क्योंकि सभी योहन को भविष्यवक्ता मानते हैं."

27 उन्होंने आकर येशु से कहा, "आपके प्रश्न का उत्तर हमें मालूम नहीं." येशु ने भी उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी आपको नहीं बताऊंगा कि मैं किस अधिकार से ये सब करता हूं.

28 "इस विषय में क्या विचार है आपका? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे. उसने बड़े पुत्र से कहा, 'हे पुत्र, आज जाकर दाख की बारी का काम देख लेना.'

29 "उसने उत्तर दिया, 'नहीं जाऊंगा.' परंतु कुछ समय के बाद उसे पछतावा हुआ और वह दाख की बारी चला गया.

30 "पिता दूसरे पुत्र के पास गया और उससे भी यही कहा. उसने उत्तर दिया, 'जी हां, अवश्य.' किंतु वह गया नहीं.

31 "यह बताइए कि किस पुत्र ने अपने पिता की इच्छा पूरी की?" उन्होंने उत्तर दिया: "बड़े पुत्र ने." येशु ने उनसे कहा, "सच यह है कि समाज से निकाले लोग तथा वेश्याएं आप लोगों से पहले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर जाएंगे.

32 बपतिस्मा देनेवाले योहन आपको धर्म का मार्ग दिखाते हुए आए, किंतु आप लोगों ने उनका विश्वास ही न किया. किंतु समाज के बहिष्कृतों और वेश्याओं ने उनका विश्वास किया. यह सब देखने पर भी आपने उनमें विश्वास के लिए पश्चाताप न किया.

33 "एक और दृष्टांत सुनिए: एक गृहस्वामी था, जिसने एक दाख की बारी लगायी, चारदीवारी खड़ी की, रसकुंड बनाया तथा मचान भी. इसके बाद वह दाख की बारी किसानों को पट्टे पर देकर यात्रा पर चला गया.

34 जब उपज तैयार होने का समय आया, तब उसने किसानों के पास अपने दास भेजे कि वे उनसे उपज का पहले से तय किया हुआ भाग इकट्ठा करें.

35 "किसानों ने उसके दासों को पकड़ा, उनमें से एक की पिटाई की, एक की हत्या तथा एक का पथराव.

36 अब गृहस्वामी ने पहले से अधिक संख्या में दास भेजे. इन दासों के साथ भी किसानों ने वही सब किया.

37 इस पर यह सोचकर कि वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे, उस गृहस्वामी ने अपने पुत्र को किसानों के पास भेजा.

38 "किंतु जब किसानों ने पुत्र को देखा तो आपस में विचार किया, 'सुनो! यह तो वारिस है, चलो, इसकी हत्या कर दें और पूरी संपत्ति हड़प लें.'

39 इसलिये उन्होंने पुत्र को पकड़ा, उसे बारी के बाहर ले गए और उसकी हत्या कर दी.

40 "इसलिये यह बताइए, जब दाख की बारी का स्वामी वहां आएगा, इन किसानों का क्या करेगा?"

41 उन्होंने उत्तर दिया, "वह उन दुष्टों का सर्वनाश कर देगा तथा दाख की बारी ऐसे किसानों को पट्टे पर दे देगा, जो उसे सही समय पर उपज का भाग देंगे."

42 येशु ने उनसे कहा, "क्या आपने पवित्र शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा: " 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अनुपयोगी घोषित कर दिया था, वही कोने का मुख्य पत्थर बन गया. यह प्रभु की ओर से हुआ और यह हमारी दृष्टि में अनूठा है'?

43 "इसलिये मैं आप सब पर यह सत्य प्रकाशित कर रहा हूं: परमेश्वर का राज्य आपसे छीन लिया जाएगा तथा उस राष्ट्र को सौंप दिया जाएगा, जो उपयुक्त फल लाएगा.

44 वह, जो इस पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा किंतु जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा उसे कुचलकर चूर्ण बना देगा."

Matthew 22:1

45 प्रधान पुरोहित और फ़रीसी यह दृष्टांत सुनकर यह समझ
गए कि प्रभु येशु ने उन पर ही यह दृष्टांत कहा है.

46 इसलिये उन्होंने येशु को पकड़ने की कोशिश तो की, किंतु
उन्हें भीड़ का भय था, क्योंकि लोग येशु को भविष्यवक्ता
मानते थे.

Matthew 22:1

1 येशु फिर से उन्हें दृष्टान्तों में शिक्षा देने लगे. उन्होंने कहा,

2 "स्वर्ग-राज्य की तुलना एक राजा से की जा सकती है, जिसने
अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में एक भोज का आयोजन
किया.

3 राजा ने अपने सेवकों को आमंत्रित अतिथियों को बुला लाने
के लिए भेजा किंतु उन्होंने आना न चाहा.

4 "राजा ने अन्य सेवकों को यह कहकर भेजा, 'आमंत्रित
अतिथियों से कहो, "मैंने अपने भोज की सारी तैयारी कर ली
है. मोटे-ताजे पशुओं को काटे हैं, अच्छे व्यंजन बनाए जा चुके
हैं. सब कुछ तैयार है, भोज में पधारिए." '

5 "किंतु आमंत्रितों ने इस पर भी कोई ध्यान नहीं दिया परंतु वे
सब अपने कामों में लगे रहे—एक अपने खेत में, दूसरा अपने
व्यापार में;

6 शेष ने उन सेवकों को पकड़कर उनके साथ गलत व्यवहार
किया और फिर उनकी हत्या कर डाली.

7 गुस्से में आकर राजा ने वहां अपनी सेना भेज दी कि वह उन
हत्यारों का नाश करे और उनके नगर को भस्म कर दे.

8 "तब राजा ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, 'विवाह-भोज तो
तैयार है किंतु जिन्हें आमंत्रित किया गया था, वे इसके योग्य न
थे;

9 इसलिये अब तुम प्रधान चौकों पर चले जाओ और वहां तुम्हें
जितने भी व्यक्ति मिलें, उन्हें विवाह-भोज में आमंत्रित करो.'

10 उन सेवकों ने जाकर रास्ते पर जितने व्यक्ति मिले, उन्हें
इकट्ठा कर लिया—योग्य-अयोग्य सभी को, जिससे
विवाहोत्सव का भोजनकक्ष आमंत्रितों से भर गया.

11 "जब राजा उस कक्ष में उनसे भेंट करने आया, उसने वहां
एक ऐसे व्यक्ति को देखा, जिसने विवाहोत्सव के लिए उपयुक्त
वस्त्र नहीं पहने थे.

12 राजा ने उससे प्रश्न किया, 'मित्र, विवाहोत्सव के लिए सही
वस्त्र पहने बिना तुम यहां कैसे आ गए?' उसके पास इसका
कोई उत्तर न था.

13 "तब राजा ने सेवकों को आज्ञा दी, 'इसके हाथ-पांव बांधकर
बाहर अंधकार में फेंक दो, जहां बहुत रोना और दांत पीसना
होता रहेगा.'

14 "बुलाए हुए तो बहुत हैं, किंतु चुने हुए थोड़े."

15 तब फ़रीसियों ने जाकर येशु को उन्हीं के शब्दों में फंसाने
की योजना की.

16 उन्होंने येशु के पास हेरोदेस समर्थकों को इस प्रश्न के साथ
भेजा: "गुरुवर, हमें यह तो मालूम है कि आप सच्चे हैं, तथा
परमेश्वर के राज्य की शिक्षा पूरी सच्चाई में ही देते हैं. आप में
कहीं कोई भेद-भाव नहीं है, और आप किसी मनुष्य के प्रभाव
में नहीं आते.

17 इसलिये हमें बताइए कि आपके विचार से कयसर को कर
भुगतान करना उचित है या नहीं?"

18 येशु को उनकी कुटिलता का अहसास हो गया. येशु ने कहा,
"अरे पाखंडियों! मुझे परखने का प्रयास कर रहे हो!

19 कर के लिए निर्धारित मुद्रा मुझे दिखाओ." उन्होंने येशु को
दीनार की एक मुद्रा दिखाई.

20 येशु ने उनसे कहा, "इस पर यह आकृति तथा मुद्रण
किसका है?"

21 “कयसर का,” उन्होंने उत्तर दिया. इस पर येशु ने उनसे
कहा, “तो फिर जो कयसर का है, कयसर को दो और जो
परमेश्वर का है, परमेश्वर को.”

22 इस पर वे चकित होकर येशु को छोड़कर वहां से चले गए.

23 उसी समय सदूकी संप्रदाय के कुछ लोग, जिनकी यह
मान्यता है कि पुनरुत्थान जैसा कुछ नहीं होता, येशु के पास
आए और उनसे प्रश्न करने लगे,

24 “गुरुवर, मोशेह की शिक्षा है: यदि कोई पुरुष निःसंतान हो
और उसकी मृत्यु हो जाए तो उसका भाई उसकी पत्नी से
विवाह करके अपने भाई के लिए संतान पैदा करे.

25 इसी विषय में एक घटना इस प्रकार है: एक परिवार में सात
भाई थे. पहले का विवाह हुआ किंतु उसकी मृत्यु हो गई.
इसलिये कि वह निःसंतान था वह अपनी पत्नी को अपने भाई
के लिए छोड़ गया.

26 ऐसा ही दूसरे, तीसरे भाई से लेकर सातवें भाई तक होता
रहा.

27 अंत में उस स्त्री की भी मृत्यु हो गई.

28 अब यह बताइए कि पुनरुत्थान पर वह किसकी पत्नी
कहलाएगी? क्योंकि उसका विवाह तो उन सबके साथ हुआ
था.”

29 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम लोग बड़ी भूल कर रहे हो:
तुमने न तो पवित्र शास्त्र के लेखों को समझा है और न ही
परमेश्वर के सामर्थ्य को.

30 पुनरुत्थान में न तो लोग वैवाहिक अवस्था में होंगे और न ही
वहां उनके विवाह होंगे. वहां तो वे सभी स्वर्ग के दूतों के समान
होंगे.

31 मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या आपने पढ़ा नहीं कि
परमेश्वर ने आपसे यह कहा था:

32 ‘मैं ही अब्राहाम का परमेश्वर, यित्सहाक का परमेश्वर तथा
याकोब का परमेश्वर हूं’? वह मरे हुओं के नहीं परंतु जीवितों
के परमेश्वर हैं.”

33 भीड़ उनकी शिक्षा को सुनकर चकित थी.

34 जब फ़रीसियों को यह मालूम हुआ कि येशु ने सदूकियों का
मुंह बंद कर दिया है, वे स्वयं एकजुट हो गए.

35 उनमें से एक व्यवस्थापक ने येशु को परखने की मंशा से
उनके सामने यह प्रश्न रखा:

36 “गुरुवर, व्यवस्था के अनुसार सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी
है?”

37 येशु ने उसे उत्तर दिया, “तुम प्रभु, अपने परमेश्वर से, अपने
सारे हृदय, अपने सारे प्राण तथा अपनी सारी समझ से प्रेम
करो.

38 यही प्रमुख तथा सबसे बड़ी आज्ञा है.

39 ऐसी ही दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे
ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से करते हो.’

40 इन्हीं दो आदेशों पर सारी व्यवस्था और भविष्यवाणियां
आधारित हैं.”

41 वहां इकट्ठा फ़रीसियों के सामने येशु ने यह प्रश्न रखा,

42 “मसीह के विषय में क्या मत है आपका—किसकी संतान
है वह?” “दावीद की,” उन्होंने उत्तर दिया.

43 तब येशु ने उनसे आगे पूछा, “तब फिर पवित्र आत्मा से
भरकर दावीद उसे ‘प्रभु’ कहकर संबोधित क्यों करते हैं?
दावीद ने कहा है

44 “ ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, “मेरी दायीं ओर बैठे रहो, जब
तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे अधीन न कर दूं.” ’

45 यदि दावीद मसीह को प्रभु कहकर संबोधित करते हैं तो
वह उनकी संतान कैसे हुए?"

46 इसके उत्तर में न तो फ़रीसी कुछ कह सके और न ही इसके
बाद किसी को भी उनसे कोई प्रश्न करने का साहस हुआ.

Matthew 23:1

1 इसके बाद येशु ने भीड़ और शिष्यों को संबोधित करते हुए
कहा,

2 "फ़रीसियों और शास्त्रियों ने स्वयं को मोशेह के पद पर
आसीन कर रखा है.

3 इसलिये उनकी सभी शिक्षाओं के अनुरूप स्वभाव तो रखो
किंतु उनके द्वारा किए जा रहे कामों को बिलकुल न मानना
क्योंकि वे स्वयं ही वह नहीं करते, जो वह कहते हैं.

4 वे लोगों के कंधों पर भारी बोझ लाद तो देते हैं किंतु उसे
हटाने के लिए स्वयं एक उंगली तक नहीं लगाना चाहते.

5 "वे सभी काम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से
ही करते हैं. वे उन पट्टियों को चौड़ा करते हैं, तथा वे ऊपरी
वस्त्र की झालर को भी बढ़ाते जाते हैं.

6 दावतों में मुख्य स्थान, यहूदी सभागृहों में मुख्य आसन,

7 नगर चौक में लोगों के द्वारा सम्मानपूर्ण अभिनंदन तथा रब्बी
कहलाना ही इन्हें प्रिय है.

8 "किंतु तुम स्वयं के लिए रब्बी कहलाना स्वीकार न करना
क्योंकि तुम्हारा शिक्षक मात्र एक हैं और तुम सब आपस में
भाई हो.

9 पृथ्वी पर तुम किसी को अपना पिता न कहना. क्योंकि
तुम्हारा पिता मात्र एक हैं, जो स्वर्ग में हैं

10 और न तुम स्वयं के लिए स्वामी संबोधन स्वीकार करना
क्योंकि तुम्हारा स्वामी मात्र एक हैं—मसीह.

11 अवश्य है कि तुममें जो बड़ा बनना चाहे वह तुम्हारा सेवक
हो.

12 जो कोई स्वयं को बड़ा करता है, उसे छोटा बना दिया
जाएगा और वह, जो स्वयं को छोटा बनाता है, बड़ा किया
जाएगा."

13 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो!
जनसाधारण के लिए तो तुम स्वर्ग-राज्य के द्वार बंद कर देते
हो. तुम न तो स्वयं इसमें प्रवेश करते हो और न ही किसी अन्य
को प्रवेश करने देते हो. [

14 धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम
लम्बी-लम्बी प्रार्थनाओं का ढोंग करते हुए विधवाओं की
संपत्ति निगल जाते हो. इसलिये अधिक होगा तुम्हारा दंड.]

15 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम एक
व्यक्ति को अपने मत में लाने के लिए लम्बी-लम्बी जल और
थल यात्राएं करते हो. उसके तुम्हारे मत में सम्मिलित हो जाने
पर तुम उसे नर्क की आग के दंड का दो गुणा अधिकारी बना
देते हो.

16 "धिक्कार है तुम पर अंधे अगुओं! तुम जो यह शिक्षा देते हो,
'यदि कोई मंदिर की शपथ लेता है तो उसका कोई महत्व नहीं
किंतु यदि कोई मंदिर के सोने की शपथ लेता है तो उसके लिए
प्रतिज्ञा पूरी करना ज़रूरी हो जाता है.'

17 अरे मूर्खो और अंधों! अधिक महत्वपूर्ण क्या है—सोना या
वह मंदिर जिससे वह सोना पवित्र होता है?

18 इसी प्रकार तुम कहते हो, 'यदि कोई वेदी की शपथ लेता है
तो उसका कोई महत्व नहीं किंतु यदि कोई वेदी पर चढ़ाई भेंट
की शपथ लेता है तो उसके लिए अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना
ज़रूरी है.'

19 अरे अंधों! अधिक महत्वपूर्ण क्या है, वेदी पर चढ़ाई भेंट या
वेदी जिससे भेंट पवित्र होती है?

20 इसलिये जो कोई वेदी की शपथ लेता है, वह वेदी तथा वेदी पर समर्पित भेंट दोनों ही की शपथ लेता है.

21 जो कोई मंदिर की शपथ लेता है, वह मंदिर तथा उनकी, जो इसमें रहते हैं, दोनों ही की शपथ लेता है.

22 इसी प्रकार जो कोई स्वर्ग की शपथ लेता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की तथा उनकी जो उस पर बैठा हैं, दोनों ही की शपथ लेता है.

23 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम पुदीना, सौंफ़ तथा ज़ीरा का दसवां अंश तो अवश्य देते हो किंतु व्यवस्था की कहीं अधिक गंभीर बातों का अर्थात् न्याय, कृपा तथा विश्वास की उपेक्षा करते हो. यही वे बातें हैं जिनका पूरा करना आवश्यक था—दूसरों की अनदेखी किए बिना.

24 अंधे अगुओं! तुम मक्खी तो छान कर निकाल फेंकते हो किंतु ऊंट निगल जाते हो!

25 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! प्याले तथा बर्तन को बाहर से तो तुम अच्छी तरह से साफ़ करते हो किंतु अंदर लालच तथा असंयम से भरा है.

26 अंधे फ़रीसियो! पहले प्याले तथा बर्तन को भीतर से साफ़ करो कि वे बाहर से भी साफ़ हो जाएं.

27 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम कब्रों के समान हो, जो बाहर से तो सजायी संवारी जाती हैं किंतु भीतर मरे हुए व्यक्ति की हड्डियां तथा सब प्रकार की गंदगी भरी होती है.

28 तुम भी बाहर से तो मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो किंतु तुम्हारे अंदर कपट तथा अधर्म भरा हुआ है.

29 "धिक्कार है तुम पर पाखंडी, फ़रीसियो, शास्त्रियो! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते हो तथा धर्मी व्यक्तियों के स्मारक को सजाते हो और कहते हो

30 'यदि हम अपने पूर्वजों के समय में होते, हम इन भविष्यद्वक्ताओं की हत्या के साझी न होते.'

31 यह कहकर तुम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाही देते हो कि तुम उनकी संतान हो जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी.

32 ठीक है! भरते जाओ अपने पूर्वजों के पापों का घड़ा.

33 "अरे सांपो! विषधर की संतान! कैसे बचोगे तुम नर्क-दण्ड से?

34 इसलिये मेरा कहना सुनो: मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता, ज्ञानी और पवित्र शास्त्र के शिक्षक भेज रहा हूं. उनमें से कुछ की तो तुम हत्या करोगे, कुछ को तुम क्रूस पर चढ़ाओगे तथा कुछ को तुम यहूदी सभागृह में कोड़े लगाओगे और नगर-नगर यातनाएं दोगे

35 कि तुम पर सभी धर्मी व्यक्तियों के पृथ्वी पर बहाए लहू का दोष आ पड़े—धर्मी हाबिल के लहू से लेकर बैरेखाया के पुत्र ज़करयाह के लहू तक का, जिसका वध तुमने मंदिर और वेदी के बीच किया.

36 सच तो यह है कि इन सबका दंड इसी पीढ़ी पर आ पड़ेगा.

37 "येरूशलेम! ओ येरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं की हत्या करता तथा उनका पथराव करता है, जिन्हें तेरे लिए भेजा जाता है. कितनी बार मैंने यह प्रयास किया कि तेरी संतान को इकट्ठा कर एकजुट करूं, जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है किंतु तूने न चाहा.

38 इसलिये अब यह समझ ले कि तेरा घर तेरे लिए उजाड़ छोड़ा जा रहा है.

39 मैं तुझे बताए देता हूं कि इसके बाद तू मुझे तब तक नहीं देखेगा जब तक तू यह नारा न लगाए. 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम में आ रहा है!' "

Matthew 24:1

1 येशु मंदिर से निकलकर जा रहे थे कि शिष्यों ने उनका ध्यान मंदिर परिसर की ओर आकर्षित किया.

2 येशु ने उनसे कहा, “तुम यह मंदिर परिसर देख रहे हो? सच
तो यह है कि एक दिन इन भवनों का एक भी पत्थर दूसरे पर
रखा न दिखेगा—हर एक पत्थर ज़मीन पर बिखरा होगा.”

3 येशु ज़ैतून पर्वत पर बैठे हुए थे. इस एकांत में उनके शिष्य
उनके पास आए और उनसे यह प्रश्न किया, “गुरुवर, हमें यह
बताइए कि ये घटनाएं कब घटित होंगी, आपके आने तथा
जगत के अंत का चिह्न क्या होगा?”

4 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “इस विषय में सावधान रहना कि
कोई तुम्हें भरमाने न पाए

5 क्योंकि मेरे नाम में अनेक यह दावा करते आएंगे, ‘मैं ही
मसीह हूं’ और इसके द्वारा अनेकों को भरमा देंगे.

6 तुम युद्धों के विषय में तो सुनोगे ही साथ ही उनके विषय में
उड़ते-उड़ते समाचार भी. ध्यान रहे कि तुम इससे घबरा न
जाओ क्योंकि इनका होना अवश्य है—किंतु इसे ही अंत न
समझ लेना.

7 राष्ट्र-राष्ट्र के तथा, राज्य-राज्य के विरुद्ध उठ खड़ा होगा. हर
जगह अकाल पड़ेंगे तथा भूकंप आएंगे,

8 किंतु ये सब घटनाएं प्रसववेदना का प्रारंभ मात्र होंगी.

9 “तब वे तुम्हें क्लेश देने के लिए पकड़वाएंगे और तुम्हारी
हत्या कर देंगे क्योंकि मेरे कारण तुम सभी देशों की घृणा के
पात्र बन जाओगे.

10 इसी समय अनेक विश्वास से हट जाएंगे तथा त्याग देंगे, वे
एक दूसरे से विश्वासघात करेंगे, वे एक दूसरे से घृणा करने
लगेंगे.

11 अनेक झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे. वे अनेकों को
भरमा देंगे.

12 अधर्म के बढ़ने के कारण अधिकांश का प्रेम ठंडा पड़ता
जाएगा;

13 किंतु उद्धार उसी का होगा, जो अंतिम क्षण तक विश्वास में
स्थिर रहेगा.

14 पूरे जगत में सारे राष्ट्रों के लिए प्रमाण के तौर पर राज्य के
विषय में सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा और तब जगत
का अंत हो जाएगा.

15 “इसलिये जब तुम उस विनाशकारी घृणित वस्तु को,
जिसकी चर्चा भविष्यवक्ता दानिएल ने की थी, पवित्र स्थान में
खड़ा देखो—पाठक ध्यान दे—

16 तो वे, जो यहूदिया प्रदेश में हों पर्वतों पर भागकर जाएं,

17 वह, जो घर की छत पर हो, घर में से सामान लेने नीचे न
आए.

18 वह, जो खेत में हो, अपना कपड़ा लेने पीछे न लौटे.

19 दयनीय होगी गर्भवती और शिशुओं को दूध पिलाती स्त्रियों
की स्थिति!

20 प्रार्थनारत रहो, ऐसा न हो कि तुम्हें जाड़े या शब्बाथ पर
भागना पड़े

21 क्योंकि वह महाक्लेश का समय होगा—ऐसा, जो न तो सृष्टि
के प्रारंभ से आज तक देखा गया, न ही इसके बाद दोबारा
देखा जाएगा.

22 “यदि यह आनेवाले दिन घटाए न जाते, कोई भी जीवित न
रहता. कुछ चुने हुए विशेष लोगों के लिए यह अवधि घटा दी
जाएगी.

23 उस समय यदि कोई आकर तुम्हें सूचित करे, ‘सुनो-सुनो,
मसीह यहां हैं!’ या, ‘वह वहां हैं!’ तो विश्वास न करना.

24 क्योंकि अनेक झूठे मसीह तथा अनेक झूठे भविष्यवक्ता
उठ खड़े होंगे. वे प्रभावशाली चमत्कार चिह्न दिखाएंगे तथा
अद्भुत काम करेंगे कि यदि संभव हुआ तो परमेश्वर द्वारा चुने
हुओं को भी भटका दें.

25 ध्यान दो कि मैंने पहले ही तुम्हें इसकी चेतावनी दे दी है.

26 “कि यदि वे तुम्हारे पास आकर यह कहें, ‘देखो, देखो; वह
बंजर भूमि में हैं,’ तो उसे देखने चले न जाना; या यदि वे यह
कहें, ‘आओ, देखो, वह कोठरी में हैं,’ तो उनका विश्वास न
करना.”

27 जैसे बिजली पूर्व दिशा से चमकती हुई पश्चिम दिशा तक
चली जाती है, ठीक ऐसा ही होगा मनुष्य के पुत्र का आगमन.

28 गिद्ध वहीं इकट्ठा होते हैं, जहां शव होता है.

29 “उन दिनों के क्लेश के तुरंत बाद “ ‘सूर्य अंधियारा हो
जाएगा और चंद्रमा का प्रकाश न रहेगा. आकाश से तारे गिर
जाएंगे. आकाश की शक्तियां हिलायी जाएंगी.’

30 “तब आकाश में मनुष्य के पुत्र का चिह्न प्रकट होगा. पृथ्वी
के सभी गोत्र शोक से भर जाएंगे और वे मनुष्य के पुत्र को
आकाश में बादलों पर सामर्थ्य और प्रताप के साथ आता हुआ
देखेंगे.

31 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को तुरही के ऊंचे शब्द के
साथ भेजेगा, जो चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से
दूसरे छोर तक जाकर उनके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे.

32 “अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो: जब उसमें कोंपलें फूटने लगती
हैं, पत्तियां निकलने लगती हैं तो तुम जान लेते हो कि गर्मी का
समय पास है.

33 इसी प्रकार तुम जब भी इन सभी घटनाओं को होते देखो
तो समझ लेना कि वह पास हैं—परंतु द्वार पर ही हैं.

34 सच्चाई तो यह है कि इन घटनाओं के हुए बिना इस युग का
अंत नहीं होगा.

35 आकाश तथा पृथ्वी खत्म हो जाएंगे किंतु मेरे कहे हुए शब्द
कभी नहीं.

36 “वैसे उस दिन तथा उस समय के विषय में किसी को भी
मालूम नहीं है—न स्वर्ग के दूतों को और न ही पुत्र को—परंतु
मात्र पिता को ही यह मालूम है.

37 “ठीक नोहा के दिनों जैसा होगा मनुष्य के पुत्र का आगमन:

38 जल-बाढ़ के पहले उन दिनों में लोग तब तक खाते-पीते रहे
और उनमें विवाह होते रहे जब तक नोहा ने जहाज़ में प्रवेश न
किया.

39 लोग तब तक कुछ न समझे जब तक बाढ़ ने आकर उन्हें
डुबो न दिया. ऐसा ही होगा मनुष्य के पुत्र का आगमन.

40 उस समय दो व्यक्ति खेत में कार्य कर रहे होंगे; एक उठा
लिया जाएगा, दूसरा रह जाएगा.

41 दो स्त्रियां चक्की पर अनाज पीस रही होंगी; एक उठा ली
जाएगी, दूसरी रह जाएगी.

42 “इसलिये हमेशा सावधान रहो क्योंकि तुम यह नहीं जानते
कि तुम्हारे प्रभु का आगमन किस दिन होगा.

43 याद रखो कि यदि घर के स्वामी को यह पता हो कि चोर
रात में किस समय आएगा तो वह सावधान हो जाएगा तथा घर
में सेंध लगने न देगा.

44 तुम्हारा भी इसी प्रकार सावधान रहना ज़रूरी है क्योंकि
मनुष्य के पुत्र का आगमन ऐसे समय पर होगा जिसकी तुम
कल्पना तक नहीं कर सकते.

45 “कौन है वह विश्वासयोग्य और समझदार सेवक, जिसे घर
का मालिक अपने परिवार की ज़िम्मेदारी सौंप दे कि वह समय
के अनुसार सबके लिए भोजन-व्यवस्था करे?

46 धन्य है वह सेवक, जिसे घर का स्वामी लौटने पर यही करते
हुए पाए.

47 सच्चाई तो यह है कि घर का स्वामी उस सेवक के हाथों में
अपनी सारी संपत्ति की ज़िम्मेदारी सौंप देगा.

48 किंतु यदि वह सेवक बुरा हो और अपने मन में यह विचार
करने लगे: 'स्वामी के लौटने में तो बड़ी देरी हो रही है'

49 और वह सहसेवकों के साथ मार-पीट आरंभ कर दे,
पियक्कड़ों की संगति में जाकर खाए-पिए और

50 उसका स्वामी एक ऐसे दिन लौटेगा, जिसकी उसने कल्पना
ही न की थी और एक ऐसे क्षण में, जिसके विषय में उसे मालूम
ही न था,

51 तो स्वामी उसके टुकड़े-टुकड़े कर उसकी गिनती कपट
करनेवालों में कर देगा जहां हमेशा रोना तथा दांत पीसना
होता रहेगा.

Matthew 25:1

1 "स्वर्ग-राज्य उस द्वारचार के समान है जिसमें दस कुंवारी
युवतियां अपने-अपने दीप लेकर द्वारचार के लिए निकलीं.

2 उनमें से पांच तो मूर्ख थी तथा पांच समझदार.

3 मूर्ख युवतियों ने अपने साथ अपने दीप तो लिए किंतु तेल
नहीं;

4 परंतु समझदार युवतियों ने अपने दीपों के साथ तेल के बर्तन
भी रख लिए.

5 वर के पहुंचने में देर होने के कारण उन्हें नींद आने लगी और
वे सो गई.

6 "आधी रात को यह धूमधाम का शब्द सुनाई दिया: 'वर पहुंच
रहा है! उससे भेंट के लिए बाहर आ जाओ.'

7 "सभी युवतियां उठीं और अपने-अपने दीप तैयार करने
लगीं.

8 मूर्ख युवतियों ने समझदार युवतियों से विनती की, 'अपने तेल
में से कुछ हमें भी दे दो—हमारे दीप बुझे जा रहे हैं.'

9 "किंतु समझदार युवतियों ने उन्हें उत्तर दिया, 'हमारे और
तुम्हारे दोनों के लिए तो तेल पूरा नहीं होगा. भला तो यह होगा
कि तुम जाकर व्यापारियों से अपने लिए तेल मोल ले लो.'

10 "जब वे तेल लेने जा ही रही थी कि वर आ पहुंचा और वे
युवतियां, जो तैयार थी, वर के साथ विवाह के भवन में चली गईं
और द्वार बंद कर दिया गया.

11 "कुछ समय बाद वे अन्य युवतियां भी आ गईं और विनती
करने लगीं, 'श्रीमान! हमारे लिए द्वार खोल दीजिए.'

12 "किंतु उसने उन्हें उत्तर दिया, 'सच तो यह है कि मैं तुम्हें
जानता ही नहीं.'

13 "इसलिये इसी प्रकार तुम भी हमेशा जागते तथा सचेत रहो
क्योंकि तुम न तो उस दिन को जानते हो और न ही उस घड़ी
को.

14 "स्वर्ग-राज्य उस व्यक्ति के समान भी है, जो एक यात्रा के
लिए तैयार था, जिसने हर एक सेवक को उसकी योग्यता के
अनुरूप संपत्ति सौंप दी.

15 एक को पांच तालन्त, एक को दो तथा एक को एक. इसके
बाद वह अपनी यात्रा पर चला गया.

16 जिस सेवक को पांच तालन्त दिए गए थे, उसने तुरंत उस
धन का व्यापार में लेनदेन किया, जिससे उसने पांच तालन्त
और कमाए.

17 इसी प्रकार उस सेवक ने भी, जिसे दो तालन्त दिए गए थे,
दो और कमाए.

18 किंतु जिसे एक तालन्त दिया गया था, उसने जाकर भूमि में
गड्ढा खोदा और अपने स्वामी की दी हुई वह संपत्ति वहां छिपा
दी.

19 "बड़े दिनों के बाद उनके स्वामी ने लौटकर उनसे हिसाब
लिया.

Matthew 25:1

20 जिसे पांच तालन्त दिए गए थे, उसने अपने साथ पांच तालन्त
और लाकर स्वामी से कहा, 'महोदय, आपने मुझे पांच तालन्त
दिए थे. यह देखिए, मैंने इनसे पांच और कमाए हैं.'

21 "उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, मेरे योग्य तथा
विश्वसनीय सेवक! तुम थोड़े धन में विश्वसनीय पाए गए
इसलिये मैं तुम्हें अनेक ज़िम्मेदारियां सौंपूंगा. अपने स्वामी के
आनंद में सहभागी हो जाओ.'

22 "वह सेवक भी आया, जिसे दो तालन्त दिए गए थे. उसने
स्वामी से कहा, 'महोदय, आपने मुझे दो तालन्त दिए थे. यह
देखिए, मैंने दो और कमाए हैं!'

23 "उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश, मेरे योग्य तथा
विश्वसनीय सेवक! तुम थोड़े धन में विश्वसनीय पाए गए
इसलिये मैं तुम्हें अनेक ज़िम्मेदारियां सौंपूंगा. अपने स्वामी के
आनंद में सहभागी हो जाओ.'

24 "तब वह सेवक भी उपस्थित हुआ, जिसे एक तालन्त दिया
गया था. उसने स्वामी से कहा, 'महोदय, मैं जानता था कि आप
एक कठोर व्यक्ति हैं. आप वहां से फसल काटते हैं, जहां
आपने बोया ही नहीं तथा वहां से फसल इकट्ठा करते हैं, जहां
आपने बीज डाला ही नहीं.

25 इसलिये भय के कारण मैंने आपकी दी हुई निधि भूमि में
छिपा दी. देख लीजिए, जो आपका था, वह मैं आपको लौटा
रहा हूं.'

26 "स्वामी ने उसे उत्तर दिया, 'अरे ओ दुष्ट, और आलसी
सेवक! जब तू यह जानता ही था कि मैं वहां से फसल काटता
हूं, जहां मैंने बोया ही न था तथा वहां से फसल इकट्ठा करता
हूं, जहां मैंने बीज बिखेरा ही नहीं?

27 तब तो तुझे मेरी संपत्ति महाजनों के पास रख देनी थी कि
मेरे लौटने पर मुझे मेरी संपत्ति ब्याज सहित प्राप्त हो जाती.'

28 " 'इसलिये इससे यह तालन्त लेकर उसे दे दो, जिसके पास
अब दस तालन्त हैं.'

29 यह इसलिये कि हर एक को, जिसके पास है, और दिया
जाएगा और वह धनी हो जाएगा; किंतु जिसके पास नहीं है,
उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है.

30 'इस निकम्मे सेवक को बाहर अंधकार में फेंक दो जहां
हमेशा रोना और दांत पीसना होता रहेगा.' "

31 "जब मनुष्य के पुत्र का आगमन अपने प्रताप में होगा और
सभी स्वर्गदूत उसके साथ होंगे, तब वह अपने महिमा के
सिंहासन पर विराजमान हो जाएगा

32 और उसके सामने सभी राष्ट्र इकट्ठा किए जाएंगे. वह उन्हें
एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से.

33 वह भेड़ों को अपनी दायीं ओर स्थान देगा तथा बकरियों को
अपनी बायीं ओर.

34 "तब राजा अपनी दायीं ओर के समूह की तरफ देखकर
कहेगा, 'मेरे पिता के कृपापात्रों! उस राज्य के उत्तराधिकार
को स्वीकार करो, जो तुम्हारे लिए सृष्टि की स्थापना के समय
से तैयार किया गया है.

35 इसलिये कि जब मैं भूखा था, तुमने मुझे भोजन दिया; जब
मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी दिया; मैं परदेशी था, तुमने मुझे
अपने यहां स्थान दिया;

36 मुझे वस्त्रों की ज़रूरत थी, तुमने मुझे वस्त्र दिए; मैं जब रोगी
था, तुम मुझे देखने आए; मैं बंदीगृह में था, तुम मुझसे भेंट
करने आए.'

37 "तब धर्मी इसके उत्तर में कहेंगे, 'प्रभु! हमने कब आपको
भूखा पाया और भोजन दिया; प्यासा देखा और पानी दिया;

38 कब हमने आपको परदेशी पाया और आपको अपने यहां
स्थान दिया; आपको वस्त्रों की ज़रूरत में पाया और वस्त्र
दिए;

39 हमने आपको कब रोगी या बंदीगृह में देखा और आपसे
भेंट करने आए?'

40 “राजा उन्हें उत्तर देगा, ‘सच तो यह है कि जो कुछ तुमने मेरे इन लोगों में से किसी एक के लिए किया—यहां तक कि छोटे से छोटे भाई बहिनों के लिए भी—वह तुमने मेरे लिए किया.’

41 “तब राजा अपने बायें पक्ष के समूह से उन्मुख हो कहेगा, ‘मुझसे दूर हो जाओ, शापितो! अनंत आग में जा पड़ो, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है;

42 क्योंकि मैं जब भूखा था, तुमने मुझे खाने को न दिया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी न दिया;

43 मैं परदेशी था, तुमने अपने यहां मुझे स्थान न दिया; मुझे वस्त्रों की ज़रूरत थी, तुमने मुझे वस्त्र न दिए; मैं रोगी और बंदीगृह में था, तुम मुझसे भेंट करने न आए.’

44 “तब वे भी उत्तर देंगे, ‘प्रभु, भला कब हमने आपको भूखा, प्यासा, परदेशी, वस्त्रों की ज़रूरत में या रोगी तथा बंदीगृह में देखा और आपकी सुधि न ली?’

45 “तब राजा उन्हें उत्तर देगा, ‘सच तो यह है कि जो कुछ तुमने मेरे इन लोगों में से किसी एक के लिए—यहां तक कि छोटे से छोटे तक के लिए नहीं किया—वह तुमने मेरे लिए नहीं किया.’

46 “ये सभी अनंत दंड में भेजे जाएंगे, किंतु धर्मी अनंत काल के जीवन में प्रवेश करेंगे.”

Matthew 26:1

1 इस रहस्य के खुलने के बाद येशु ने शिष्यों को देखकर कहा,

2 “यह तो तुम्हें मालूम ही है कि दो दिन बाद फ़सह उत्सव है. इस समय मनुष्य के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया जाएगा.”

3 दूसरी ओर प्रधान पुरोहित और वरिष्ठ नागरिक कायाफ़स नामक महापुरोहित के घर के आंगन में इकट्ठा हुए.

4 उन्होंने मिलकर येशु को छलपूर्वक पकड़कर उनकी हत्या कर देने का विचार किया.

5 वे यह विचार भी कर रहे थे: “यह फ़सह उत्सव के अवसर पर न किया जाए—कहीं इससे लोगों में बलवा न भड़क उठे.”

6 जब येशु बैथनियाह गांव में शिमओन के घर पर थे—वही शिमओन, जिसे पहले कोढ़ रोग हुआ था,

7 एक स्त्री उनके पास संगमरमर के बर्तन में कीमती इत्र लेकर आई. उसे उसने भोजन के लिए बैठे येशु के सिर पर उंडेल दिया.

8 यह देख शिष्य गुस्सा हो कहने लगे, “यह फिज़ूलखर्ची किस लिए?

9 यह इत्र तो ऊंचे दाम पर बिक सकता था और प्राप्त धनराशि गरीबों में बांटी जा सकती थी.”

10 इस विषय को जानकर येशु ने उन्हें झिड़कते हुए कहा, “क्यों सता रहे हो इस स्त्री को? इसने मेरे हित में एक सराहनीय काम किया है.

11 निर्धन तुम्हारे साथ हमेशा रहेंगे किंतु मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूंगा.

12 मुझे मेरे अंतिम संस्कार के लिए तैयार करने के लिए इसने यह इत्र मेरे शरीर पर उंडेला है.

13 सच तो यह है कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, इस स्त्री के इस कार्य का वर्णन भी इसकी याद में किया जाएगा.”

14 तब कारियोतवासी यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, प्रधान पुरोहितों के पास गया

15 और उनसे विचार-विमर्श करने लगा, “यदि मैं येशु को पकड़वा दूं तो आप मुझे क्या देंगे?” उन्होंने उसे गिन कर चांदी के तीस सिक्के दे दिए.

16 उस समय से वह येशु को पकड़वाने के लिए सही अवसर की ताक में रहने लगा.

Matthew 26:1

17 अखमीरी रोटी के उत्सव के पहले दिन शिष्यों ने येशु के
पास आकर पूछा, “हम आपके लिए फ़सह भोज की तैयारी
कहां करें? आप क्या चाहते हैं?”

18 येशु ने उन्हें निर्देश दिया, “नगर में एक व्यक्ति विशेष के
पास जाना और उससे कहना, ‘गुरुवर ने कहा है, मेरा समय
पास है. मुझे अपने शिष्यों के साथ आपके घर में फ़सह उत्सव
मनाना है.’ ”

19 शिष्यों ने वैसा ही किया, जैसा येशु ने निर्देश दिया था और
उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया.

20 संध्या समय येशु अपने बारह शिष्यों के साथ बैठे हुए थे.

21 जब वे भोजन कर रहे थे येशु ने उनसे कहा, “मैं तुम पर एक
सच प्रकट कर रहा हूं: तुम्हीं में एक है, जो मेरे साथ धोखा
करेगा.”

22 बहुत उदास मन से हर एक शिष्य येशु से पूछने लगा, “प्रभु,
वह मैं तो नहीं हूं?”

23 येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “जिसने मेरे साथ कटोरे में अपना
कौर डुबोया था, वही है, जो मेरे साथ धोखा करेगा.

24 मनुष्य के पुत्र को तो जैसा कि उसके विषय में पवित्र शास्त्र
में लिखा है, जाना ही है; किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर, जो
मनुष्य के पुत्र के साथ धोखा करेगा. उस व्यक्ति के लिए अच्छा
तो यही होता कि उसका जन्म ही न होता.”

25 यहूदाह ने, जो येशु के साथ धोखा कर रहा था, उनसे प्रश्न
किया, “रब्बी, वह मैं तो नहीं हूं न?” येशु ने उसे उत्तर दिया,
“यह तुमने स्वयं ही कह दिया है.”

26 जब वे भोजन के लिए बैठे, येशु ने रोटी ली, उसके लिए
आशीष विनती की, उसे तोड़ी और शिष्यों को देते हुए कहा,
“यह लो, खाओ; यह मेरा शरीर है.”

27 तब येशु ने प्याला लिया, उसके लिए धन्यवाद दिया तथा
शिष्यों को देते हुए कहा, “तुम सब इसमें से पियो.

28 यह वाचा का मेरा लहू है जो अनेकों की पाप क्षमा के लिए
उंडेला जा रहा है.

29 मैं यह बताना चाहता हूं कि मैं दाख का रस उस दिन तक
नहीं पिऊंगा जब तक मैं अपने पिता के राज्य में तुम्हारे साथ
दाखरस दोबारा नहीं पिऊं.”

30 एक भक्ति गीत गाने के बाद वे ज़ैतून पर्वत पर चले गए.

31 येशु ने शिष्यों से कहा, “आज रात तुम सभी मेरा साथ
छोड़कर चले जाओगे, जैसा कि इस संबंध में पवित्र शास्त्र का
लेख है: “ ‘मैं चरवाहे का संहार करूंगा और, झुंड की सभी
भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी.’

32 हां, पुनर्जीवित किए जाने के बाद मैं तुमसे पहले गलील
प्रदेश पहुंच जाऊंगा.”

33 किंतु पेतरॉस ने येशु से कहा, “सभी शिष्य आपका साथ
छोड़कर जाएं तो जाएं किंतु मैं आपका साथ कभी न छोड़ूंगा.”

34 येशु ने उनसे कहा, “सच्चाई तो यह है कि आज ही रात में,
इसके पहले कि मुर्ग बांग दे, तुम मुझे तीन बार नकार चुके
होंगे.”

35 पेतरॉस ने दोबारा उनसे कहा, “मुझे आपके साथ यदि मृत्यु
को भी गले लगाना पड़े तो भी मैं आपको नहीं नकारूंगा.”
अन्य सभी शिष्यों ने यही दोहराया.

36 तब येशु उनके साथ गेतसेमनी नामक स्थान पर पहुंचे.
उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “तुम यहीं बैठो जब तक मैं वहां
जाकर प्रार्थना करता हूं.”

37 फिर वह पेतरॉस और ज़ेबेदियॉस के दोनों पुत्रों को अपने
साथ ले आगे चले गए. वहां येशु अत्यंत उदास और व्याकुल
होने लगे.

38 उन्होंने शिष्यों से कहा, “मेरे प्राण इतने अधिक उदास हैं,
मानो मेरी मृत्यु हो रही हो. मेरे साथ तुम भी जागते रहो.”

39 तब येशु उनसे थोड़ी ही दूर जा मुख के बल गिरकर प्रार्थना
करने लगे. उन्होंने परमेश्वर से निवेदन किया, “मेरे पिता, यदि
संभव हो तो यह प्याला मुझसे टल जाए; फिर भी मेरी नहीं
परंतु आपकी इच्छा के अनुरूप हो.”

40 जब वह अपने शिष्यों के पास लौटे तो उन्हें सोया हुआ देख
उन्होंने पेतरॉस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ एक घंटा भी
सजग न रह सके!

41 सजग रहो, प्रार्थना करते रहो, ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में
पड़ जाओ. हां, निःसंदेह आत्मा तो तैयार है किंतु शरीर दुर्बल.”

42 तब येशु ने दूसरी बार जाकर प्रार्थना की, “मेरे पिता, यदि
यह प्याला मेरे पिए बिना मुझसे टल नहीं सकता तो आप ही
की इच्छा पूरी हो.”

43 वह दोबारा लौटकर आए तो देखा कि शिष्य सोए हुए हैं—
क्योंकि उनकी पलकें बोझिल थी.

44 एक बार फिर वह उन्हें छोड़ आगे चले गए और तीसरी बार
प्रार्थना की और उन्होंने प्रार्थना में वही सब दोहराया.

45 तब वह शिष्यों के पास लौटे और उनसे कहा, “क्या तुम
अभी भी सो रहे और आराम कर रहे हो? बहुत हो गया! देखो!
आ गया है वह क्षण! मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों
पकड़वाया जा रहा है.

46 उठो! यहां से चलें. देखो, जो मुझे पकड़वाने पर है, वह आ
गया!”

47 येशु अपना कथन समाप्त भी न कर पाए थे कि यहूदाह, जो
बारह शिष्यों में से एक था, वहां आ पहुंचा. उसके साथ एक
बड़ी भीड़ थी, जो तलवारें और लाठियां लिए हुए थी. ये सब
प्रधान पुरोहितों और पुरनियों की ओर से भेजे गए थे.

48 येशु के विश्वासघाती ने उन्हें यह संकेत दिया था: “मैं जिसे
चूमूं, वही होगा वह. उसे ही पकड़ लेना.”

49 वहां पहुंचते ही यहूदाह सीधे मसीह येशु के पास गया और
उनसे कहा, “प्रणाम, रब्बी!” और उन्हें चूम लिया.

50 येशु ने यहूदाह से कहा, “मेरे मित्र, जिस काम के लिए आए
हो, उसे पूरा कर लो.” उन्होंने आकर येशु को पकड़ लिया.

51 येशु के शिष्यों में से एक ने तलवार खींची और महापुरोहित
के दास पर चला दी जिससे उसका कान कट गया.

52 येशु ने उस शिष्य से कहा, “अपनी तलवार को म्यान में
रखो! जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही नाश किए जाएंगे.

53 क्या तुम यह तो सोच रहे कि मैं अपने पिता से विनती नहीं
कर सकता और वह मेरे लिए स्वर्गदूतों के बारह या उससे
अधिक लेगिओन (बड़ी सेना) नहीं भेज सकते?

54 फिर भला पवित्र शास्त्र के लेख कैसे पूरे होंगे, जिनमें लिखा
है कि यह सब इसी प्रकार होना अवश्य है?”

55 तब येशु ने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, “क्या तुम्हें
मुझे पकड़ने के लिए तलवारें और लाठियां लेकर आने की
ज़रूरत थी, जैसे किसी डाकू को पकड़ने के लिए होती है? मैं
तो प्रतिदिन मंदिर में बैठकर शिक्षा दिया करता था! तब तुमने
मुझे नहीं पकड़ा!

56 यह सब इसलिये हुआ है कि भविष्यद्वक्ताओं के लेख पूरे
हों.” इस समय सभी शिष्य उन्हें छोड़कर भाग चुके थे.

57 जिन्होंने येशु को पकड़ा था वे उन्हें महापुरोहित कायाफ़स
के यहां ले गए, जहां शास्त्री तथा पुरनिये इकट्ठा थे.

58 पेतरॉस कुछ दूरी पर येशु के पीछे-पीछे चलते हुए
महापुरोहित के आंगन में आ पहुंचे और वहां वह प्रहरियों के
साथ बैठ गए कि देखें आगे क्या-क्या होता है.

59 मसीह येशु को मृत्यु दंड देने की इच्छा लिए हुए प्रधान
पुरोहित तथा पूरी महासभा मसीह येशु के विरुद्ध झूठे गवाह
खोजने का यत्न कर रही थी,

60 किंतु इसमें वे विफल ही रहे. यद्यपि अनेक झूठे गवाह
सामने आए, किंतु मृत्यु दंड के लिए आवश्यक दो सहमत
गवाह उन्हें फिर भी न मिले. आखिर दो गवाह सामने आए

61 जिन्होंने कहा, “यह व्यक्ति कहता था, ‘मैं परमेश्वर के मंदिर
को नाश करके उसे तीन दिन में दोबारा खड़ा करने में समर्थ
हूं.’ ”

62 तब महापुरोहित खड़े हुए तथा मसीह येशु से पूछा, “क्या
तुम्हें अपने बचाव में कुछ नहीं कहना है? ये सब तुम्हारे विरुद्ध
क्या-क्या गवाही दे रहे हैं!”

63 येशु मौन ही रहे. तब महापुरोहित ने येशु से कहा, “मैं तुम्हें
जीवित परमेश्वर की शपथ देता हूं कि तुम हमें बताओ, क्या
तुम ही मसीह, परमेश्वर के पुत्र हो?”

64 येशु ने उसे उत्तर दिया, “आपने यह स्वयं कह दिया है, फिर
भी, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि इसके बाद आप
मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दायीं ओर बैठे तथा
आकाश के बादलों पर आता हुआ देखेंगे.”

65 यह सुनना था कि महापुरोहित ने अपने वस्त्र फाड़ डाले
और कहा, “परमेश्वर-निंदा की है इसने! क्या अब भी गवाहों
की ज़रूरत है? आप सभी ने स्वयं यह परमेश्वर-निंदा सुनी है.

66 अब क्या विचार है आपका?” सभी परिषद ने उत्तर दिया,
“यह मृत्यु दंड के योग्य है.”

67 तब उन्होंने येशु के मुख पर थूका, उन पर घूंसों से प्रहार
किया, कुछ ने उन्हें थप्पड़ भी मारे और फिर उनसे प्रश्न किया,

68 “मसीह! भविष्यवाणी कीजिए, कि आपको किसने मारा
है?”

69 पेतरॉस आंगन में बैठे हुए थे. एक दासी वहां से निकली और
पेतरॉस से पूछने लगी, “तुम भी तो उस गलीलवासी येशु के
साथ थे न?”

70 किंतु पेतरॉस ने सबके सामने यह कहते हुए इस सच को
नकार दिया: “क्या कह रही हो? मैं समझा नहीं!”

71 जब पेतरॉस द्वार से बाहर निकले, एक दूसरी दासी ने
पेतरॉस को देख वहां उपस्थित लोगों से कहा, “यह व्यक्ति
नाज़रेथ के येशु के साथ था.”

72 एक बार फिर पेतरॉस ने शपथ खाकर नकारते हुए कहा,
“मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता.”

73 कुछ समय बाद एक व्यक्ति ने पेतरॉस के पास आकर
कहा, “इसमें कोई संदेह नहीं कि तुम भी उनमें से एक हो.
तुम्हारी भाषा-शैली से यह स्पष्ट हो रहा है.”

74 पेतरॉस अपशब्द कहते हुए शपथ खाकर कहने लगे, “मैं
उस व्यक्ति को नहीं जानता!” उनका यह कहना था कि मुर्ग
ने बांग दी.

75 पेतरॉस को येशु की वह कही हुई बात याद आई, “इसके
पूर्व कि मुर्ग बांग दे तुम मुझे तीन बार नकार चुके होगे.”
पेतरॉस बाहर गए और फूट-फूटकर रोने लगे.

Matthew 27:1

1 प्रातःकाल सभी प्रधान पुरोहितों तथा पुरनियों ने आपस में
येशु को मृत्यु दंड देने की सहमति की.

2 येशु को बेड़ियों से बांधकर वे उन्हें राज्यपाल पिलातॉस के
यहां ले गए.

3 इसी समय, जब येशु पर दंड की आज्ञा सुनाई गई, यहूदाह,
जिसने येशु के साथ धोखा किया था, दुःख और पश्चाताप से भर
उठा. उसने प्रधान पुरोहितों और पुरनियों के पास जाकर चांदी
के वे तीस सिक्के यह कहते हुए लौटा दिए,

4 “एक निर्दोष के साथ धोखा करके मैंने पाप किया है.” “हमें
इससे क्या?” वे बोले, “यह तुम्हारी समस्या है!”

5 वे सिक्के मंदिर में फेंक यहूदाह चला गया और जाकर फांसी
लगा ली.

6 उन सिक्कों को इकट्ठा करते हुए प्रधान पुरोहितों ने विचार
किया, “इस राशि को मंदिर के कोष में डालना उचित नहीं है
क्योंकि यह लहू का दाम है.”

7 तब उन्होंने इस विषय में विचार-विमर्श कर उस राशि से
परदेशियों के अंतिम संस्कार के लिए कुम्हार का एक खेत
मोल लिया.

8 यही कारण है कि आज तक उस खेत को “लहू का खेत”
नाम से जाना जाता है.

9 इससे भविष्यवक्ता येरेमियाह द्वारा की गई यह भविष्यवाणी
पूरी हो गई: “उन्होंने चांदी के तीस सिक्के लिए—यह उसका
दाम है, जिसका दाम इस्राएल वंश के द्वारा निर्धारित किया
गया था

10 और उन्होंने वे सिक्के कुम्हार के खेत के लिए दे दिए, जैसा
निर्देश प्रभु ने मुझे दिया था.”

11 येशु राज्यपाल के सामने लाए गए और राज्यपाल ने उनसे
प्रश्न करने प्रारंभ किए, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?” येशु
ने उसे उत्तर दिया, “यह आप स्वयं ही कह रहे हैं.”

12 जब येशु पर प्रधान पुरोहितों और पुरनियों द्वारा आरोप पर
आरोप लगाए जा रहे थे, येशु मौन बने रहे.

13 इस पर पिलातॉस ने येशु से कहा, “क्या तुम सुन नहीं रहे ये
लोग तुम पर कितने आरोप लगा रहे हैं?”

14 येशु ने पिलातॉस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर न
दिया. राज्यपाल के लिए यह अत्यंत आश्चर्यजनक था.

15 उत्सव पर परंपरा के अनुसार राज्यपाल की ओर से उस
बंदी को, जिसे लोग चाहते थे, छोड़ दिया जाता था.

16 उस समय बंदीगृह में बार-अब्बास नामक एक कुख्यात
अपराधी बंदी था.

17 इसलिये जब लोग इकट्ठा हुए पिलातॉस ने उनसे प्रश्न किया,
“मैं तुम्हारे लिए किसे छोड़ दूं, बार-अब्बास को या येशु को, जो
मसीह कहलाता है? क्या चाहते हो तुम?”

18 पिलातॉस को यह मालूम हो चुका था कि मात्र जलन के
कारण ही उन्होंने येशु को उनके हाथों में सौंपा था.

19 जब पिलातॉस न्यायासन पर बैठा था, उसकी पत्नी ने उसे
यह संदेश भेजा, “उस धर्मी व्यक्ति को कुछ न करना क्योंकि
पिछली रात मुझे स्वप्न में उसके कारण घोर पीड़ा हुई है.”

20 इस पर प्रधान पुरोहितों और पुरनियों ने भीड़ को उकसाया
कि वे बार-अब्बास की मुक्ति की और येशु के मृत्यु दंड की
मांग करें.

21 राज्यपाल ने उनसे पूछा, “क्या चाहते हो, दोनों में से मैं किसे
छोड़ दूं?” भीड़ का उत्तर था: “बार-अब्बास को.”

22 इस पर पिलातॉस ने उनसे पूछा, “तब मैं येशु का, जो मसीह
कहलाता है, क्या करूं?” उन सभी ने एक साथ कहा, “उसे
क्रूस पर चढ़ाया जाए!”

23 पिलातॉस ने पूछा, “क्यों? क्या अपराध है उसका?” किंतु वे
और अधिक चिल्लाने लगे, “क्रूस पर चढ़ाया जाए उसे!”

24 जब पिलातॉस ने देखा कि वह कुछ भी नहीं कर पा रहा
परंतु हुल्लड़ की संभावना है तो उसने भीड़ के सामने अपने
हाथ धोते हुए यह घोषणा कर दी, “मैं इस व्यक्ति के लहू का
दोषी नहीं हूं. तुम ही इसके लिए उत्तरदायी हो.”

25 लोगों ने उत्तर दिया, “इसके लहू का दोष हम पर तथा
हमारी संतान पर हो!”

26 तब पिलातॉस ने उनके लिए बार-अब्बास को मुक्त कर
दिया किंतु येशु को कोड़े लगवाकर क्रूसित करने के लिए भीड़
के हाथों में सौंप दिया.

27 तब पिलातॉस के सैनिक मसीह येशु को प्राइतोरियम
अर्थात् किले के भीतर, महल के आंगन में ले गए और वहां
उन्होंने सारी रोमी सैनिक टुकड़ी इकट्ठा कर ली.

28 जो वस्त्र येशु पहने हुए थे, उतारकर उन्होंने उन्हें एक
चमकीला लाल वस्त्र पहना दिया.

29 उन्होंने एक कंटीली लता को गूंधकर उसका मुकुट बना
उनके सिर पर रख दिया और उनके दायें हाथ में एक नरकुल
की एक छड़ी थमा दी. तब वे उनके सामने घुटने टेककर यह
कहते हुए उनका मज़ाक करने लगे, "यहूदियों के राजा की
जय!"

30 उन्होंने येशु पर थूका भी और फिर उनके हाथ से उस
नरकुल छड़ी को लेकर उसी से उनके सिर पर प्रहार करने
लगे.

31 इस प्रकार जब वे येशु का उपहास कर चुके, उन्होंने वह
लाल वस्त्र उतारकर उन्हीं के वस्त्र उन्हें पहना दिए और उन्हें
उस स्थल पर ले जाने लगे जहां उन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाना था.

32 जब वे बाहर निकले, उन्हें शिमओन नामक एक व्यक्ति, जो
कुरेनावासी था, दिखाई दिया. उन्होंने उसे येशु का क्रूस
उठाकर चलने के लिए मजबूर किया.

33 जब वे सब गोलगोथा नामक स्थल पर पहुंचे, जिसका अर्थ
है (खोपड़ी का स्थान).

34 उन्होंने येशु को पीने के लिए दाखरस तथा कड़वे रस का
मिश्रण दिया किंतु उन्होंने मात्र चखकर उसे पीना अस्वीकार
कर दिया.

35 येशु को क्रूसित करने के बाद उन्होंने उनके वस्त्रों को
आपस में बांट लेने के लिए पासा फेंका

36 और वहीं बैठकर उनकी चौकसी करने लगे.

37 उन्होंने उनके सिर के ऊपर दोषपत्र लगा दिया था, जिस
पर लिखा था: "यह येशु है—यहूदियों का राजा."

38 उसी समय दो अपराधियों को भी उनके साथ क्रूस पर
चढ़ाया गया था, एक को उनकी दायीं ओर, दूसरे को उनकी
बायीं ओर.

39 आते जाते यात्री उपहास-मुद्रा में सिर हिला-हिला कर
मज़ाक उड़ा रहे थे,

40 "अरे ओ मंदिर को नाश कर, तीन दिन में उसको दुबारा
बनानेवाले! बचा ले अपने आपको—यदि तू परमेश्वर का पुत्र
है तो उतर आ क्रूस से!"

41 इसी प्रकार प्रधान पुरोहित भी शास्त्रियों और पुरनियों के
साथ मिलकर उनका उपहास करते हुए कह रहे थे,

42 "दूसरों को तो बचाता फिरा है, स्वयं को नहीं बचा सकता!
इस्राएल का राजा है! क्रूस से नीचे आकर दिखाए तो हम
इसका विश्वास कर लेंगे.

43 यह परमेश्वर में विश्वास करता है क्योंकि इसने दावा किया
था, 'मैं ही परमेश्वर-पुत्र हूं,' तब परमेश्वर इसे अभी छुड़ा दें—
यदि वह इससे प्रेम करते हैं."

44 उनके साथ क्रूस पर चढ़ाये गए राजद्रोही भी इसी प्रकार
उनकी उल्लाहना कर रहे थे.

45 मध्याह्न से लेकर तीन बजे तक उस सारे प्रदेश पर अंधकार
छाया रहा.

46 तीन बजे के लगभग येशु ने ऊंची आवाज में पुकारकर
कहा, "एली, एली, लमा सबक़थानी?" जिसका अर्थ है, "मेरे
परमेश्वर! मेरे परमेश्वर! आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

47 उधर खड़े हुए व्यक्तियों में से कुछ ने कहा, "अरे! सुनो-
सुनो! एलियाह को पुकार रहा है!"

48 उनमें से एक ने तुरंत दौड़कर एक स्पंज सिरके में भिगोया
और एक नरकुल की एक छड़ी पर रखकर येशु के होंठों तक
बढ़ा दिया.

49 किंतु औरों ने कहा, "ठहरो, ठहरो, देखें एलियाह उसे बचाने
आते भी हैं या नहीं."

50 येशु ने एक बार फिर ऊंची आवाज में पुकारा और अपने प्राण त्याग दिए.

51 उसी क्षण मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक दो भागों में विभाजित कर दिया गया, पृथ्वी कांप उठी, चट्टानें फट गईं

52 और कब्रें खुल गईं. येशु के पुनरुत्थान के बाद उन अनेक पवित्र लोगों के शरीर जीवित कर दिए गये, जो बड़ी नींद में सो चुके थे.

53 कब्रों से बाहर आकर उन्होंने पवित्र नगर में प्रवेश किया तथा अनेकों को दिखाई दिए.

54 शताधिपति और वे, जो उसके साथ येशु की पहरा दे रहे थे, उस भूकंप तथा अन्य घटनाओं को देखकर अत्यंत भयभीत हो गए और कहने लगे, "सचमुच यह परमेश्वर के पुत्र थे!"

55 अनेक स्त्रियां दूर खड़ी हुई यह सब देख रही थी. वे गलील प्रदेश से येशु की सेवा करती हुई उनके पीछे-पीछे आ गई थी.

56 उनमें थी मगदालावासी मरियम, याकोब और योसेफ़ की माता मरियम तथा ज़ेबेदियॉस की पत्नी.

57 जब संध्या हुई तब अरिमथिया नामक नगर के एक धनी व्यक्ति, जिनका नाम योसेफ़ था, वहां आए. वह स्वयं येशु के चेले बन गए थे.

58 उन्होंने पिलातॉस के पास जाकर येशु के शव को ले जाने की आज्ञा मांगी. पिलातॉस ने उन्हें शव ले जाने की आज्ञा दे दी.

59 योसेफ़ ने शव को एक स्वच्छ चादर में लपेटा

60 और उसे नई कंदरा-क़ब्र में रख दिया, जो योसेफ़ ने स्वयं अपने लिए चट्टान में खुदवाई थी. उन्होंने कब्र के द्वार पर एक विशाल पत्थर लुढ़का दिया और तब वह अपने घर चले गए.

61 मगदालावासी मरियम तथा अन्य मरियम, दोनों ही कंदरा-क़ब्र के सामने बैठी रहीं.

62 दूसरे दिन, जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, प्रधान पुरोहित तथा फ़रीसी पिलातॉस के यहां इकट्ठा हुए और पिलातॉस को सूचित किया,

63 "महोदय, हमको यह याद है कि जब यह छली जीवित था, उसने कहा था, 'तीन दिन बाद मैं जीवित हो जाऊंगा';

64 इसलिये तीसरे दिन तक के लिए कंदरा-क़ब्र पर कड़ी सुरक्षा की आज्ञा दे दीजिए, अन्यथा संभव है उसके शिष्य आकर शव चुरा ले जाएं और लोगों में यह प्रचार कर दें, 'वह मरे हुओं में से जीवित हो गया है' तब तो यह छल पहले से कहीं अधिक हानिकर सिद्ध होगा."

65 पिलातॉस ने उनसे कहा, "प्रहरी तो आपके पास हैं न! आप जैसा उचित समझें करें."

66 अतः उन्होंने जाकर प्रहरी नियुक्त कर तथा पत्थर पर मोहर लगाकर कब्र को पूरी तरह सुरक्षित बना दिया.

Matthew 28:1

1 शब्बाथ के बाद, सप्ताह के पहले दिन, जब भोर हो ही रही थी, मगदालावासी मरियम तथा वह अन्य मरियम, येशु की कंदरा-क़ब्र पर आईं.

2 उसी समय एक बड़ा भूकंप आया क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से प्रकट हुआ था. उसने कब्र के प्रवेश से पत्थर लुढ़काया और उस पर बैठ गया.

3 उसका रूप बिजली-सा तथा उसके कपड़े बर्फ के समान सफ़ेद थे.

4 पहरुए उससे भयभीत हो मृतक के समान हो गए.

5 स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों को संबोधित किया, "मत डरो! मुझे मालूम है कि तुम क्रूस पर चढ़ाए गए येशु को खोज रही हो.

6 वह यहां नहीं हैं क्योंकि वह मरे हुओं में से जीवित हो गए हैं—ठीक जैसा उन्होंने कहा था. स्वयं आकर उस स्थान को देख लो, जहां उन्हें रखा गया था.

Matthew 28:1

7 अब शीघ्र जाकर उनके शिष्यों को यह सूचना दो कि वह मरे
हुओं में से जीवित हो गए हैं. और हां, वह तुम लोगों से पूर्व
गलील प्रदेश जा रहे हैं. तुम उन्हें वहीं देखोगी. याद रखना कि
मैंने तुमसे क्या-क्या कहा है."

8 वे वहां से भय और अत्यंत आनंद के साथ जल्दी से शिष्यों
को इसकी सूचना देने दौड़ गईं.

9 मार्ग में ही सहसा येशु उनसे मिले और उनका अभिनंदन
किया. उन्होंने उनके चरणों पर गिरकर उनकी वंदना की.

10 येशु ने उनसे कहा, "डरो मत! मेरे भाइयों तक यह समाचार
पहुंचा दो कि वे गलील प्रदेश को प्रस्थान करें, मुझसे उनकी
भेंट वहीं होगी."

11 वे जब मार्ग में ही थी, कुछ प्रहरियों ने नगर में जाकर प्रधान
पुरोहितों को इस घटना की सूचना दी.

12 उन्होंने पुरनियों को इकट्ठा कर उनसे विचार-विमर्श किया
और पहरुओं को बड़ी धनराशि देते हुए उन्हें यह आज्ञा दी,

13 "तुम्हें यह कहना होगा, 'रात में जब हम सो रहे थे, उसके
शिष्य उसे चुरा ले गए.'

14 यदि राज्यपाल को इसके विषय में कुछ मालूम हो जाए, हम
उन्हें समझा लेंगे और तुम पर कोई आंच न आने देंगे."

15 धनराशि लेकर पहरुओं ने वही किया जो उनसे कहा गया
था. यहूदियों में यही धारणा आज तक प्रचलित है.

16 ग्यारह शिष्यों ने गलील को प्रस्थान किया. वे येशु द्वारा पहले
से बताए हुए पर्वत पर पहुंचे.

17 उन्होंने वहां येशु को देखा और उनकी वंदना की परंतु कुछ
को अभी भी संदेह था.

18 येशु ने पास आकर उनसे कहा, "सारा अधिकार—स्वर्ग में
तथा पृथ्वी पर—मुझे दिया गया है.

19 इसलिये यहां से जाते हुए तुम सारे राष्ट्रों को मेरा शिष्य
बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में
बपतिस्मा दो.

20 उन्हें इन सभी आदेशों का पालन करने की शिक्षा दो, जो
मैंने तुम्हें दिए हैं. याद रखो: जगत के अंत तक मैं हमेशा तुम्हारे
साथ हूं."